—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

फरवरी, 2005 वर्ष 3 अंक 12

जांच (परीक्षा)

क्या लोगों ने यह सोच
रखा है कि वह यह कह दें
कि हम ईमान लाये बस
छोड़ दिये जाएंगे और वह
जांचे न जाएंगे।

(29 : 2)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है।
कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

• इस्लाम में शहादत का दर्जा	सम्पादकीय	3
• कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
• प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी	6
• हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी	7
• संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	अब्दुस्सलाम किदवई नदवी	9
• सब्ज़ियों का राजा टमाटर	डा० शफीक अहमद आज़मी	12
• जिन्नात की औलाद	अबू मर्गूब	13
• उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा	आफ्रीन फारूकी	14
• आप के प्रश्नों के उत्तर	इदारा	16
• ख़लीफ़ा मुक्तफ़ी बिल्लाह	डा० मु० इज्तिबा नदवी	18
• दो नज़्में	हैदर अली नदवी	22
• उम्मत के कुछ अहम शहीद	इब्ति इस्हाक	23
• अत्याचार और उन पर पछतावा	मुहम्मदुल हसनी	29
• जर्सी गाय	इंटरनेट से	30
• जोड़ों का दर्द	माख़ूज	31
• हज़रत मर्यम का ज़िक्र		32
• रबवा से नवा क़ादियान तक	मौ० मु० खालिद नदवी	33
• क़ादियानियों का कल्मा	मौलाना अब्दुल गनी पटयालवी	34
• इस्लाम ईमान और इह़सास	इदारा	35
• सूनामी लहरें	हबीबुल्लाह आजमी	38
• दीनी तालीम	मुदस्सिर आफरीदी	39
• अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	हबीबुल्लाह आज़मी	40

□□□

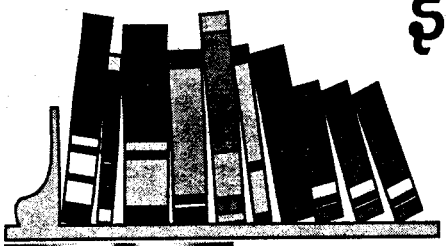

इस्लाम में शहादत का दर्जा

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

शहादत अ़रबी शब्द है: यह शब्द उर्दू फ़ार्सी में भी इस्तिअ़माल होता है। शहादत का एक मअ़ना है गवाही, दूसरा मअ़ना अल्लाह के रास्तें में जान से मारा जाना, इस लेख में हम को इसी दूसरे मअ़ना पर बात करना है।

अल्लाह तआ़ला ने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ़ अपनी इ़बादत के लिये पैदा फ़र्माया है जैसा कि सूर–ए–ज़ारियात की आयत ५६ से ज़ाहिर है। मगर इ़बादत का यह मतलब नहीं है कि हर वक़्त सज्दे में ही पड़े रहें बल्कि हर हाल में अल्लाह की इताअ़त करें। अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों की हिदायत के लिये अपने रसूल के ज़रीअ़े पैग़ामात भेजे और बताया की ह़क़ क्या है और नाह़क़ क्या है और ह़ुक्म दिया कि ह़क़ इख़्तियार करो और नाहक़ से दूर रहो। इस दून्या में इन्फ़िरादी (व्यक्तिगत) व इज्तिमाअ़ी (सामूहिक) ज़िन्दगी गुज़ारने के क़ाअ़िदे बताए। उनके मुवाफ़िक़ ज़िन्दगी गुज़ारना ज़रूरी किया और आदेश दिया कि इस राह पर जमे रहना है चाहे जान चली जाए। जो शख़्स ईमान व इस्लाम पर जमता है शैतान जो इन्सान का दुशमन है वह उस शख़्स को रास्ते से हटाने की कोशिश करता है। और अपने पैरोकार, किसी इन्सान को मुक़ाबले पर ले आता है।

ऐसी सूरत मे नाह़क़ वाला ह़क़ वाले की जान भी ले लेता है जैसे क़ाबील ने अपने भाई हाबील की जान ले ली। ह़ज़रत ज़करीया अ़लैहिवसल्लाम पर बनी इस्राइल ने आरा चलाकर मार डाला। ह़ज़रत यह़या अ़लैहिस्सलाम को भी बनी इस्राइल ने क़त्ल किया। इस तरह़ अल्लाह की राह पर जमने वाले जो मारे जाते हैं वह शहादत का दर्जा पाते हैं। उन्हीं को शहीद कहा जाता है। शहादत पाने और शहीद होने का यह सिलसिला हर रसूल के ज़माने में रहा है। अल्लाह के आख़िरी रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लाल्लाह अ़लैहि व सल्लम) की उम्मत में यह सिलसिला कमाल दर्जे को पहुंचा, ह़ज़रत उ़मर ह़ज़रत उ़स्मान, ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाह, अ़न्हुम जो ख़ुलफ़ाए राशिदान में है तीनों को शहीद किया गया। क़त्ल की जाने वाली शहादत दो तरह की है। एक यह कि ह़क़ वाला ह़क़ की मुख़ालफ़त करने वाले से अल्लाह के ह़ुक्म से लड़े और उस में मारा जाए, जैसे शुहदाए बद्र व उह़द वग़ैरह दूसरे वह जो बिना लड़े मारे जाएं जैसे हाबील व ज़करिया व यह़या अ़लैहिमुस्सलाम और ह़ज़रत उ़स्मान, रज़ियल्लाह अ़न्हु या धोका देकर शहीद किये गये जैसे ह़ज़रत उ़मर व ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाह अन्हुम।

शहीद की जान सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा ह़ासिल करने के लिये जाती है इसलिये अल्लाह तआ़ला ने शहीद को बड़ी इ़ज़्ज़त दी है। फ़रमाया: जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये जाएं उन को मुर्दा मत कहो बल्कि वह तो ज़िन्दा हैं लेकिन तुम उन की ज़िन्दगी को समझ नहीं सकते।(२:१५४) दूसरी जगह फ़रमाया: और मत गुमान करो उन लोगों के बारे में जो अल्लाह की राह में क़त्ल हुए कि वह मुर्दा हैं बल्कि वह तो ज़िन्दा हैं अपने रब के पास रोज़ी दिये जाते है।(३:१६९)

शहीद का दर्जा इतना ऊँचा है कि इन्सानी अक़्ल उसको समझ नहीं सकती जैसा कि आयत में इशारा किया गया। एक और तरह से शहादत की बुलन्दी का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि सहीह हदीस से साबित है, हज़रत अबू हुरैरा रजि० से रिवायत है, फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है यक़ीनन मैं चाहता हूं कि मैं अल्लाह की राह में लड़ूं और क़त्ल किया जाऊं फिर ज़िन्दा किया जाऊं फिर क़त्ल किया जांऊ" हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) इस को तीन बार कहते थे। (मूअत्ता इमाम मालिक किताबुल जिहाद)

बे शक तमाम सहाब–ए–किराम शहादत के दर्जे और उस के मकाम से वाक़िफ़ थे इस लिये उनका बच्चा बच्चा शहादत की तमन्ना करता था और शहादत की दुआ मांगा करता था। एक अच्छी चीज़ और अच्छे मक़ाम की दुआ करना भी बड़े सवाब का काम है, लेकिन मिलेगा वह मकाम उसी को जिस के मुक़द्दर में पहले से लिखा जा चुका है।

ख़लीफ़–ए–सानी हज़रत उमर (रज़ि०) की शहादत की दुआ हदीस में मौजूद है। अजीब बात है कि वह शहादत की दुआ मांगते हैं और मदीना तय्यिबा ही मे वफ़ात चाहते हैं अर्ज करते:– ऐ अल्लाह मैं आप से आप की राह मे शहादत मांगता हूं। और तेरे रसूल के शहर में वफ़ात चाहता हूँ। (मुअत्ता इमाम मालिक) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक और अनोखी दुआ मांगते थे कहते :ऐ अल्लाह मेरे क़त्ल का फ़ैसला किसी ऐसे के हाथों से न कीजिये जिस ने एक भी सज्दा किया हो कि वह उस सज्दे के ज़रीअे क़ियामत के रोज़ मुझसे झगड़ा करे। (मुअत्ता इमाम मालिक) इन रिवायात से अन्दाजा होता है कि हज़रत उमर रज़ि० को अपनी शहादत की दुआ क़बूल होने का यक़ीन हो चुका था तभी उसके साथ दो कैदें और बढ़ाई कि यह शहादत मदीना तय्यिबा में हो और किसी ग़ैर मुस्लिम के हाथों हो। अल्लाह ने सारी दुआएं क़बूल फ़रमाई। इस आख़िरी रिवायत से यह भी मालूम हुआ कि मुसलमान के हाथों शहादत मिलने के मुक़ाबले में गैर मुस्लिम के हाथों से शहादत ज़ियादा फ़जीलत रखती है तभी हजरत उमर (रजि०) ने इस की दुआ मांगी थी।

सहाब–ए–किराम ने जब किताब व सुन्नत से शहादत के यह फ़ज़ाइल सुने तो हर सहाबी के दिल मे यह ख़्वाहिश हुई कि काश उस को शहादत मिलती। मरना बरहक़ है मौत से किस को चारा है तो शहीद हो कर क्यों न मरें और आख़िरत में अअला दरजात मिलें। इस जज़बे ने दुन्यावी हैसीयत से भी मुसलमानों की काया पलट कर दी। अल्लाह की मदद और इसी जज़बे के सबब ग़ज़व–ए–बद्र में ३१३ निहत्थों को १००० मुसल्लह (हथ्यार वालों) पर फ़त्ह मिली थी। ज़ाहिर है एक शख़्स इस जज़बे से लड़ता है कि वह सिर्फ़ अपनी ताक़त से लड़ता है अल्लाह कि मदद उस के साथ नहीं है फिर इस लड़ाई में मारे जाने पर उस के घर वालों को चाहे जो कुछ मिल जाए उसकी ज़ात को कुछ मिलना नहीं है, इसके मुक़ाबले पर दूसरा हे जो ला होल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम पर ईमान रखते हुए अल्लाह की मदद पर यक़ीन रखते हुए हुसूले शहादत के जज़्बे से सरशार होकर मैदान मे उतरता है दोनों की अन्दरूनी ताक़तों का कोई मुक़ाबला ही नहीं। लिहाज़ा नतीजा भी उसी का ताबिअ होगा।

चुनांचि कुर्आन मजीद में है:

"कितनी छोटी छोटी जमाअ़तें बड़ी बड़ी जमाअ़तों पर अल्लाह के हुक्म से गालिब आ गई और अल्लाह जमे रहने वालो का साथ देते है।"(२:२४६) दूसरी जगह है: "अगर तुम में के २० आदमी जमने वाले होंगे तो २०० पर ग़ालिब आ जाएंगे और अगर तुम में के १०० होगें तो हज़ार पर ग़ालिब आ जाएंगे।"(८:४१५) लेकिन जब हिम्मतें पस्त हुई तब भी दोगुने का फ़र्क़ बाक़ी रहा,

(शेष पृष्ठ २१ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

और नाप तौल को पूरा करो।(अन्आम:१५३)

नाप तौल में कमी बेशी करना, हक़ीक़त में दूसरे के हक़ पर हाथ डालना है। जो कोई लेने में तौल को बढ़ाता है और देने में घटाता है वह दूसरे की चीज़ पर बेईमानी से क़ब्ज़ा करता है और यह भी चोरी है कुर्आने पाक में इस से बचने की बड़ी ताकीदें आई हैं।

नाप और तौल की बेईमानी से ख़ैर व बरकत जाती रहती है । हम देखते है कि बाज़ार में ऐसे लोगों की जो नाप तौल में कमी करते हैं उनकी साख जाती रहती है । उनका ब्यापार तबाह हो जाता है ।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि कम तौलने और कम नापने से क़हत पड़ता है जिस तरह ज़िना की कसरत से ताऊन मुसल्लत कर दिया जाता है।

तौलने और नापने में कमी करने वालों से हुजूर(सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि तुम ऐसा काम कर रहे हो जिस से पहली कौमें हलाक हो चुकी हैं।

गद्दारी

जिन से तुम ने मुआ़हदा किया फिर वह अपना अ़हद हर बार तोड़ देते हैं।(अन्फ़ाल:५६)

गद्दारी और दग़ाबाजी के माना यह हैं कि किसी को ज़बान दे कर इतमीनान दिलाया जाए और फिर मौक़ा पाकर उसी के ख़िलाफ़ किया जाए। कुर्आने पाक ने इस को भी ख़ियानत कहा है। हदीस में है कि आप ने फ़रमाया: क़ियामत के दिन हर ग़द्दार का झन्डा होगा। हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अपनी फ़ौज के अफ़सरो को नसीहत फ़रमाते थे कि बद अ़हदी न करना यानी दुशमनों से मुआ़हदा कर के फिर ग़द्दारी न की जाए।

एक बार हज़रत अमीर मुआ़विया (रज़ि०) ने रूमियों से एक ख़ास वक़्त के लिये कोई मुआ़हदा किया था। जब ख़त्म होने का ज़माना आया तो अपनी फौजें लेकर उनकी सरहद के पास पहुंच गये कि इधर मुद्दत ख़त्म हो उधर हमला कर दें। यह देख कर अम्र बिन अ़ब्द (एक सहाबी) सवार होकर निकले और ज़ोर से आवाज़ दी, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, बद अ़हदी नहीं। हज़रत अमीर मुआ़विया (रज़ि०) ने बुला कर पूछा क्या बात है? फ़रमाया: मैंने रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से सुना है कि जब किसी क़ौम से मुआ़हदा किया जाए तो उस कि गिरह न बांधी जाए न खोली जाए (यानी उस में न कमीं की जाए न ज़ियादती) या उस को पहले से ख़बर देकर मुआ़हदा तोड़ दिया जाए। यह सुनकर हज़रत अमीर मुआ़विया वापस चले आये।

बुहतान

और यह कि बुहतान न बांधेंगी। (६०:१२)

बुहतान यह है कि जानबूझ कर किसी बेगुनाह को मुजरिम ठहराया जाए। या उस की तरफ़ कोई गुनाह या बुराई लगा दी जाए यह भी एक तरह का झूठ है।

कुर्आन ने इस को भी ख़ियानत कहा है

हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहिव सल्लम) ने फ़रमाया कि जिस में जो बुराई नहीं उस की निसबत उसकी तरफ़ करना बुहतान है। फ़रमाया जो कोई अपने गुलाम पर तुहमत लगाए जब कि वह बेगुनाह हो क़ियामत के दिन अल्लाह उस मालिक की पीठ पर कोड़े मारेगा।

बुहतान बांधने वाला खुदा के नज़दीक गुनहगार है। उस की गवाही का एअ्तिबार नहीं है। शरअी गवाहों के बिना शरीफ़ बीवीयों पर बुहतान बांधना, उन की इज्ज़त पर हमला करना बड़ा गुनाह है, उस को कोड़े मारे जाएंगे।

लेखकों से अनुरोध

कृपया आप पन्ने के एक ओर लिखें, सुन्दर तथा सरल लिखें। कुर्आन मजीद या हदीस शरीफ़ का अनुवाद लाएं तो हवाला ज़रूर लिखें।

– सम्पादक

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ० अब्दुल हयी हसनी

बे हयायी बुरे लोगों की अलामत है

३६४: हज़रत अबू मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम) ने फ़रमायाः लोगों को पहली नुबूवत की बातें जो पहुंची है उनमें से एक यह है कि तुम में से अगर किसी को शर्म न हो तो जो चाहो करो (बुख़ारी) यानी जो इन्सान बे शर्म होता है उस को बुरे से बुरे काम करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होती।

ईमान की दो शाखें:

३६५: हज़रत अबू उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम) ने फ़रमायाः शर्म करना, और बातें कम करना ईमान की दो शाखें हैं। फुहश गोई (गाली गलोज) और ज़ियादा बोलना निफ़ाक़ की दो शाखें हैं (तिर्मिज़ी)

३६६: हज़रत इब्नि मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम) ने फ़रमायाः तुम अल्लाह तआला से शर्म करो जैसा कि उस से शर्म करने का हक़ है। इब्नि मसऊद (रज़ि०) कहते है, हम लोगों ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी, यक़ीनन हम शर्म करते हैं और इस पर अल्लाह की हम्द बयान करते हैं। आप ने फ़रमायाः यह नहीं बल्कि ऐसी हया जो अल्लाह के लायक हो, दिमाग़ और इस में जो सोच विचार आते हैं उन की देख भाल रखो, पेट और इस में जो कुछ भरा हुआ है उस की निग्रानी रखो।

और मौत के बाद क़ब्र मे जो हालत होनी है उसको याद करो। जो शख़्स आख़िरत को अपना मक़्सद (उद्देश्य) बनाएगा वह दुन्या की आराईश व इशरत (भोग विलास) से हाथ उठा लेगा और इस चार दिन की ज़िन्दगी के मुक़ाबले मे आने वाली ज़िन्दगी को पसन्द व इख़्तियार करेगा।

तो जिस ने यह सब कुछ किया तो समझो कि उसने अल्लाह तआला से हया का हक़ अदा किया। (तिर्मिज़ी)

सब्र मुसीबत के वक़्त ही मुअ्तबर है:—

३६८: हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का एक औरत के पास से गुज़र हुआ जो एक क़ब्र पर बैठी रो रही थी। आप ने उस से फ़रमाया अल्लाह से डरो और सब्र करो। उस औरत ने कहा दूर हो, तुम पर मेरी जैसी मुसीबत नहीं पड़ी, तुम मेरी तकलीफ़ नहीं जानते हो। बाद में जब उस औरत को बताया गया कि वह तो रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) थे। तो वह हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दरबार मे हाज़िर हुई, वहां उस को कोई चपरासी या दरबान नज़र न आया , उस ने अर्ज़ किया अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम) मै ने पहचाना न था। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया सब्र तो वही मुअ्तबर है जो सदमा पहुंचने के वक़्त किया जाए।(बुख़ारी व मुस्लिम)

मोमिन और फ़ाजिर की मिसाल:—

४००: हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम) ने फ़रमाया मोमिन की मिसाल खेती के उस नर्म पौधे की सी है कि हवा जिस रूख से भी आती है उस को मोड़ देती है। फिर जब हवा रूकती है तो वह सीधा हो जाता है और मुनाफ़िक़ की मिसाल सनूबर के दरख़्त की सी है कि वह सख़्त सीधा होता है अल्लाह तआला जब चाहता है उस को तोड़ देता है।(बुख़ारी)

मोमिन के लिये हर मुआमले में खैर:—

४०२: हज़रत सुहैब बिन सनान (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया मोमिन का मुआमला भी खूब है। उस का हर मुआमला खैर ही खैर होता है। मोमिन के सिवा किसी और को यह बात हासिल नहीं। उस को खुशी हासिल होती है तो वह शुक्र करता है यह उसके हक़ में ख़ैर ही खैर है। उस को रंज व तकलीफ़ पहुंचती है तो वह सब्र करता है यह भी उसके हक मे ख़ैर ही ख़ैर होता है। (मुस्लिम)

लोगों से मिलने जुलने वाला अफ़ज़ल है:—

४०५: हज़रत इब्नि उमर (रज़ि०) से

(शेष पृ. ८ पर)

हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में

मौ० अबुलहसन अ़ली ह़सनी

मुसलमानों की भवन निर्माण कला और उनकी रिहायशी अभिरूचि

अब पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव तथा नगरों से सम्बन्धित योजनाओं के कारणवश मुसलमानों तथा अन्य वर्गों के मकानों तथा निर्माण प्रणाली में कोई अन्तर नहीं रहा और न रह सकता है। बड़े नगरों में समान्य रूप से लोग किराये के मकानों में रहते हैं । नये मकानों के निर्माण का भी क़रीब एक ही माडल चल गया है परन्तु पूर्व काल में मुसलमानों के मकानों की विशेषता यह होती थी कि वह ज्यादा हवादार (किन्तु पर्दे दार) खुले हुए और लम्बा चौड़ा आंगन होता था । मुसलमानों के मकानों में हर दौर में इस का लिहाज रखा जाता था कि शौचालय के कद़मचों की दिशा काबा श़रीफ़ की ओर न हो इस लिये कि शौच के समय मुसलमानों को क़ाबा श़रीफ की ओर मुंह या पीठ करना मना है, अतः वह सामान्यतः उत्तर दक्षिण बने होते हैं। इस विषय में समस्त देशों में सामान्जस्य पाया जाता है। स्नानागारों की व्यवस्था कदाचित् मुसलमानों की विशेषता हैं। वह सामायता पर्देदार होते हैं। पवित्रता के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण एवं स्तर के कारण बर्तनों, जल तथा भूमि के पवित्र होने का आयोजन किया जाता है। इस बारे मे बड़ी सावधानी रखी जाती है कि कुत्ता या ऐसा कोई पशु उनको अपवित्र न करने पाए।

मकानों की सजावट तथा इस्लामी सभ्यता की छाप

बाहर का कोई आदमी यदि किसी मुसलमान के घर में जाए तो उसको दिखाई पड़ेगा कि ताक़ पर कुरआन मजीद विभिन्न साइज के कपड़ों के जुजदानों में बन्द रक्खे हुए हैं। इनमें कुछ बच्चों के पढ़ने के हैं, कुछ बड़े बूढ़ों के। मध्यवर्ती घरानों में प्रातः कुरआन मजीद की तिलावत (कुरआन पाठ) का दस्तूर है। जीव धारियों का चित्र इस्लाम में निषिद्ध है, अतः धर्मयुक्त घरानों में चित्रों के बजाय, सुन्दर फ्रेमों में, सुसज्जित कुरआन मजीद की आयतें या खुदा का जिक्र, या विभिन्न उपदेशों अथवा उपयोगी कविताओं की पंक्तियां दीवार में लटकती दिखाई देंगी। अब पाश्चात्य सभ्यता तथा आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से और धर्म के प्रति उदासीनता के कारण खाते पीते घरों में तस्वीरों का रिवाज आम हो रहा है और इसको अनूचित नहीं समझा जाता।

मुसलमानों की विशिष्ट पोशाक सभ्यताओं की यादगार

समयानुकूल हिन्दुस्तानी मुसलमानों का एक विशिष्ट पहनावा भी बन गया जो यहीं की विशेषता है। यह पहनावा अथवा लिबास मुग़लों के अन्तिम काल और दिल्ली, लखनऊ तथा हैदराबाद की सभ्यताओं की यादगार हैं। इसमें देश की ऋतु सम्बन्धी स्थितियों, सौभ्य अभिरूचियों, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों आदि का ध्यान रखा गया है। हिन्दुस्तान के विभिन्न राज्यों और उत्तर तथा दक्षिण में, रईसों तथा मध्य वर्ग के लोगों के पहनावे में अधिक अन्तर नहीं है। पैजामा (अपने विभिन्न प्रकारों, शिलवार, चुस्त, ग़रारे आदि) के साथ कुर्ता (जिसमें कमीस भी शामिल है) और शेरवानी इसके प्रमुख अंग हैं। अचकन और अंगर्खे का रिवाज अब करीब करीब समाप्त हो गया है। टोपियों के विभिन्न आकार प्रचलित हैं, जिन में दो पल्ली (जो अवध तथा बिहार में अधिक प्रचलित है), मखमली टोपी जो रामपुरी कहलाती है, किश्तीदार (जो अजमल कैप या गांधी कैप के नाम से याद की जाती है, और जिसकी दीवार उन टोपियों से कुछ ऊँची होती है, जो हिन्दू इस्तेमाल करते है), पगड़ियों, साफों का रिवाज आलिमों (धार्मिक विद्वानों) के भी विशिष्ट वर्ग में सीमित रह गया है। शादियों के अवसर पर दुल्हा के अब भी पगड़ी बाँधने का बहुत जगह रिवाज है, जिन क्षेत्रों में लुंगी बांधने का रिवाज है या घरों या खेतों में सुविधा एवं सरलता के लिए लुंगी बांधी जाती है, तो उसका ढंग धोतियों से अलग होता है और आसानी से पहचाना जा सकता है।

मुसलमान घरानों में नमाज का आयोजन और उनके साधनों का उचित प्रबन्ध

लगभग हर मुसलमान के घर में जा नमाज़ या नमाज़ पढ़ेन के लिए चटाई या धुली हुई और पाक (पवित्र) चादरें होती है। घर की महिलायें (जो

कुछ हद तक मर्दों से ज्यादा धार्मिक और धर्म कर्म का पालन करने वाली होती हैं) घर में ही नमाज पढ़ती हैं। इसके लिए चौकी, तख्त या जानमाज़ों का प्रबन्ध रहता है। पुरूष प्रायः मुहल्ले की मस्जिद में नमाज अदा करते हैं परन्तु बीमारी अथवा किसी अस्मर्थता वश घर में नमाज पढ़ने के लिये भी प्रयोजन रहता है। बहुधा बाहर से मेहमान भी आते रहते हैं, और समय असमय उनके लिये नमाज़ का प्रयोजन करना पड़ता है। घर में छोटे बड़े सब किबला (काबा शरीफ की दिशा) से अवगत होते हैं। प्रायः वुजू के लिये (विशेषकर पवित्रता एवं स्वच्छता का बहुत अधिक ध्यान रखने वाले घरों में) एक अलग से लोटा होता है जो शौचालय आदि में नहीं प्रयोग किया जाता है।

जब लोटों की बात आ गई तो इसका भी उल्लेख कर देना आवश्यक है कि बहुत दिनों से मुसलमानों में टोंटीदार लोटे का रिवाज चला आ रहा है जिसके प्रति यह विचार किया जाता है कि इसमें शुद्धता एवं पवित्रता अधिक होती है और इससे सुविधापूर्वक वुजू एवं तहारत (पवित्रता) का काम लिया जा सकता है।

इस्लामी समाज में महिलाओं का सम्मान तथा बच्चों की शिक्षा दीक्षा में उनका योगदान

मुसलमान घरों में हर युग में नारी को आदर एवं सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। साधारणतः घर का समस्त प्रबन्ध उसी के हाथ में होता है। उसको मिलकियत , खरीद–व–फरोख्त और अनेक वैधानिक अधिकार प्राप्त हैं। छोटी आयु में बच्चों की शिक्षा–दीक्षा सामान्यतया उन्हीं की देख–रेख में होती है। भद्र घरानों में और पुराने खानदानों में कोई न कोई पढ़ी लिखी महिला या बड़ी बूढ़ी बीबी बच्चों तथा बच्चियों को कुरआन मजीद और प्रारम्भिक तथा आवश्यक धर्म सम्बन्धी शिक्षा देती थीं, और मुहल्ले टोले तथा पास पड़ोस के बच्चे, बच्चियां उनके पास पढ़ने आती थीं, यह एक छोटा मोटा मकतब अथवा मदरसे का रूप धारण कर लेता था। अब भी कहीं कहीं इसका रिवाज है। शिक्षा के साथ वह बच्चियों को सीने पिरोने, कशीदा कारी खाना पकाने और गृह सम्बन्धी शिक्षा देती थीं।

दीर्धायु एवं बड़े बूढ़ो का व्यक्तित्व श्रद्धा का केन्द्र होता है

बूढ़ा होना मुसलमानों के समाज तथा उनके जीवन में कोई दोष अथवा अपराध नहीं वरन् आयु में वृद्धि एवं बुढ़ापे के साथ साथ मनुष्य का व्यक्तित्व अधिक आदरणीय और सम्मान तथा श्रद्धा का केन्द्र बनता चला जाता है, और उनको अधिक सेवा का पात्र एवं माननीय समझा जाने लगता है। यदि कोई अपरिचित व्यक्ति किसी मुसलमान के घर में जाय तो वह देखेगा कि एक वृद्धायु एवं बड़े बूढ़े बूजुर्ग जो इस खानदान के दूर के रिश्तेदार या मुहल्ला बस्ती के कोई आलिम अथवा इमाम थे, मुसल्ले पर बैठे मनन, चिन्तन तथा जप में व्यस्त हैं। परिवार के छोटे बड़े उनका आदर करते है, प्रायः उनके पास सलाम करने और उनसे दुआ लेने के लिए जाते है घर का कोई व्यक्ति अथवा नौकर उनके साथ अनादरपूर्ण व्यवहार नहीं कर सकता समय पर नाश्ता, खाना प्रस्तुत किया जाता है और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है।

यही दशा घर के अन्दर है कि कोई दीर्धायु महिला या बड़ी बूढ़ी कुरआन मजीद पढ़ने अथवा जप में व्यस्त है। घर तथा बाहर के बच्चे और घर की महिलाएं उनसे फूक छुड़ाने जाती हैं। वह उनके सिरों पर हाथ फेरती हैं और दुआ देती हैं। उनका होना परिवार तथा मुहल्ले के लिये शुभ समझा जाता है और यह विश्वास है कि उनकी दुआओं से बलायें (आपत्तियां) टलती हैं। यदि उनसे कोई खानदानी रिश्ता न हो तब भी अपनी अपनी आयु के अनुसार उन्हें दादी, नानी, मौसी फूफी कहा जाता है।(जारी)

(अनुवादः मुहम्मद हसन अन्सारी)

(पृष्ठ ६ का शेष)

रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया वह मोमिन जो लोगों से मिलता जुलता है और उनकी ईज़ा रसानी पर सब्र करता है तो वह उस मोमिन से बेहतर है जो लोगों से मिलता जूलता नहीं है और उन की ईज़ा रसानियों पर सब्र की मंजिल से नहीं गुजरता है। (इब्निमाजा)

खाने पीने पर अल्लाह की हम्द बयान करनाः–

४०७: हज़रत अनस बिन मालिक (रजि०) से रिवायत है कि रसूलल्लल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहिव सल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ऐसे बन्दों से राज़ी और खुश होता है कि वह खाएं तो अल्लाह की तारीफ़ करें और पियें तो अल्लाह शुक्र अदा करें। (मुस्लिम)

मैं बा वफ़ा था इसलिये,
नज़रों से गिर गया।
शायद तुम्हें तलाश,
किसी बेवफ़ा की है।।

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

दूसरी किस्त

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम का ज़माना

मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई

आपका जन्म और प्रारम्भ के हालात

यह मालूम हो चुका है कि दुनिया कैसी बुराईयों में लिप्त थी और कैसी मुसीबतों में घिरी हुई थी और इसकी दशा किस क़दर ख़राब हो चुकी थी। अल्लाह मियां तो अपने बन्दों पर बड़े मेहरबान हैं। यह दशा देखकर उन्हें दया आई और उसे फिर से ठीक करने के लिए हमारे रसूल हज़रत मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम) को दुनिया में भेजा। रबीउलअव्वल (बारह वाफ़ात) की ९ तारीख थी जब हुजूर (सल्ल०) इस संसार में तशरीफ़ लाए। पैदा होने से पहले ही आप के पिता अब्दुल्लाह का देहान्त हो चुका था। छः वर्ष के न होने पाए थे माता हज़रत आमिना का भी देहान्त हो गया और अपने दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के साथ रहने लगे। नौ वर्ष की उम्र में दादा भी इस दुनिया से सिधार गए और आप के चचा हज़रत अबूतालिब आप का पालन पोषण करने लगे।

बचपन से ही आप बुरे कामों को नापसन्द फ़रमाते थे और हमेशा नेक कामों में लगे रहते थे। अभी पूरे तौर से जवान भी न होने पाए थे कि अरब में एक संस्था (अंजुमन) बनाई गई जिसका उद्देश्य था कि लूटमार, चोरी डकैती और इसी प्रकार के बुरे काम मिटाये जाएं। आप (सल्ल०) इस प्रकार के कामों को दिल से चाहते थे। तुरंत इस संस्था में शामिल हो गए।

प्रारम्भ से ही आप की नेकी, सच्चाई, दीनदारी और अमानत इतनी मशहूर थी कि सब आप को अमीन (अमानतदार) कहकर पुकारते थे। दुश्मन तक आप को सच्चा और नेक समझते थे।

एक बार मक्का में इतनी अधिक वर्षा हुई कि काबा की दीवार फट गई कुरैश (अर्थात मक्का के लोगों) ने फिर से उसे ठीक करना शुरू कर दिया। जब दीवारें कुछ ऊंची हो गई और हजरे अस्वद (वह पवित्र काला पत्थर जिसे लोग हज मे चूमते हैं) के लगाने का समय आया तो आपस में झगड़ा शुरू हुआ। हर आदमी चाहता था कि यह पत्थर उसी के हाथ से लगाया जाए। जब बात बढ़ी और मारपीट तक नौबत आई तो सब ने कहा कि इस समय झगड़ा बेकार है कल जो व्यक्ति सबसे पहले आए वह इस झगड़े को तय करदे जो वह कहेगा हम सब वही करेंगे। सुबह हुई और लोग आए तो देखा कि हुजूर (सल्ल०) पहले ही से मौजूद हैं। देखते ही चिल्ला उठे कि अमीन आ गए अब उनसे बढ़ कर कौन हो सकता है। हज़रत (सल्ल०) ने एक चादर बिछाई हजरे अस्वद उस पर रखा और फ़रमाया कि हर खानदान का एक एक आदमी आ जाए और सब मिलजुल कर चादर पकड़ लें इस प्रकार उठाकर पत्थर को उस की जगह तक लाएं। यहां पहुंच कर आपने फरमाया, अब मैं तुम सबकी तरफ़ से इसे लगा देता हूं। इस तरकीब से लोग बहुत प्रसन्न हुए और सारा झगड़ा समाप्त हो गया।

अल्लाह का संदेश

आप (सल्ल०) हमेशा नेक कामों में लगे रहते थे, मक्का के निकट एक ग़ार (गुफा) था आप खाने पीन का सामान लेकर वहां चले जाते और कई कई दिन तक इबादत (उपासना) करते रहते। एक दिन आप इसी हालत में थे कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम अल्लाह का संदेश लेकर आए। उस दिन से कुर्आन की आयतें उतरना शुरू हुईं। कुछ दिन के बाद आदेश आया कि दूसरों को भी अल्लाह की बातें सुनाइ जाएं। जो लोग आप के अधिक निकट थे पहले आप ने उन को सुनाया। हज़रत खुदीजा (रजि०) आप की बीवी थीं, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रजि०) आप के उम्र भर के दोस्त थे, हज़रत अली (रज़ि०) बचपन से साथ रहे थे, हज़रत ज़ैद (रजि०) आप के गुलाम थे आप (सल्ल०) की पुरी ज़िन्दगी उन लोगों के सामने थी। यह लोग अच्छी तरह जानते थे कि आप किस क़दर नेक, सच्चे, पाक और ईमानदार हैं।

आप ने जैसे ही उन से फरमाया उन्होंने मान लिया और आप (सल्ल०) पर ईमान ले आए।

शुरू में कुछ दिनों आप (सल्ल०) चुपचाप ख़ामोशी से काम करते रहे। अलग अलग लोगों से मिलते और उन्हें खुदा का पैग़ाम पहुंचाते। कुछ लोग

इस तरह ईमान लाए तो अल्लाह का आदेश आया अब खुलकर साफ़ साफ़ लोगों से कहो। आप ने सफ़ा पर्वत पर तमाम लोगों को इकट्ठा किया। जब सब इकट्ठे हो गए तो आप (सल्ल०) ने फरमाया अगर मैं कहूं कि इस पहाड़ के पीछे एक बहुत बड़ी सेना पड़ी हुई है जो शीघ्र तुम पर हमला करने वाली है, तो क्या तुम विश्वास करोगे। लोगों ने कहा क्यो नहीं। चालीस वर्षों से अधिक आप (सल्ल०) हमारे साथ रहे हैं, इतने दिनों मे कभी आप (सल्ल०) की ज़बान से एक शब्द ग़लत नही निकला, फिर भला क्या कारण है कि आप (सल्ल०) का कहना न मानें। यह सुनकर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अच्छा सुनो ! अल्लाह एक है, उस ने मुझे रसूल (सन्देष्टा) बनाकर भेजा है। यह सुनना था कि सबके सब बुरा भला कहने लगे। कहां तो अभी प्रशंसा कर रहे थे, और कहां ज़रा सी देर में बुराई शुरू कर दी।

अब आप (सल्ल०) पूरे तौर से लोगों को इस्लाम की तरफ़ बुलाने लगे और धीरे धीरे इस्लाम फैलने लगा। कुरैश को यह बहुत ही नागवार गुज़रा था। वह किसी तरह न चाहते थे कि लोग इस्लाम कुबूल करें। इसलिए कि एक तरफ़ उन का धर्म मिटा जाता था, दूसरी तरफ़ उन की सरदारी और रियासत जिसके वह सदियों से आदी चले आ रहे थे, समाप्त हुई जा रही थी। इसलिए पहले तो उन्होंने ज़बानी विरोध किया परन्तु जब देखा कि इस तरह काम नहीं चलता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तरह तरह से तकलीफें पहुंचानी शुरू कर दी। कभी रास्ते में कांटे बिछा देते ताकि आप के पैरों में चुभ जायें, कभी आप पर गन्दगी डाल देते, कभी गला घूंटने की कोशिश करते तात्पर्य यह कि आप (सल्ल०) को अपने काम से रोकना चाहते लेकिन आप (सल्ल०) पर तनिक भी असर नहीं हुआ और आप ने बराबर अपना काम जारी रखा। आखिर लोग हज़रत अबूतालिब के पास शिकायत लेकर आए कि आप इससे रोकें। हज़रत अबूतालिब ने बुला कर समझाया लेकिन आप (सल्ल०) ने कहा कि खुदा की क़सम अगर मेरे दाहिने हाथ पर सूरज और बायें हाथ पर चाँद रख दिया जाए और कहा जाए कि मैं इस काम से बाज़ आ जाऊँ तो कदापि यह नहीं हो सकता। कहते कहते आप (सल्ल०) की आँखों में आसूं आ गये। हज़रत अबू तालिब ने कहा जाओ अपना काम करो, जब तक मैं ज़िन्दा हूं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंच सकता। अब कुरैश ने अधिक सख़्ती शुरू कर दी और आप (सल्ल०) के साथ आप के साथियों और मुसलमानों को भी तरह तरह से सताने और कष्ट पहुंचाने लगे। किसी को मारते, किसी को कांटे चुभोते, किसी को ज़मीन पर घसीटते, किसी को बांध कर लटकाते, किसी को दहकते हुए अंगारे पर लेटाते, किसी को घायल करके अरब की जलती हुई रेत पर लिटाते और ऊपर से पत्थर रख दिए। ग़रज़ कि कोई ऐसा कष्ट न था जो उन्होंने उठा रखा हो परन्तु अल्लाह के यह बन्दे ईमान के ऐसे पक्के थे कि उन पर किसी सख़्ती का असर न होता। जैसी जैसी सख़्ती बढ़ती जाती थी, वैसे वैसे उन का ईमान और मजबूत होता जाता।

जब कुरैश की सख्ती हद से बढ़ गई और ग़रीब मुसलमानों के लिए बर्दाश्त के बाहर हो गई तो आप (सल्ल०) ने अपने साथियों को आदेश दिया कि हबशा, जहां का बादशाह बड़ा ही दयालू था, चले जाएं। अतएव यह लोग हबशा रवाना हो गए। कुरैश भला इसे कैसे पसन्द कर सकते थे कि मुसलमान कहीं आराम की ज़िन्दगी बसर कर सकें। तुरंत हबशा कुछ लोग जा पहुंचे और वहां के बादशाह नजाशी से मिले और कहा कि हमारे चन्द नालाएक़ गुलाम यहां भाग आए हैं। आप उन्हें वापस कर दीजिए। नजाशी ने मुसलमानों को बुला कर हालात पूछे। हज़रत जाफ़र (रज़ि०) ने सारी कहानी सुना दी। नजाशी को इत्मिनान हो गया और उस ने मुसलमानों से कहा कि आप लोग इत्मिनान से रहें। उसके बाद कुरैश के लोगों को वापिस कर दिया।

अब मक्का में जो लोग बाकी रह गए थे, उन के साथ और अधिक सख़्ती होने लगी लेकिन एक आदमी भी दीन से न फिरा। यह देखकर कुरैश ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम के ख़ानदान के बाइकाट की सलाह की। अतः दोसाल से सख़्त बाइकाट रहा और उनके साथ मेलजोल, शादी विवाह हर प्रकार के सम्बन्ध तोड़ लिए। उन पर खाने पीने का सामान बन्द कर दिया। दो ढाई वर्षों के बाद कुछ दयालू लोगों ने बीच में पड़ कर बाइकाट समाप्त कराया।

ताइफ़ व मदीना

हिजरतः— हज़रत अबूतालिब और हज़रत ख़दीजा (रजि०) की वजह से रसूलल्लाह सल्लल्लाह अलैहिव सल्लम को बड़ा सहारा था। लेकिन नुबूवत (पैग़म्बरी) के दसवें साल उनका देहान्त हो गया। अब कुरैश को खुल खेलने का अवसर मिल गया और उन्होंने पहले से बहुत अधिक सताना और तंग करना शुरू कर दिया।

मक्का की यह दशा देखकर आप सल्ल० ताएफ़ तशरीफ़ ले गए कि शायद वहां के लोग अल्लाह का पैग़ाम सुनें। लेकिन ताएफ़ के लोग मक्का वालों से भी बढ़ कर निकले। पत्थर फेंक फेंक कर इतना मारा कि आप लहूलुहान हो गए। जब थक कर बैठ जाते तो यह बदमाश आकर ज़बरदस्ती उठा देते और फिर पत्थर बरसाने शुरू कर देते। बड़ी मुश्किल से बचकर किसी तरह आप (सल्ल०) मक्का वापस चले आए।

यहां विरोध का वही रंग था बल्कि कुछ पहले से भी अधिक बढ़ गया था।

यह हाल देखकर आप (सल्ल०) ने अरब के दूसरे कबीलों को अपना यह संदेश सुनाना चाहा, उसके लिए हज का समय सब से बेहतर था। चुनानचः जब लोग इकट्ठा हो जाते तो आप उनके पास जाते और उन्हें इस्लाम की तरफ़ बुलाते। खुदा का करना ऐसा हुआ कि कुरैश के विरोध के बावजूद कुछ लोग इस्लाम ले आए। सब से पहले मदीना के छः आदमी मुसलमान हुए। दूसरे साल बारह आदमी आए और मुसलमान होकर वापस चले गये।

अब मदीना में अति अधिक तेजी से इस्लाम फैलने लगा। अगले वर्ष तिहत्तर मर्द और दो औरतें ईमान लाईं। उन्होंने इसका भी वादा किया कि यदि आप (सल्ल०) मदीना तशरीफ़ ले चलें तो हम लोग आप की हर तरह मदद करेंगे।

कुरैश को यह मालूम हुआ तो उन के क्रोध की कोई हद न रही। उन्होंने एक सभा की और सोचना शुरू किया कि अब क्या किया जाए। अन्ततः सबने मिलकर तय किया कि अब मआ़मला हद से गुज़र चुका है और सिवाए इसके और कोई उपाए नहीं कि मुहम्मद सल्ल० को क़त्ल कर दिया जाए और एक रात को बड़े बड़े कुरैश ने आप को क़त्ल करने के लिए आप का घर घेर लिया लेकिन अल्लाह त़आ़ला को आप को बचाना था और अपने दीन को फैलाना मंजूर था इसलिए उसने वह्य के द्वारा आप को ख़बर करदी। आपने हज़रत अली(रजि०) को अपने बिस्तर पर लेटा दिया और चुपके से हज़रत अबू बक्र (रजि०) के यहां तशरीफ़ ले गए। उन्होंने सवारी और रास्ते के खर्च का प्रबन्ध किया और दोनों मदीना की तरफ़ रवाना हो गए लेकिन कुरैश आप की खोज में थे और आप की गिरफ़्तारी के लिए इनाम मुकर्रर था। इसलिए आप मक्का के निकट ग़ारे सौर में छुप गए। तीन दिन के बाद जब ज़रा इत्मिनान हुआ तो आप वहां से मदीना की तरफ़ रवाना हो गए। पहले कुबा में चन्द दिन ठहरे। यहां एक मस्जिद बनाई। इसके बाद मदीना तशरीफ़ ले गए और हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रजि०) के मकान में ठहरे।

आप के आगमन की खुशी में मदीना में बड़ी चहल पहल पैदा हो गई। औरतें और बच्चे तक ज़ियारत (दर्शन) के लिए घरों से निकल आए और खुशी में यह कविता गाते फिरते थेः—

अनुदा— बिदाअ़ पहाड़ की चोटियों से चौदहवीं का चाँद निकल आया।

हम पर खुदा का शुक्र वाजिब है जब तक दुआ माँगने वाले खुदा से दुआ मांगें।

ऐ हम में आने वाले आप मान ने के लाएक़ चीज़ को लेकर आए हैं।।

कुछ दिन के बाद और मुसलमान भी मक्का से आ गए और अमन से रहने लगे।

बद्र की लड़ाई

मदीना आने के बाद किसी क़दर आराम व सुख का अवसर मिला था लेकिन कुरैश इसे क्यों कर पसन्द कर सकते थे कि मुसलमान कहीं भी चैन से रह सकें। इसलिए कभी यहूदियों को उकसाते कभी मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) को भड़काते। दिन प्रतिदिन कोई न कोई उपद्रव उठाने की कोशिश करते। जब इस से भी काम न चला तो लड़ाई की ठानी और एक बड़ी भारी फ़ौज लेकर मदीना पर चढ़ाई कर दी। मुसलमानों की संख्या ही कितनी थी। आप कुछ महाजिर और कुछ अंसार को, जिन की तादाद ३१३ थी, लेकर मुक़ाबले के लिए निकले। बद्र की पहाड़ी पर दोनों का मुकाबला हुआ। मुसलमान बहुत परेशान थे। इतनी बड़ी फ़ौज के मुक़ाबले में तीन सौ तेरह आदमियों की शक्ति ही क्या थी और वह भी इस हाल में कि न सवारी का पूरा प्रबन्ध था न ढंग के

हथियार थे और न कोई सामान दुरूस्त था लेकिन अल्लाह के यह बन्दे फिर भी संतुष्ट थे बे झिझक मैदान में उतर पड़े।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिर सज्दे में रख दिया और गिड़गिड़ा कर दुआ मांगी, दुआ कुबूल हुई और अल्लाह त़आ़ाला ने मुसलमानों की मदद की। कहां यह हैरान व परेशान मुट्ठी भर परदेसी और कुछ मददगार और कहां कुरैश का दल बादल लश्कर। कौन कह सकता था कि मैदान मुसलमानों के हाथ रहेगा। लेकिन जो अल्लाह का हो जाता है, अल्लाह भी उस का हो जाता है। चन्द घंटों में कुरैश की पूरी प्राजय हुई। इस लड़ाई में उन के बड़े बड़े सरदार काम आए। अबू जेहल, जो रसूलल्लाह (सल्ल०) की दुश्मनी में सबसे बढ़ा हुआ था, मारा गया और सत्तर आदमी मुसलमानों के हाथों में गिरिफ्तार हुए। यह लोग हज़रत के बड़े दुश्मन थे। मक्का में उन्होंने आप (सल्ल०) को बहुत सताया था और मुसलमानों पर बहुत अत्याचार किया था। कोई और होता तो उन से दिल खोल कर बदला लेता लेकिन हुजूर सल्ल० तो बहुत नेक और दयालू थे। आप ने उन को मामूली कष्ट भी नहीं पहुंचाया और मुसलमानों को ताकीद कर दी कि खबरदार किसी क़ैदी को कष्ट न होने पाए। जिन के पास कपड़े न थे, उन को कपड़े पहनाए। सहाबा (रजि०) खुद खुजूरें खाकर गुज़ारा करते थे मगर क़ैदियों को रोटी खिलातें थे। इसी प्रकार कुछ दिन आराम से रखने के बाद फिर मुआवज़ा (प्रतिकार) लेकर सबको छोड़ दिया।

अनुवाद–हबीबुल्लाह आजमी

सब्ज़ियों का राजा टमाटर

डॉ० शफीक अहमद आज़मी

टमाटर एक प्रसिद्ध सब्ज़ी है जिस को पकाकर और बिना पकाए बड़े शौक से खाया जाता है। इसमें बड़ी मात्रा में प्रोटीन होती है। यह खाने को हज़्म करता है। कब्ज़ को दूर करता है। कसाह की बीमारी, जिस में बच्चों के हाथ पैर टेढ़े हो जाते हैं, टमाटर का रस बड़ा लाभदायक होता है। खून की कमी (पीलिया), गुर्दे की सूजन, मधुमेय और मोटापे के मर्ज़ में प्रातः नहार मुह एक बड़ा लाल टमाटर प्रयोग करना हज़ार दवाओं से बेहतर है। ऐसी दशा में टमाटर को कच्चा फल की सूरत में खाना चाहिए और प्रयोग से पहले टमाटर को पानी से अच्छी तरह धो लेना चाहिए। दुन्या भर में फलों और सब्ज़ियों में बादशाहत तकसीम की गई है। सेब को फलों का बादशाह माना गया है और टमाटर को सब्ज़ियों का राजा माना गया है। टमाटर धरती पर सब्ज़ियों की सूरत में खुदा का सबसे बड़ा उपहार माना गया है। टमाटर के दो प्रकार होते हैं। मैदानी और पहाड़ी। मैदानी टमाटर गोल और पहाड़ी टमाटर लम्बा होता है। टमाटर खून साफ करता है। खुशकी दूर करता है। वहम और दहशत को समाप्त कर देता है। गर्मी और तपन को ख़त्म कर देता है। टमाटर स्वास्थ्य की बहाली का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंश है। वह मरीज़ों या वह लोग, जो कमज़ोर और लाग़र हैं, उन्हें टमाटर का इस्तेमाल बेहद लाभ देता है। जब टमाटर को कच्चा खाया जाए तो कुछ देर तक पानी नहीं पीना चाहिए क्योंकि टमाटर में मौजूद तेज़ाबी पानी मेदे में अपना काम अच्छी तरह पूरा करता है। तपेदिक के मरीज़ों के लिए टमाटर लाभदायक सब्जी नहीं है और उन लोगों को जो सीने और गले की बीमार में मुब्तिला हों, टमाटर को किसी भी प्रकार प्रयोग करने से बचना चाहिए।

दाल, अनाज, फल, साग–सब्जियों के संतुलित एवं विभिन्नतापूर्ण मिश्रण से और साथ में दूध तथा उससे बने उत्पादनों के सेवन से शरीर के सभी आवश्यक तत्वों की पूर्ति हो जाती है।

गोभी वंश की सब्जियां जैसे बन्द गोभी, ब्रोसली में ऐसे तत्व पाये गये हैं जो शरीर का विभिन्न प्रकार के कैन्सर से बचाव करते हैं।

(डा० जे०एल० अग्रवाल)

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Deals :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Deals in :
Embroidery Raw Materials
Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala
Police Chowki,
Chowk, Lucknow- 2260063

जिन्नात की औलाद

अबु मर्गूब

इब्लीस की औलाद

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः "क्या तुम लोग इब्लीस को और उसकी औलाद को मेरे सिवा अपना काम बनाने वाला ठहराते हो?" (सूर–ए–कह्फ़ :५०) आयत के इस जुम्ले से मालूम हुआ कि इब्लीस के औलाद है। इसी आयत के तह़त अ़ल्लामा शंकीती ने अज़वाउल बयान में लिखा है कि "क़तादा ने फ़रमाया कि मैंने इस आयत से समझा है कि इब्लीस के बीवी भी होगी इस लिये कि औलाद के लिये बीवी का होना ज़रूरी है।" और मुजाहिद का क़ौल नक़्ल किया है जिसका ख़ुलासा यह है कि इब्लीस पांच या दस अन्डे रोज़ाना देता है और हर अन्डे से ७० शैतान पैदा होते हैं। इसी आयत के तह़त शंकीती ने इब्लीस के कुछ अहम बेटों के नाम भी गिनाए है जैसेः ज़लंबू यह बाज़ार में शैतनत करता है। तबरः यह मसाइब पर नौह़ा व मातम करने पर उक्साता है। अ़वरः यह ज़िना कारी पर उभारता है। मसूतः यह अफ़वाहें और झूठी खबरें फैलाने पर उक्साता है। दासमः घरों में शैतनत करता है। वल्हानः यह तहारत में वस्वसे डालता है। अक़ीसः यह नमाज़ों में वस्वसे डालता है। मर्रः यह गाने बजाने में फंसाता है। लेकिन शंक़ीती ने किताब व सुन्नत से इस पर कोई दलील नक्ल नहीं की। अल्बत्ता ह़ज़रत सलमान (रज़ि०) से एक मरफ़ूअ़ ह़दीस नक्ल की है कि "बाज़ार में अव्वल दाख़िल होने वाले न बनो न आख़िर निकलने वाले इसलिये कि शैतान वहां अन्डे बच्चे देता है।

जिन्नों में तम्स (संभोग) की सलाह़ियत (योग्यता) है।

सूर–ए–रह़मान की आयत ७४ में बताया गया है कि जन्नत में ईमान वालों को ऐसी ह़ूरें मिलेंगी जिनको उन से पहले न किसी इन्सान ने हाथ लगाया होगा (अर्थात संभोग किया होगा) न किसी जिन्न ने।"

इब्नि कसीर ने इस आयत के तह़त लिखा है कि यह आयत दलील है इस बात की कि मोमिन जिन्न जन्नत में दाख़िल होंगे और अरतात बिन मुंज़िर का क़ौल नक़्ल किया है कि ज़ुम्रा बिन ह़बीब से सुवाल किया गया कि क्या जिन्न जन्नत में दाख़िल होंगे? उन्होंने कहा हां, और निकाह़ करेंगे जिन्न जिन्नीयात के साथ और इन्स इन्सीयात के साथ। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः लम् यत्मिस्हुन्न इन्सुन् कब्लहुम वला जान्न्"(५५:७४) इस आयत से जिन्नो में तम्स की सलाहियत साबित होती है। तम्स के मअ़ना छोने के है लेकिन यहां जिमाअ़ (संभोग) के मअ़ना में है। ज़ुम्रा का यह क़ौल गुज़रा कि इन्सान इन्सान औरतों से निकाह़ करेंगे और जिन्न जिन्नीयात से मगर इस क़ौल की कोई दलील दर्ज नहीं की गई। अगर यह क़ौल सह़ीह़ हो तो इस से यह इशारा भी मिलता है कि इन्सान की ह़ूरें इन्सानी जिन्स से होंगी और जिन्नों की ह़ूरे जिन्नों की जिन्स से। (वल्लाहु अअ़लम)

इस क़ौल से यह बात भी समझ में आती है कि जिन्न इन्सान औ़रत के तम्स (संभोग) पर क़ादिर नहीं सिवाए इस के कि वह शक्ल बदलकर इन्सान की शक्ल में आकर संभोग करे। इसकी ताईद में शैख यासीन की किताब "कश्फुस्सितार अ़न अबातीलिलअ़र्रा फ़ीनल अश्आर" सफह ७५ के एक फ़त्वे का हवाला देता हूँ उसमें है कि "जिन्न अगर किसी औ़रत से सुह़बत करे और इन्ज़ाल (वीर्य पतन) न हो तो गुस्ल फ़र्ज़ नहीं "इस से मालूम हुआ कि जिन्न की सुह़बत इन्सान की तरह नहीं होती लिहाज़ा अगर इन्ज़ाल न हो तो ग़ुस्ल फ़र्ज़ न होगा। सिवाए इसके कि जिन्न इन्सान की शक्ल मे आकर सुह़बत करे या अपनी ताक़त से इन्ज़ाल करा दे। (जारी)

जिन्नात अपनी शक्ल बदल कर किसी भी जानदार की शक्ल में आ सकते हैं

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

उम्मुल मोमिनीन

हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि०)

आफ़ीन फ़ारूक़ी

नाम रमला, उम्मे हबीबा (रजि०) कुन्नियत, सिल्सिल–ए–नसब यह है, रमला बिन्ते अबी सुफयान सख़्र बिन हर्ब बिन उमय्या बिन अब्द शम्स, माँ का नाम सफ़िया बिन्ते अबुल आस था जो हजरत उस्मान रजि० की सगी फूफी थी, हज़रत हबीबा (रजि०) हज़रत मुहम्मद की नुबूवत मिल जाने के सत्तरह साल पहले पैदा हुईं। (इसाबा भाग ८ पेज ८४)

उबैदुल्लाह बिन जहश से जो हरब बिन उमय्या के हलीफ़ थे निकाह हुआ।(इसाबा भाग ८ पेज ८४)

और उन ही के साथ मुसलमान हुईं और हबशा को हिजरत की , हबशा में जाकर उबैदुल्लाह ने ईसाई मज़हब इख़्तियार किया, उम्मे हबीबा (रजि०) से भी कहा लेकिन वह इस्लाम पर क़ायम रहीं, अब वह समय आ गया, कि उनको इस्लाम और हिजरत की फ़ज़ीलत के साथ उम्मुल मोमिनीन बनने का शरफ़ भी हासिल हो, उबैदुल्लाह ने ईसाई होकर बिल्कुल आज़ादाना जिन्दगी बसर करना शुरू की नशा की आदत हो गयी, आखिरकार उनका इन्तिक़ाल हो गया।

(जरकानी भाग ३ पेज २७६ इब्ने सअ़द)

इद्दत के दिन ख़त्म होने के बाद आँ हज़रत (सल्ल०) ने अम्र बिन ज़ुमुरी को नज्जाशी की ख़िदमत में उम्मे हबीबा को निकाह का पैग़ाम देने के लिए भेजा, जब वह नज्जाशी के पास पहुचे तो उसने उम्मे हबीबा (रजि०) को अपनी लौंडी अबरहा के जरिये से पैगाम दिया कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मुझ को तुम्हारे निकाह के लिए लिखा है, उन्होंने खालिद बिन सईद उमवी को वकील तय किया और उसकी वजह से अबरहा को चाँदी के दो कंगन और अगूठियाँ दीं, जब शाम हुई तो नज्जाशी ने जअ़फ़र (रजि०) इब्ने अबी तालिब और वहां के मुसलमानों को जमा करके खुद निकाह पढ़ाया, और आँ हज़रत (सल्ल०) की ओर से चार सौ दीनार महर अदा किया निकाह के बाद हज़रत उम्मे हबीबा (रजि०) जहाज़ में बैठ कर रवाना हुई और मदीना के बन्दरगाह में उतरीं, आँ हज़रत (सल्ल०) उस समय ख़ैबर में तशरीफ़ रखते थे, यह सात हि० या छः हि० किस्सा है, (मुसनद भाग ६ पेज ४२७ व तारीख़ तबरी वाकिया ६ हि०)

उस समय हज़रत उम्मे हबीबा (रजि०) की उम्र ३६, ३७ साल की थी।

हज़रत उम्मे हबीबा (रजि०) के निकाह के सम्बन्ध में कुछ रिवायतें हैं, हमने जो रिवायत ली है वह मसनद की है और मशहूर रिवायत के मुताबिक है हाँ महर की मिक्दार में कुछ ग़लती मालूम होती है, आम रिवायत यह और मुसनद में भी है कि अज़वाज मुतह्हरात और साहब जादियों का महर चार चार सौ दिरहम था, इस बिना पर चार सौ दीनार रावी का बयान सही है, इस मौका पर हम को सही मुस्लिम की एक रिवायत का ज़िक्र करना है,

सही मुस्लिम में है कि लोग अबू सुफयान को नज़र उठा के देखना और उसके पास बैठना नापसन्द करते थे, इस बिना पर उन्होंने आँ हजरत (सल्ल०) से तीन चीजों की माँग की जिनमें एक यह भी थी कि उम्मे हबीबा (रजि०) से शादी कर लीजिए, आँ हज़रत (सल्ल०) ने उनकी माँग को कुबूल फ़रमाया, इस रिवायत से मालूम होता है कि अबू सुफ़यान के मुसलमान होने के समय हजरत उम्मे हबीबा (रजि०) अज़वाज मुतह्हरात में दाखिल नहीं हुई थी, लेकिन यह रावी का वहम है, अतः इब्ने सअ़द, इब्ने हज़्म, इब्ने जौज़ी, इब्ने असीर बेहकी और अब्दुल अजीम मुन्जरी ने उसके खिलाफ़ रिवायत की है और इब्ने सअ़द के सिवा सबने इस रिवायत की तरदीद की है।

हज़रत उम्मे हबीबा (रजि०) ने अपने भाई अमीर मुआ़विया (रजि०) के ज़मान–ए–खिलाफ़त में सन ४४ हि० में इन्तिकाल किया और मदीना में दफ़न हुईं, उस समय उनकी उम्र ७३ वर्ष की थी, क़ब्र के सम्बन्ध में इस क़दर मालूम है कि अमीरूर्मोमिनीन हज़रत अली (रजि०) के घर में थी (हजरत अली रजि० बिन हुसैन रजि०) से मंकूल है कि एक बार मैंने अपने घर का एक कोना खुदवाया तो एक कत्बा मिला, "यह रमला बिन्त सख़्र की क़ब्र है" अतः उसको मैंने उसी जगह रख दिया।

(इस्तीआ़ब भाग २ पेज ७५०)

मौत आने के क़रीब हजरत उम्मे हबीबा (रजि०) ने हज़रत आइशा (रज़ि०) और हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) को

अपने पास बुलाया और कहा (कि सौकनों में जो कुछ होता है वह हम लोगों में भी कभी हो जाया करता था) इसीलिए मुझ को माफ़ कर दो, हजरत आइशा(रजि०) फरमाती हैं कि मैंने माफ कर दिया और उनके लिए दुआ–ए–मग्फिरत की, तो बोलीं, तुम ने मुझ को खुश किया अल्लाह तुम को खुश करे।

(इसाबा भाग ८ पेज ८५ बहवाला इब्ने सअ़द)

पहले पति से दो लड़के पैदा हुए, अब्दुल्लाह और ह़बीबा। ह़बीबा (रजि०) ने नुबूवत के माहौल में तरबियत पाई और दाऊद बिन उरवः बिन मसऊद के निकाह में आई, जो क़बील–ए–सक़ीफ़ के रईस थे।

खूबसूरत थीं, सही मुस्लिम में खुद अबू सुफ़यान की ज़बानी मन्कूल है,

मेरे यहाँ अरब के हसीन तर और जमील तर औरत मौजूद है।

हज़रत उम्मे ह़बीबा (रजि०) से हदीस की किताबों में (६५) रिवायतें मन्कूल हैं, राविो की तादाद भी कम नहीं, बाजों के नाम यह हैं ह़बीबा (बेटी) मुअ़विया और उत्बः (रजि०) बेटा अबू सुफयान (रजि०), अब्दुल्लाह बिन उत्बः, अबू सुफ़यान बिन सईद सक़फी (भाँजा) सालिम बिन सवार (मौला) अबुलजराह़, सफ़ीया बिन्त शैबः, जैनब बिन्त अबू सलमा (रजि०), उरवः जुबैर (रजि०), अबू सालेह अस्समान, शहरा बिन हौशब।

हज़रत उम्मे हबीबा (रजि०) का ईमान इतना दृढ़ था कि फत्ह़ मक्का से पहले जब उनके बाप (अबूसुफ़यान) कुफ्र की हालत में आँ ह़ज़रत (सल्ल०) के पास मदीना आए और उनके घर गये तो आँ हज़रत (सल्ल०) के बिछौने पर बैठना चाहते थे हजरत उम्मे हबीबा (रजि०) ने देखकर बिछौना उलट दिया, अबू सुफयान को आश्चर्य हुआ कि बिछौना इतना अजीज़ है। बोलीं, यह आँ हज़रत (सल्ल०) का फ़र्श है और आप मुश्रिक हैं और इस बिना पर नापाक हैं, अबू सुफयान ने कहा कि तू मेरे पीछे बहुत बिगड़ गयी। (इसाबा भाग ८ पेज ८५ बहवाला इब्ने सअद)

इस रिवायत से साबित होता है कि उम्मे हबीबी उम्मुल मोमिनीन बन चुकी थीं और अभी अबू सुफ्यान इस्लाम में दाखिल नहीं हुए थे। हदीस पर बहुत ही अमल करती थीं और दूसरों को भी ताकीद करती थीं, उनके भाँजे अबू सुफयान बिन सईद बिन अलमुगीरा आए और उन्होंने सत्तू खाकर कुल्ली की तो बोलीं, तुम को वुजू करना चाहिए, क्योंकि जिस चीज़ को आग पका दे उसके इस्तिमाल से वजू ज़रूरी होता है, आँ हजरत (सल्ल०) का हुक्म है। (मुसनद भाग २ पेज ३२६)

(यह हुक्म ख़त्म हो गया, अर्थात पहले था, फिर हुजूर (सल्ल०) ने उसको बाकी नहीं रखा, हुजूर (सल्ल०) और सहाब–ए–किराम आग पर पकी हुई चीजें खाते थे(और अगर पहले से वजू होता) तो दोबारा वजू नहीं करते थे, बल्कि पहले ही वजू से नमाज़ पढ़ लिया करते थे, इस तरह की हदीस हजरत फातिमा (रजि०) के हालात में मिलेगी)

अबू सुफयान का इन्तिकाल हुआ तो खुशबू लगा कर गालों पर मली और कहा कि किसी पर तीन दिन से ज्यादा शोक न किया जाए, हाँ पति के लिए चार महीना दस दिन शोक करना चाहिए। (बुख़ारी भाग २ पेज ८०३)

आँ हज़रत (सल्ल०) से एक बार सुना था कि जो व्यक्ति बारह रकअ़त रोज़ाना नफ़िल पढ़ेगा उसके लिए जन्नत में घर बनाया जाएगा, फरमाती हैं मैं इनको हमेशा पढ़ती हूँ, इसका यह असर हुआ कि उनके शागिर्द और भाई उत्बः और उत्बः के शागिर्द अम्र व इब्ने उवैस और उमर के शागिर्द नूअ़मान बिन सालिम सब अपने अपने ज़माने में बराबर यह नमाजें पढ़ते थे।

(मुसनद भाग ६ पेज ३२७)

0522-2214889

BOMBAY GARMENTS & TAILORS

85, Hazaratganj, Lucknow-226001

New 2227802

BOMBAY TAILORS

Specialist in Fusion Stiching For Modern People

New Bazaza Aminabad, Lucknow

0522-256005

Asif Bhai Saree Wale

M.A. Saree Bhandar

Manufacturer & Supplier of :

Chickan Sarees & Suit Pieces

In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न: वुज़ू में सर के मसह़ का क्या ह़ुक्म है?

उत्तर: वुज़ू में चौथाई सर का मसह़ फ़र्ज़ है और पूरे सर का मसह़ सुन्नत है।

प्रश्न: सर के मसह़ का क्या मतलब है?

उत्तर: सर के मसह़ से मतलब है भीगा हुआ हाथ सर पर फेरना।

प्रश्न: बाज़ लोग सर के मसह़ से पहले दोनो हाथों की उगलियों को चूम लेते है तब मसह़ करते हैं इस का क्या ह़ुक्म है?

उत्तर: यह एक फ़ुज़ूल और लग़्व काम है, किसी ने अपनी तरफ़ से बढ़ा लिया है। भीगा हुआ हाथ सीधे सर पर ले जाकर मसह़ करना चाहिये मसह़ से पहले कहीं और इस्तिअ़माल न करना चाहिये।

प्रश्न: कोई शख़्स वुज़ू में सर का मसह़ करना भूल जाए और नमाज़ के बाद उसे याद आए तो अब क्या करे?

उत्तर: फिर से वुज़ू कर के नमाज़ दोहराए।

प्रश्न: नमाज़ में नीयत के बाद वाली तक्बीर यानी तक्बीरे तह़रीमा अगर दिल में कह ले तो क्या ह़ुक्म है?

उत्तर: तक्बीरे तह़रीमा ज़बान से कहना फ़र्ज़ है इमाम है तो ज़ोर से कहे, मुक़्तदी है या अकेले पढ़ रहा है, तो आहिस्ता कह ले मगर ज़बान से कहे बिना न तक्बीरे तह़रीमा सह़ीह़ होगी न नमाज़।

प्रश्न: नमाज़ में सूर–ए–फ़ातिह़ा और दूसरी सूरे अगर ज़बान चलाए बिना दिल में पढ़ लें तो क्या ह़ुक्म है?

उत्तर: अकेले नमाज़ पढ़ने वाले के लिये और इमाम के लिए सूर–ए–फ़ातिह़ा और जो सूरे पढ़ें ज़बान से पढ़ना ज़रूरी है दिल में पढ़ेंगे तो नमाज़ न होगी।

प्रश्न: ह़ज़रत इमाम ह़ुसैन (रज़ि०) के साथ इमाम लगाना कैसा है ऐसे ही उन के साथ अ़लैहिस्सलाम लगाना कैसा है

उत्तर: इमाम का लफ़्ज़ बहुत जगहों पर बोला जाता है। नमाज़ पढ़ाने वाले को भी इमाम कहा जाता है। जिन आ़लिमों ने कुर्आन और अह़ादीसे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अह़काम निकाल कर अलग मुदव्वन किये (लिखे) ज़िन्दगी के नये मसाइल के अह़काम क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में तलाश किये वह भी इमाम कहे जाते हैं जैसे इमाम अबू ह़नीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई़, इमाम अह़मद बिन ह़ंबल अल्लाह तआ़ला इन सब पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमाए। अह़ादीसे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज्मअ़ करने वाले बुजुर्ग आ़लिमों के साथ भी इमाम का लफ़्ज़ लगाया गया है जैसे इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम, इमाम तिर्मिज़ी रह़मतुल्लाहि अ़लैहिम, वक़्त का इस्लामी ह़ाकिम भी इमाम है ह़दीस शरीफ़ में इमामे आ़दिल की बड़ी फ़जीलत आई है। ह़ज़रत अबू बक्र, ह़ज़रत उ़मर, ह़ज़रत उ़स्मान, ह़ज़रत अ़ली, ह़ज़रत ह़सन रज़ियल्लाहु अ़नहुम को मिसाली इमामत ह़ासिल थी लेक़िन उम्मत ने इन के लिये इमाम का लफ़्ज़ इस्तिअ़माल नहीं किया। आ़म रहनुमा (पथ प्रदर्शक) भी हमारे इमाम हैं लेकिन आ़म तौर से उन को लफ़्ज़ इमाम से नहीं याद किया जाता है। उन को इमाम माना जाता है मगर कहा नहीं जाता अगर कहा जाए तो कोई हरज नहीं। इन में से कई ह़ैसीयतों से हम ह़ज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु को इमाम कह सकते हैं, लेकिन ग़ौर करें कि जब ह़ज़रत अबू बक्र, हज़रत उ़मर, हज़रत उ़समान, ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के साथ उम्मत ने इमाम का लफ़्ज़ नहीं लगाया तो यह ह़ज़रत हुसैन रज़ियल्लाह अ़न्हु के साथ, कैसे लगाया जाने लगा? बेशक दूसरे इमामों की तरह़ सय्यिदुना ह़ुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु हमारे इमाम हैं लेकिन जिस तरह़ हम ख़ुलफ़ाए राशिदीन अबू बक्र, व उ़मर व उ़स्मान व अ़ली (रज़ि०) को इमाम समझतें हैं मगर लिखते बोलते नहीं हैं उसी तरह़ ह़जरत ह़सन, व ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि०) को हम अपना इमाम जानें मगर लिखने बोलने से गुरेज़ करें इसका एक अहम सबब है वह यह कि शीआ़ ह़ज़रात के अक़ीदे में बारह मुतअ़य्यन इमाम हैं, जो मअ़सूम हैं, जिन को ह़लाल व ह़राम का

इख़्तियार है, जिन की इताअ़त फ़र्ज़ है, उन इमामों में ह़ज़रत ह़सन और ह़ज़रत ह़ुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा भी हैं। ज़ाहिर है यह अ़क़ीदा इस्लामी अ़कीदे से टकराता है, इस्लामी अ़कीदे में यह बाते अल्लाह के रसूलों के लिये बताई गई हैं, और आख़िर में यह बाते आख़िरी नबी ह़जरत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये मानी गई हैं। वह मअ़सूम हैं, वह अल्लाह के हुक्म से ह़लाल व ह़राम बताते हैं, उन की इताअ़त फ़र्ज़ है। बस चूंकि शीआ़ ह़ज़रात ह़जरत ह़ुसैन (रज़ि०) को एक ख़ास मअ़ना मे इमाम कहते हैं इस लिये अहले सुन्नत ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि०) को अपने मअ़ना में इमाम मानते है मगर शीओ की मुशाबिहत से बचने के लिये आ़मतौर से बोलते और लिखते नहीं हैं। कभी बाज़ उ़लमा लिख भी देते हैं जुमे के ख़ुत्बे में भी लाते हैं तो उन मा़नों में नहीं लेते जिन मा़नों में शीआ़ लेते हैं। रही बात अ़लैहिस्सलाम की तो इस में भी अहले सुन्नत ने अल्लाह के नबियों और रसूलों में हर एक के लिये अ़लैहिस्सल्लाम व अ़लैहिस्सलात, नीज़ अल्लाह के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मद के लिये अ़लैहिस्सलात व स्सलाम के अ़लावा एक इम्तियाज़ी कल्मा सल्लललाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाब–ए–किराम के लिये रज़ियल्लाहु अ़न्हुम जो एक, दो, तीन, मुज़क्कर,मुअन्नस के लिह़ाज़ से बदलता रहता है और सह़ाब–ए–किराम के बाद औलिया उल्लाह के लिये रह़मतुलाहि अ़लैहि या रहिमहुल्लाह यह भी वाह़िद , तस्निया, जमअ़ तज़कीर, तानीस के लिह़ाज़ से बदलता रहता है। लिहाज़ा चाहिये कि हम इस इम्तियाज़ (अंतर) को बाक़ी रखें वैसे यह दुआ़यः कलिमात किसी के लिये भी बोल दें तो कोई गुनाह नहीं होगा, लेकिन चूंकि शीआ़ ह़ज़रात अपने इमामों को मअ़सूम समझते हुए अंबिया अ़लैहिस्सलाम से फ़र्क न करते हुए ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि०) के साथ अ़लैहिस्सलाम लगाते हैं लिह़ाज़ा हम अहले सुन्नत को इस से भी गुरेज़ करते हुए रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहना चाहिये। वल्लाहु अअ़लमु बिस्सवाब।

प्रश्नः तअ़ज़िया दारी का क्या ह़ुक्म है?

उत्तरः तअ़ज़िया दारी को बरेलवी, देव बन्दी, नदवी सभी उ़लमा ने नाजाइज़ कहा है लिहाज़ा तअ़ज़िया दारी छोड़ना बहुत ज़रूरी है।

प्रश्नः मुह़र्रम में ह़ज़रत ह़ुसैन की याद में नौह़ा पढ़ना और मातम करना कैसा है?

उत्तरः इस्लाम में किसी की शहादत या वफ़ात पर हर साल ग़म की यादगार मनाना, शहीद होने वाले के लिये नौह़ा पढ़ना मातम करना ह़राम है।

प्रश्नः एक साह़िब का कहना है कि जो शख़्स ह़ज़रत ह़ुसैन के लिये नौह़ा नहीं पढ़ता, मातम नहीं करता वह उन से मह़ब्बत नहीं रखता क्या यह सह़ीह़ है?

उत्तरः उनका कहना बिलकुल ग़लत है। मह़ब्बत का तअ़ल्लुक दिल से है, मह़ब्बत वाला आप का नाम अदब से लेगा आप को ईसाले स्वाब करेगा जो शख़्स ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि०) के नाना की शरीअ़त पर नहीं चलता वह ह़ज़रत ह़ुसैन का चाहने वाला हरगिज़ नही हो सकता और उनके नाना अ़लैहिस्सलाम की शरीअ़त मे नौह़ा व मातम ह़राम है।

प्रश्न : इस्लाम में तक़्लीद क्या है और उसका क्या ह़ुक्म है?

उत्तर : तक़्लीद का मतलब है किसी की बात बिग़ैर ग़ौर फिक्र के, उस पर भरोसा करते हुए, मान लेना। अस्ल में इस्लामी तालीमात कुर्आन और ह़दीस में हैं जो अ़रबी में हैं, हर इन्सान के बस की बात नहीं कि वह इतनी अ़रबी पढ़ ले कि वह क़ुर्आन व ह़दीस से इस्लामी ता़लीमात सीधे निकाल सके। उसको किसी आ़लिम पर भरोसा करके उस से इस्लामी ता़लीमात लेना होंगी, यही तक़्लीद है।

फिर बअ़ज़ अह़काम की आयतों और ह़दीसों के समझने में ऊंचे उ़लमा में इख़्तिलाफ़ हुआ ऐसी सूरत में जब सब उ़लमा जिन मसाइल में मुत्तफ़िक़ न हो सके तो जिसने जिसको सह़ीह़ समझा उसके साथ हो गया और ह़नफ़ी, मालिकी, शाफ़ओ़ी, ह़म्बली जैसी जमाअ़तें बन गयीं। किताब व सुन्नत को किसी ने न छोड़ा सिर्फ़ मतलब समझने में इख़्तिलाफ़ हुआ। इस तरह़ सब ह़क़ पर हैं। एक बहुत अच्छी तरह़ अ़रबी जानने वाला जो किताब व सुन्नत को खूब अच्छी तरह समझता है। शाने नुजूल, नासिख़,मनसूख़, खास व आ़म, मुकैयिद व मुतलक़ को जानता है तो चाहे वह बराह रास्त किताब व सुन्नत पर अ़मल करे या इन चारों इमामों में से जिसे ज़ियादा ह़क़ पर पाये उसके मतलब को अपनाये। लेकिन अ़रबी न जानने वाले के लिए ज़रूरी है कि वह जिस आ़लिम या इमाम पर भरोसा करे उसकी तक़्लीद करे। अ़रबी न जानने वाले या बे पढ़े मुसलमान के लिए तक़्लीद ज़रूरी है। इन मशहूर इमामों के ज़माने ही से कुछ उलमा ने किसी की तक्लीद नहीं की वह अहले–हदीस कहलाये। वह भी ह़क़ पर हैं।

ख़लीफ़ा मुक्तफ़ी बिल्लाह

की न्याय प्रियता

डा० मु० इज्तिबा नदवी

अब्बासी ख़लीफा मुक्तफ़ी बिल्लाह का शासन है। ख़िलाफत का तेज व प्रताप, महानता और प्रतिष्ठा प्रत्यक्ष रूप में मौजुद हैं। बग़दाद से दूर बसने वालों में उसका दबदबा व प्रभुत्व भी स्थापित है, लेकिन बग़दाद के शासकों और प्रशासनिक अधिकारियों में गफ़लत और लापरवाही पायी जाती है। उनकी इस गफ़लत और अपने कर्तव्य के प्रति उदासीनता से बगदाद के लोग विभिन्न प्रकार की समस्याओं और परेशानियों के शिकार हैं। हालात इतने बिगड़ जाते हैं कि लोगों की जान व माल को खतरा पैदा हो गया है और निरंतर चोरी और डाका व लूटमार की धटनाएं घटने लगी है। नगर अधिकारियों और पुलिस के ज़िम्मेदारों को सूचना दी जाती है, शिकायतें पहुंचाई जाती हैं मगर सब व्यर्थ साबित होता हैं।

तंग आकर शहर के जिम्मेदारों, मस्जिदों के इमामों, बाजार के बड़े व्यापारियों ने आपस में सलाह मशवरा करके खलीफ़ा मुक्तफ़ी बिल्लाह के पास जाकर इन हालात से अवगत कराने का इरादा किया। व्यापारियों के नेता ज़ियाउद्दीन अस्फिहानी ने एक बड़े प्रतिनिधि मंडल के साथ अमीरूल मोमिनीन मुक्तफी बिल्लाह की सेवा में उपस्थित हुए और अपनी विपदा इस प्रकार प्रस्तुत की:

अमीरूल मोमिनीन की जनता उसके न्याय की इच्छुक है और उसकी छत्र छाया में शरण लेना चाहती है, क्योंकि वह अचानक हमलों के कारण अपनी जान व माल के खतरे से दोचार है और सर्दी के मौसम के अन्त से चोरों, लुटेरों और दुष्ट बदमाशों की गतिविधियों में वृद्धि हो गयी है। घरों और दुकानों और गोदामों से सामान लूट ले जाते हैं यहां तक कि आने वाले मुसाफिर भी उनके हमलों से सुरक्षित नहीं है। सरकार! आप ही हमारी सुरक्षा व शान्ति की व्यवस्था कर सकते हैं। आप हमारी जान व माल के रक्षक हैं, हम आपसे खुदा का वास्ता देकर विनती करते है कि हमारी इस प्रार्थना पर ध्यान दें। अल्लाह की कृपा हो उस व्यक्ति पर जो भलाई की बात सुने और उस पर चले।' साथ आने वालों ने पीछे से आमीन कहा, मानो उन सबने अपने नेता की बात की भरपूर पुष्टि की। ख़लीफ़ा मुकतफ़ी बिल्लाह यह शिकायत सुनकर बिलबिला उठा और कहा कि मेरी राजधानी में हालात इस सीमा तक बिगड़ चुके हैं। मैं उस समय तक आराम की नींद नहीं सो सकता जब तक एक एक करके सारे चोरों, लुटेरों, डाकुओं, जालिमों, अत्याचारियों को डंड नहीं दिया जाता और मेरी प्रजा शान्ति व सुख के साथ अपने घरों में और कारोबार में स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर लेती।

उसने आवाज दी कि कोतवाल को तुरन्त पेश किया जाए। कोतवाल सर झुकाए हांपता कांपता हुआ सामने आ खड़ा हुआ। अमीरूल मोमिनीन ने उसको पुलिस की लापरवाही और उदासीनता पर फटकारा। इसके बाद प्रतिनिधि मंडल के नेता ज़ियाउद्दीन अस्फ़िहानी से कहा कि जानी व माली की क्षति की एक सूची तैयार करके हमे भेज दें और लोगों को विश्वास दिलाया कि वह स्वयं अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा देंगे।

ज़ियाउद्दीन अस्फ़िहानी ने अमीरूल मोमिनीन की सेवा में सूची पेश कर दी तो उन्होंने कोतवाल शहर और पुलिस के अफसरों की एक आपात बैठक बुलायी और उनको सात दिन का समय देकर आदेश दिया कि अपराधियों को गिरफ्तार करके हमारे सामने लाओ वर्ना उनकी सारी सम्पत्ति ज़ब्त करके लोगों की क्षति पूर्ति की जाएगी।

मुकतफी बिल्लाह अपना आदेश सुनाने के बाद महल के अपने विशेष कक्ष की ओर चले गये। कोतवाल और पुलिस अधिकारी भय से कांपते हुए वापस उठे। उसी समय से राजधानी बगदाद के गली कूचों और दूर दूर के स्थानों में अपने आदमियों का जाल बिछा दिया। कोतवाल ने स्वयं रात दिन गश्त लगाकर भेस बदल कर अपराधियों और डाकुओं की खोज शुरू कर दी।

कोतवाल एक दिन गली कूचों से गुजरते हुए शहर के किनारे एक ऐसी गली में दाख़िल हुए जो दूसरी तरफ से बन्द थी। गली के सारे मकान बहुत पुराने और टूटे फूटे थे। अधिकांश मकान खंडरों की तरह गन्दे और बिना रंग के थे। गली भी तंग अंधेरी थी। उसमें कूड़ें करकट के ढेर लगे हुए थे। यह लगता था कि या तो इन घरों में कोई रहता ही नहीं है, यदि ये आबाद हैं तो लोग अत्यन्त गरीब और निर्धन हैं। कोतवाल इस गली के अन्दर दाख़िल हो गया। उसने कूड़े करकट को उलट कर देखा तो उसकी नज़र मछली के कांटो पर पड़ी, जो ताज़े थे। उसने गौर से देखा तो अन्दाजा हुवा कि वे ऐसी मछली के कांटे थे जो बड़ी महंगी बिकती थी। उसकी हैरत और जिज्ञासा बढ़ने लगी, क्योंकि इस गली में जो गरीबों की आबादी हो सकती है उसमे इतनी महंगी मछलियों के कांटे कैसे पाए जा सकते हैं। अचानक एक टूटे हुए मकान से एक आदमी बाहर निकला। कोतवाल ने उसे रोक कर पूछा इस जैसे कांटे वाली मछली की क्या कीमत हो सकती है?

उसने जवाब दिया इसकी कीमत कम से कम एक दीनार हो सकती है। कोतवाल ने कहा गरीबों की बसती में इतनी महंगी मछली के कांटे पाये जाने का मतलब यह है कि इसमें अवश्य कोई भेद है। उस आदमी ने जवाब दिया कि इसमें कोई भेद नहीं लगता और फिर कोई बात कहे बिना वहां से आगे बढ़ गया।

कोतवाल एक घर की ओर बढ़ा और दरवाजे पर दस्तक दी। एक बूढ़ी औरत निकली और उसे ध्यान से देखने लगी। कोतवाल ने पीने का पानी मांगा तो पानी ले आयी। वह हल्के हल्के घोंट भरने लगा और बूढ़ी औरत से गली, मकान, मस्जिद और वहां रहने के बारे में बहुत सी बातें करने लगा। कौन से लोग रहते है, क्या काम करते है और अनका आपस में एक दूसरे से मिलना जुलना है या नहीं? मुख्य रूप से उस घर में कौन लोग रहते हैं जिसके दरवाजों के सामने मछली के कांटे व अन्य सामान पड़ा है? उस औरत ने बताया कि उस घर में दस गोरे चिट्टे आदमी रहते हैं। लगता है कि व्यापारी हैं। एक महीने से उस घर में रह रहे हैं। केवल दिन में रहते हैं, खाते पीते और शतरंज आदि खेलते रहते हैं। एक सेवक है जो उनकी सेवा और घर की देखभाल करता है। रात में पिछले पहर जब वे वापस आते हैं, हम सो रहे होते हैं। कोतवाल ने जब ये बातें सुनी तो उसे यह समझने में देर न लगी कि चोरों का अड्डा यही मकान है, जो राजधानी बगदाद में आफ़त मचाए हुए हैं। उसने तुरन्त अपने आदमियों को इशारा दिया। उन्होंने पूरी गली को घेर लिया। इसके बाद कोतवाल ने उस मकान पर दस्तक दी। वही नौकर निकला। कोतवाल बड़ी फुरती के साथ मकान के अन्दर दाखिल हो गया और दूसरे पुलिस अफसरों ने भी उसका साथ दिया। उन दसों चोरों ने अचानक अपने को पुलिस की हिरासत में पाया। भागने या किसी प्रकार का बहाना बनाने के सारे रास्ते बन्द हो चुके थे। उन्होंने बेबस होकर अपने को पुलिस के हवाले कर दिया और स्वीकार कर लिया कि चोरी आदि की सारी वारदातों के वह जिम्मेदार हैं। उन्होंने और लूटे हुए बाकी बचे सामान का पता भी बता दिया। पुलिस सारा सामान बरामद करके और अपराधियों को गिरफ्तार करके खलीफा की सेवा में उपस्थित हुए और सारी घटना सुनायी। खलीफा ने अपराधियों को शरअी आदेश के अनुसार हाथ पांव कटवाकर राजधानी से निकलवा दिया। बगदाद के लोगो ने सुख शान्ति का सांस लिया।

काज़ी अयास बिन मुआवियह की न्यायिक जांच पड़ताल

महान ताबअी हज़रत अबू वाइला अयास बिन मुआवियह बसरा के काजी हैं। अपने ज्ञान व बुर्जगी, तकवा, दीनी मामलों की समझ और शरई कानून की सूझ बूझ के कारण बड़े सम्मानित हैं। उलझे मुकदमों और पेचीदा मामलों को हल करने में बड़ी महारत रखते है और समझ बूझ से काम लेते है। आयु सत्तर साल से ऊपर हो चुकी है, मगर काम करने की क्षमता, मामलों की समझ और ज्ञान की गहराई में कोई कमी नहीं हुई है। बसरा के एक धनी नेक व्यापारी अबू जैद बसरी उनकी अदालत में आकर अपनी घटना इस प्रकार सुनाते हैं।

मैं एक सफल व्यापारी हूँ। मैंने व्यापार के द्वारा बड़ा माल जमा किया। मेरा कोई सगा सम्बंधी या दोस्त ऐसा नहीं है कि जिसके पास अपनी अमानत रखवाने का सद अनुभव हुवा हो उसपर पूरा भरोसा हुआ हो। मैंने अचानक हज का इरादा कर लिया, मगर सफर से पहले अपने हीरे, जवाहरात और दौलत का सन्दूक़ किसी ऐसे ईमानदार व दयानतदार व्यक्ति के पास रखवा देना चाहता था, कि हज के बाद वापस

आकर उससे ले लूं और इस का पता भी किसी को न चले। बड़े सोच विचार के बाद बाज़ार के एक व्यापारी पर मेरी नज़र पड़ी। मेरे निकट वह बड़ा दीनदार, संयमी और ईमानदार आदमी था और उसकी तिजारत भी बहुत फैली हुई थी इसलिये उसकी अमानत दारी पर भरोसा करके अपनी दौलत का सन्दूक उसके पास अमानत के तौर पर रखवा दिया और बिना किसी को गवाह बनाए यह कहा कि जब मैं हज से वापस आऊँगा तो अपनी यह अमानत वापस ले लूंगा। उस आदमी ने बड़ी मोहब्बत और निष्ठा के साथ मेरी अमानत रखनी स्वीकार कर ली और यह विश्वास दिलाया कि जब तुम वापस आओगे तो इसी तरह पाओगे। मैं खुशी खुशी सन्तुष्ट होकर अल्लाह के भरोसे हज के लिए चला गया।

इसके बाद व्यापारी ने अपनी बात इस प्रकार बतायी, मै हज अदा करने के बाद ठीक ठाक वापस आया और उस व्यक्ति के पास गया ताकि अपने माल का सन्दूक वापस ले आऊं। उससे मैने कहा कि मेरी अमानत वापस कर दो तो मेरी हैरत की सीमा न रही, जब उसने साफ इनकार कर दिया और कहा कि कैसी अमानत? तुमने तो मेरे पास कभी कुछ नहीं रखा। उसने बड़ी सख्ती व बेरूखी से अमानत वापस करने से इनकार कर दिया और कसम खाने के बाद भी इनकार करता रहा। आदर्णीय क़ाज़ी साहब! मैं आपकी सेवा में केवल इसलिए आया हूं कि आप मेरी वह दौलत उस व्यापारी से निकलवादें।

क़ाज़ी अयास ने पूछा क्या तुम्हारे पास अमानत रखवाने का कोई सबूत या गवाह है? अबू जैद ने जवाब दिया: मेरे पास तो कोई सबूत या गवाह नहीं। काजी अयास ने कहा फिर तुमने इतनी सारी दौलत बिना किसी गवाह के कैसे उसके हवाले कर दी? अबू जैद ने जवाब दिया: जनाब अल्लाह का इर्शाद है:

'यदि तुम्हें एक दूसरे पर भरोसा हो तो जिसको अमानत सौंपी गयी है वह अदा कर दे और अपने पालनहार से डरो'

लेकिन उस आदमी को खुदा का कोई भय न रहा और उसने मेरी अमानत वापस करने से इनकार कर दिया। क़ाज़ी अयास को अबू ज़ैद की बातें सुनने के बाद विश्वास हो गया कि वह सच्चे है और उनके साथ धोखा किया गया है। लेकिन चूंकि इस दावे के लिए न प्रमाण है और न कोई गवाह है इसलिे सही बात को साबित करना बड़ा मुश्किल है। फिर भी काजी अयास ने कोई तदबीर निकालने के बारे में सोचना शुरू कर दिया और अबू जैद से कहा कि हमारी मुलाकात और यहां आकर सारी बात बताने का किसी से भी जिक्र न करो और अपने मामले को भी राज मे रखो। इस समय तुम जाओ और दो दिन के बाद मुझसे मिलना।

क़ाज़ी अयास ने पूरे मामले पर गहराई से सोच विचार किया। अन्ततः उनकी समझ मे एक तरकीब आ गयी, जिससे इनकार करने वाले उस व्यापारी से उक्त दौलत वापस ली जा सकती थी। दूसरी सुबह को काजी अयास ने उस व्यापारी को बुलाया और एकान्त में बड़े आदर, सम्मान और प्रसन्न मुद्रा में उसका स्वागत किया। अपने पास बिठाकर उसका हाल पूछा। फिर पूछा भाई तुम्हारा घर सुरक्षित है और चोरी या नकब का कोई ख़तरा नहीं?

उसने जवाब दिया कि मेरा मकान सुरक्षित है और किसी भी खतरे की कोई बात नहीं है।

क़ाज़ी अयास ने कहा कि मैंने यह बात इस कारण से पूछी कि हमारे पास कुछ अमानत का सामान है, जिसके बारे में फैसला करना है। लेकिन एक शरअी ज़रूरत से फैसले में लम्बा विलम्ब हो रहा है अतः उस माल को किसी सुरक्षित और अमानतदार हाथों में हिफ़ाज़त के साथ रखना है। उसने कहा कि मैं यह सेवा करने को तैयार हूं, उस माल की पूरी पूरी हिफ़ाज़त करूंगा।

क़ाज़ी साहब ने पूछा कि क्या इससे पहले तुम्हारे पास अमानतें रखवायी गयी हैं और तुमने वापस कर दी हैं? उसने कहा कि मुझे शहर के सारे बड़े लोग जानते है और मेरे ऊपर पूरा भरोसा करते हैं, किसी ने मेरी ईमानदारी व मेरे विश्वास पर किसी तरह का सन्देह नहीं किया है।

क़ाज़ी अयास ने कहा अच्छा जाओ, अपनी अलमारी आदि को बहुमूल्य सामान माल रखने के लिए ठीक ठाक करालो और उस कमरे को जिसमें यह सामान रखना है और ज्यादा सुरक्षित बना लो और अमानत ले जाने के लिए कल मजदूर लेकर, इसी समय आजाओ।

व्यापारी बड़ा खुश हुआ। इतनी बड़ी दौलत अमानत के रूप में हासिल करने की इच्छा में फूला नहीं समा रहा था। उसने सोचा कि यह माल मेरे पास रहेगा। न जाने विवादों का कब

निर्णय होगा। हो सकता है काजी इस बीच मर जाएं, मैं इस माल में से कुछ क़र्ज़ के रूप में लेकर तिजारत को बढ़ाउंगा और उससे मैं बहुत खूब लाभ कमाउंगा।

अगले दिन जब अबू ज़ैद क़ाज़ी साहब के पास पहुंचे तो उन्हों ने कहा कि अब तुम उस व्यापारी के पास जाओ और अपनी अमानत वापस करने की मांग करो और कहो कि यदि अमानत नहीं दोगे तो अभी क़ाज़ी अयास से शिकायत कर दूंगा। अतएव अबू जैद ने जाकर अपनी अमानत मांगी, पहले तो उसने टाल मटोल की फिर किसी हद तक दे देने की बात मानी। यह रवैया देखकर अबू जैद ने कहा कि यदि तुमने अमानत अभी वापस न की तो मैं तुरन्त काजी अयास के पास जाकर मुकदमा दायर करूंगा। यह सुनकर उस व्यापारी ने पूरी की पूरी अमानत वापस लाकर दे दी और क्षमा याचना करने लगा कि उसका उद्देश्य बेईमानी करना नहीं था, बल्कि वह तो केवल हंसी मज़ाक़ व छेड़ छाड़ कर रहा था। अबू ज़ैद ने क़ाज़ी अयास की सेवा में हाज़िर होकर बताया कि उसका पूरा सामान वापस मिल गया है।

दूसरे दिन वह व्यापारी मज़दूरों को साथ लेकर काजी के घर पहुंचा ताकि ख़ज़ाना ले जाए। काजी साहब ने उसे ऐसी नजरों से देखा कि वह घबरा गया। फिर अबू जैद के साथ उसने जो कुछ विश्वास घात किया था उस पर फटकारा और पूरे नगर में मनादी करा दी कि यह आदमी भरोसे के योग्य नहीं है, जिसके नतीजे में उससे लोगों ने मामला करना छोड़ दिया और अपनी बेईमानी व धोखे बाज़ी की सज़ा मिल गयी।

(पृष्ठ ४ का शेष)

फ़रमायाः "अब अल्लाह ने तुम पर तख़्फ़ीफ़ कर दी और मालूम कर लिया कि तुम में हिम्मत की कमी है बस अगर तुम में के १०० जमने वाले होंगे तो २०० पर ग़ालिब होंगे और अगर तुम में के हज़ार होगें तो दो हज़ार पर ग़ालिब आ जाएंगे और अल्लाह जमने वालों के साथ है।"(८:६६)

चुनांचि अब जिहाद की शर्तों में दूसरी शर्तों के साथ यह शर्त भी है कि मुसलमानों की ताक़त अपने मुक़ाबिल के मुक़ाबले में तादाद और सामान के लिहाज़ से कम से कम आधी हो। जिहाद दो तरह का होता है एक तो जब कोई ताक़त इस्लामी ताक़त की हक़ तल्फ़ी करती है, जैसे इलाक़े पर क़ब्ज़ा, मुसलमानों को क़त्ल कर देना लूट लेना वगैरह ऐसी सूरत में हालात का जाइजा लेकर क़ाज़ी जिहाद का फ़ैसला देता है और अमीरे मम्लिकत जिहाद का एलान करता है। दूसरी शक्ल में कोई ज़ालिम हुकूमत मुसलमानों की हुकूमत पर हमला आवर होती है ऐसी सूरत में ताक़त न होते हुए भी लड़ना पड़ता है इस सूरत मे ग़ल्बा यकीनी नहीं होता मगर दिफ़ाअ में मारे जाने वाले शहीद होते हैं जैसा कि अफ़गानिस्तान और इराक़ में हुआ और हो रहा है।

इस उम्मत के शहीदों को शुमार करना किसी के बस की बात नहीं इन में सब से ऊँचा दर्जा हज़रत हम्ज़ा(रज़ि०) का है जो हमारे हुज़ूर (सल्लल्लवाह अलैहिव सल्लम) के महबूब चचा हैं और ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने आप को सय्यिदुश्शुहदा (तमाम शहीदों के सरदार) का ख़िताब दिया। उसके बाद हज़रत उमर, हज़रत उसमान, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुम का दर्जा है, फिर शुहदाए बद्र व उहद व हुनैन का, बहर हाल जो हज़रात ग़ज़वात में शहीद हुए उन का मकाम बाद के शुहदा से ऊँचा है। हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जो मैदाने करबला में शहीद हुए उनको सय्यिदुश्शुहदाए करबला कहा जाता है। चूंकि हजराते हसनैन के बारे में सय्यिदा शबाबि अहलिल जन्नः हदीस में आया है और चूंकि हज़रत हुसैन रज़ियल्लाह अन्हु हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाडले नवासे हैं इसलिये बाज़ लोगों ने हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को मुतलक़ सय्यिदुश्शुहदा लिख दिया यह बात तहक़ीक़ के ख़िलाफ़ है। सय्यिदुश्शुहदा, हज़रते हम्ज़ा (रज़ि०) हैं।

इसी तरह हज़रत हुसैन (रज़ि०) की शहादत की याद में अज़ादारी ईजाद कर ली गई, जिस में हर साल मुहर्रम में गम मनाते हैं, नौहा पढ़ते हैं, अलम उठाते हैं, तअज़िया रखते है, पायक बनते हैं वगैरह यह सब नाजाइज़ है इन से बचना लाज़मी है। यह महज़ मेरी राए नहीं है सभी उलमा का फ़त्वा है। आम लोगों को ख़ुद सोचना चाहिये कि जब ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने महबूब चचा की शहादत पर और शुहदाए बद्र व उहद व हुनैन वग़ैरह की शहादत पर कोई ग़म की यादगार क़ाइम न की, ख़ुद हज़रत हुसैन (रज़ि०) ने अपने वालिद की शहादत पर अज़ादारी न अपनाइ तो यह अज़ादारी कैसे दुरूस्त हो सकती है। जाहिर है यह शीआ हज़रात की ईजाद है उन्हीं के ज़रीअे अहले सुन्नत में दाख़िल हो गई जिस से बचना ज़रूरी है।

(हम ज़िन्द–ए–जावेद का मातम नहीं करते)

दो नज़्में

हैदर अ़ली नदवी

नामे अहमद रहमतों का अब्र बन कर आ गया
रहनुमाई के लिए कुरआँ उतर कर आ गया
जुल्मतें सब मिट गई क़ायम हुआ अम्नों अमाँ
इस जहां मे आपका जब रूए अनवर आ गया
अज़्मते आक़ा नहीं कोई बयाँ कर पाएगा
तीरगी में ज़िक्रे सरवर नुर बन कर आ गया
मिदहते शाहे दो आ़लम कानों में गूंजी उधर
और ज़बाँ पर झूम कर अल्लाहु अकबर आ गया
लिखते लिखते नात सरकारे दो आ़लम खुद बखुद
जिक्रे बू बक्रो उमर उसमान हैदर आ गया
जब बढ़ी हद से ज़ियादा प्यास इस्माईल की
एड़ियों के ज़ोर से चश्मा उबल कर आ गया
अ़दल ये है बाबरी मस्जिद वहीं तामीर हो
ज़ख्में दिल अब सब्र की हद से गुजर कर आ गया
ज़ालिमों की शोरिशें अब बन्द होनी चाहियें
काला धब्बा जुल्म का गुजरात बन कर आ गया
कर दिया चैलंज जब जादूगरों ने दोस्तो
जो अ़सा मूसा का था वह बन के अजगर आ गया
कुदस में अफगानों में बग़दाद में ये कुश्तो खून
ढोंग आज़ादी का लेकर फिर सितमगर आ गया
मिट गया फिरऔन भी क़ारून भी हामान भी
रूक ज़रा ऐ बुश सितमगर तेरा नम्बर आ गया
जीते जी मेरे न होगी दीने आक़ा में कमी
लफ़्ज़ ये सिद्दीके अकबर की ज़बाँ पर आ गया
उठ गए दस्ते नबी फारूक़े आज़म के लिए
हल्क़ए इस्लाम में वह अ़द्ल परवर आ गया
नाज़ था जिनपे सख़ावत को हया का रश्क था
नामे उस्माँ जामिउ़ल कुरआन बन कर आ गया
था अ़मल दुश्वार लेकिन जब हुआ हुक्मे खुदा
दस्ते हैदर पर उखड़ कर बाबे ख़ैबर आ गया
फत्हे मक्का अर्जे ताइफ़ या मक़ामे बद्र हो
हर जगह पर काम अख्लाके पयम्बर आ गया
बुर्ज है जिनको सहाबा से वह मेरे भी नहीं
फैसला ये मुस्तफ़ा का बन के रहबर आ गया
सब गुलामाने मुहम्मद या खुदा मग़फूर हों
लेके यै फ़रयाद हैदर, तेरे दर पर आ गया

अल्लाह से किया हुआ वादा वफ़ा करो
बन्दे हो रब के बन्दगी का हक़ अदा करो
अम्नो अमान ले के आए हैं यहां मेरे हुज़ूर
फरमान है उनका यहां मिल कर रहा करो
टल जाएंगी मुसीबतें आक़ा ने है कहा
नाज़िल हों गर बलाएं तो सदक़ा किया करो
सुन्नत पे उनकी चल के ही है हर अ़मल क़बूल
आक़ा की सुन्नतों पे ऐ लोगो चला करो
एहसान बेशुमार हैं उम्मत पे आपके
कसरत से तुम दुरूद फिर उन पर पढ़ा करो
हालात ठीक होंगे और नेकी भी पाओगे
अपने पड़ोसियों से भी मिल कर रहा करो
हालात को बदल दे ये मोमिन की शान है
धारे मे वक़्त के न तुम हरगिज़ बहा करो
आएगी बिज़्ज़ुरूर मदद मोमिनो सुनो
तुम हज़रते अय्यूब से साबिर बना करो
माँ बाप की खुशी में है रब की खुशी सुनो
ऐ लोगो वालिदैन की ख़िदमत किया करो
फ़रमान है रसूल का जन्नत दिलाएगा
तुम सिद्क़ दिल से कलमए तय्यिब पढ़ा करो
जाती हैं सीधे अर्शे इलाही के रूबरू
मज़लूम की आहों से ऐ लोगो बचा करो
असहाब कन्नुजूम हैं कौले नबी है ये
अ़ज़मत न उनकी दिल से ये जाए दुआ करो
होने न देंगे दीन में हम भी कोई कमी
बू बक्र जैसा अ़ज़्म ऐ लोगो किया करो
लाए उमर ईमान और एअ़लान कर दिया
इज़हार दीने हक़ का लोगो बरमला करो
है नाज़ सख़ावत को हया उस्मान ग़नी पर
तन्क़ीद कोई उनपे न हरगिज किया करो
आक़ा हैं शहरे इल्म और हैं बाब मुर्तज़ा
हज़रत अ़ली के इल्म के मोती चुना करो
हैदर की है ये इल्तिजा ऐ मोमिनो सुनो
अपनी दुआ में याद मुझे कर लिया करो
मक्का में माफ कर दिया सबको हुज़ूर ने
दुश्मन को अपने माफ तुम भी कर दिया करो

उम्मत के कुछ अहम शहीदों की

शहादतों का बयान

इब्नि इस्हाक

यह बयान रंज व ग़म मनाने के लिए नहीं कि इस्लाम में इसकी गुंजाइश नहीं, बल्कि उन शुहदाए इस्लाम से महब्बत व तअल्लुक़ के इज़हार और अल्लाह के लिए जान की क़ुर्बानी पेश करने के जज़्बे को उभारने के लिए है। अल्लाह ने अपने ख़ास बन्दों को आज़माया तो उन को इस्तिक़ामत भी अता फ़रमाई और क़ुर्बानी के ऐसे नमूने पेश करने की तौफ़ीक़ दी कि तारीख़ उन की नज़ीरें पेश करने से आजिज़ रही।

हज़रत बिलाल का गर्म रेत पर घसीटा जाना और उस पर लिटा कर सीने पर पत्थर रखा जाना, हज़रत ख़ब्बाब का दहकते कोयलों पर लिटाया जाना, हज़रत यासिर और हज़रत सुमय्या का शहीद किया जाना, हज़रत ख़ुबेब का सूली पर चढ़ाया जाना कुफ़्फ़ार के मज़ालिम पर अल्लाह के लिये सब्र व इस्तिक़ामत के वह नमूने हैं जिनकी नज़ीर कहीं नहीं मिलती।

शहादत की लज़्ज़त, उस पर ख़ुसीसी ज़िन्दगी के एअ़ज़ाज़, अल्लाह की रज़ा फिर आख़िरत में मिलने वाले इनआ़मात पर यक़ीन व ईमान ने ईमान वालों को शहादत के लिए बे ख़ुद बना दिया था, १७ रमज़ान के ग़ज़व–ए–बद्र में १४ सहाबा शहीद हुए, ७ शव्वाल के ग़ज़व–ए–उहद में ७० सहाबा शहीद हुए। इसी लड़ाई में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ज़ख़्मी हुए, दान्त शहीद हुआ और आप के महबूब चचा हज़रत हम्ज़ा शहीद हुए और उनके नाक कान काटे गये, कलेजा निकाल कर चबाया गया.हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बहुत ज़ियादा दुख हुआ आपने अपने चचा को सय्यिदुश्शुहदा का ख़िताब दिया। इसी तरह मुख़तलिफ़ लड़ाइयों में बे शुमार ईमान वालों ने शहादत का मरतबा हासिल किया जिन का अहाता मुश्किल है यहां चन्द अहम तरीन शहीदों का जिक्र किया जाता है।

दूसरे ख़लीफ़–ए–राशिद हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० की शहादत का बयान

आप अपने आख़िरी हज्ज से वापस हुए तो वादिये महसब में अपनी चादर सर के नीचे रखे हुए लेटे हुए थे चान्द की तरफ़ जो नज़र की तो उसकी रौशनी और उसका गोला आप को अच्छा लगा। फ़रमाया देखो शुरूअ़ में यह कमज़ोर था फिर बढ़ते बढ़ते यह पूरा हुआ और अब फिर घटना शुरूअ़ होगा। यही हाल दुन्या में तमाम चीज़ों का है फिर दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह मेरी रअ़ीयत बहुत बढ़ गयी है और मैं कमज़ोर हो गया हूं। ऐ अल्लाह इससे पहले कि ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियों में मुझ से कुछ कोताहियां हों मुझे इस दुन्या से उठा ले। उसके बाद मदीना तय्यिबा पहुंच कर आप ने ख़्वाब देखा कि एक लाल चिड़िया ने आप के पेट पर तीन बार चोंच मारी। आपने यह ख़्वाब लोगों से बयान फ़रमा दिया और फ़रमाया कि अब मेरी मौत का वक़्त क़रीब है।

जिस शख़्स ने आप को शहीद किया वह मजूसी था, अबू लूलू उसका नाम था, वह सहाबिये रसूल हज़रत मुग़ीरा का ग़ुलाम था। हज़रत मुग़ीरा (रज़ि०) ने रिवाज के मुताबिक उस पर महसूल (कर) लगा रखा था जिस को वह अदा करता था। उसने एक रोज़ हज़रत उमर (रज़ि०) से शिकायत की कि मेरे मालिक ने मुझ पर महसूल ज़ियादा लगा रखा है आप उसमें कमी करा दीजिए। आप ने महसूल की मिक़्दार दर्याफ़्त की, फिर उस से पूछा कि तू क्या काम जानता है और क्या करता है? उसने बताया कि मैं चक्की बनाता हूं। आप ने फ़रमाया इस काम का जाननेवाला यहां कोई नहीं इस से तेरी आमदनी ज़ियादा होती होगी। यह महसूल तेरे काम के लिहाज़ से ज़ियादा नहीं है। फिर फ़रमाया कि एक चक्की मेरे लिए भी बना दे। चूंकि आप ने महसूल कम कराने में उसकी मदद नहीं की थी इस लिये उसको नागवारी हुई। उसने कहा बहुत अच्छा, आपके लिए ऐसी अच्छी चक्की बना दूंगा कि तमाम दुन्या में उसकी शुहरत होगी। आपने फ़रमाया कि देखो यह ग़ुलाम मुझे कत्ल की धमकी देता है। किसी ने कहा अमीरूल मोमिनीन । आप हुक्म दें तो अभी इसको गिरफ़्तार कर लिया जाए। आप ने फ़रमाया क्या जुर्म से पहले सज़ा दी जाए? बात आई गई हो गई लेकिन मालूम हुआ कि अबू लूलू

ने उसी वक़्त से एक ख़ंजर बनाकर उसे ज़हर में बुझाना शुरूअ़ कर दिया था और आपके क़त्ल का मौक़अ़ ढूंढता रहा।

एक रोज़ हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि०) बहुत सवेरे फ़ज्र की नमाज़ के लिए मस्जिद तशरीफ़ ले गये अभी नमाज़ शुरूअ़ही की थी सिर्फ़ तक्बीरे तहरीमा कहने पाए थे कि मजूसी काफ़िर अबू लूलू ने जो ज़हर में बुझाया ख़ंजर लिये मस्जिद की मेहराब में छुपा बैठा था, उसी ख़ंजर से आप के पेट में तीन गहरे ज़ख़्म लगाए। आप बेहोश हो कर गिर गये। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने आगे बढ़कर आप की जगह पर इमामत की और मुख़्तसर नमाज़ पढ़ाकर सलाम फेरा।

अबू लू लू ने चाहा कि किसी तरह मस्जिद से बाहर निकल कर भाग जाए मगर नमाज़ियों की सफ़ें मिस्ल दीवार के हाइल (रोक) थीं उसने और सहाबियों को भी ज़ख़्मी करना शुरूअ़ किया इस तरह तेरह सहाबी और ज़ख़्मी हुए उन में से सात की जानें चली गयीं। जब नमाज़ का सलाम फिरा तो अबू लूलू पकड़ लिया गया मगर उसने अपने ख़ंजर से अपने को हलाक कर लिया। इतना बड़ा वाक़िआ हुआ लेकिन किसी ने नमाज़ नहीं तोड़ी। नमाज़ के बाद हज़रत फ़ारूक़े अअ़ज़म को उठा कर लोग उनके मकान पर ले गये होश आते ही आप ने फ़ज्र की नमाज़ अदा की। पूछा मेरा क़ातिल कौन है? हज़रत इब्नि अ़ब्बास (रज़ि०) ने बताया अबू लूलू मजूसी काफ़िर, आप ने बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कही और फ़रमाया कि अल्लाह का शुक्र है कि उसने एक काफ़िर के हाथ से मुझे शहादत अ़ता फ़रमाई। दवा इलाज की कोशिश की गई मगर कोई फ़ाइदा न हुआ। आपने हज़रत सुहैब को आ़र्जी इमाम बनाकर हिदायत दी कि मेरे बाद तीन दिन के अन्दर ख़लीफ़ा का इन्तिख़ाब कर लेना फिर उम्मुल मोमिनीन के पास अपने बेटे हज़रत अ़ब्दुल्लाह कोभेज कर उनके हुज्रे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़रीब दफ़्न की इजाज़त मांगी उन्होंने बख़ुशी इजाज़त दे दी। उसके बाद नज़अ़ (प्राणान्त) की हालत शुरूअ़ हो गई। २६ ज़िल्हिज्जा बुद्ध को ज़ख्मी हुए थे पहली मुहर्रम स० २४ हि० इतवार को ६३ साल की उ़म्र में वफ़ात पाई और हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास दफ़्न हुए। अल्लाह तआ़ला आप से राज़ी हुआ और आप अपने अल्लाह से राज़ी हुए। आप की ख़िलाफ़त का ज़माना १० साल ६ माह ५ दिन रहा।

यह उस हस्ती की शहादत का बयान है जिस की जामिअ़ीयत की मिसाल पेश करने से तारीख़ क़ासिर है। हक़ यह है कि आप का हर हर रोयां अपने मुर्शिदे बरहक़ (सत्य गुरू) सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इमामुल अंबिया व रुसुल होने की शहादत सारी दुन्या के सामने अदा कर गया।

उम्मत ने इस भारी दुख का ग़म बर्दाश्त किया और कहा इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि व राजिअ़ून।

तीसरे ख़लीफ़ा—ए—राशिद हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) की शहादत का बयान

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) की शहादत के बाद पहली मुहर्रम स० २४ हि० को आप ख़लीफा बनाए गए। ६ साल तक आप का निज़ामे हुकूमत बहुत दुरुस्त रहा। आप के पास हुज़ूर सल्लाल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अंगूठी थी जो पहले हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के पास रही फिर हज़रत उ़मर (रज़ि०) के पास फिर आप के पास आई थी एक रोज़ वह अरीस नामी कुंए में गिर गई और बावजूद तलाश के न मिली उसी वक़्त से आप की हुकूमत के हालात बदलने लगे और आप पर एअ़तिराज़ात होने लगे लेकिन कोई भी एअ़तिराज़ ऐसा न था जो शरअ़ी तौर पर गिरफ़्त के लाइक़ हो। आपकी मुख़ालफ़त में अ़ब्दुल्लाह बिन सबा का भी बड़ा हाथ था मिस्र के हाकिम के ज़ुल्म की शिकायत आईं आप ने उस को सख़्त ख़त लिखा उसने अपनी इस्लाह के बजाए उल्टे शिकायत करने वालों की पिटाई कर दी उनमें से एक आदमी मर या, फिर तो सात सौ आदमी एहतिजाज में मदीना तय्यिबा आ गये और शिकायतें कीं। हज़रत उस्मान ने हाकिमे मिस्र अ़ब्दुल्लाह बिन सरह को मअ़ज़ूल (पदच्युत) करके मुहम्मद बिन अबी बक्र को वहां का वाली बनाए जाने की तहरीर दे दी। मुहम्मद बिन अबी बक्र तहरीर लेकर काफ़िले के साथ मिस्र जा रहे थे कि रास्ते में एक ऊंट सवार को मश्कूक हालत में जाते देखा उसको पकड़ा, उसके पास से एक ख़त बरामद हुआ जो हाकिमे मिस्र के नाम था, उसमें लिखा था कि "तुम बदस्तूर वाली हो मुहम्मद बिन अबी बक्र को किसी बहाने क़त्ल कर दो।" यह ऊंट सवार हज़रत उस्मान का ग़ुलाम था, ऊंट भी उन ही का था, ख़त पर मुहर हज़रत उस्मान की थी।

पूरा मजमअ़ लौट आया

सहाब–ए–किराम के सामने हज़रत उ़स्मान से सुवालात हुए उन्होंने इक्रार किया कि ग़ुलाम मेरा है, ऊंट मेरा है ख़त पर मुहर भी मेरी है लेकिन क़सम खाकर कहा कि यह ख़त मेरा नहीं है। सबने इसे तस्लीम किया और उनके मुंशी मरवान पर शक हुआ, मुज़ाहिरीन ने मरवान को तलब किया मगर हज़रत उ़स्मान को या तो यक़ीन न आया कि यह हरकत मरवान की है या अ़ज़ीज़ होने के सबब उन की ग़ैरत ने गवारा न किया और अउन्होंने मरवान को देने से इन्कार कर दिया। हो सकता है बाद में अलग कर देने का इरादा किया हो।

यहां यह बात ज़रूर समझ में नहीं आती कि मरवान की साज़िश थी तो ऊंट सवार को उस रास्ते से क्यों भेजा जिस पर वह क़ाफ़िला चल रहा था? ऐसा लगता है कि साज़िश करने वालों ने ग़ुलाम को मिला कर यह काम किया, साज़िश्यों ने ख़त लिखा ग़ुलाम को नवाज़ा उसी से मुहर लगवाई और अपने ही रास्ते से मश्कूक हैअत में गुज़रने की उसको हिदायत दी जिस की भनक न हज़रत उ़स्मान को लगी न मरवान को न मुहम्मद बिन अबी बक्र को और इसका भी इम्कान है कि यह हरकत मरवान की हो। वल्लाहु अअ़लम। हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) के घर को घेर लिया गया और उन पर पानी बन्द कर दिया गया। अन्सार ने लड़ने की इज़ाज़त मांगी आप ने फ़रमाया मैं इस को पसन्द नहीं करता कि किसी ला इलाह इल्लल्लाह, पढ़ने वाले का खून मेरे हुक्म से बहाया जाए लोगों ने कहा कि फिर आप ख़िलाफ़त से अलग हो जाएं। आप ने फ़रमाया कि रसूलल्लाह सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम ने मुझ से फ़रमाया था कि "ऐ उ़स्मान अल्लाह तुम को एक क़मीस पहनाएगा लोग उसे उतारना चाहेंगे अगर तुम ने लोगों के कहने से उतार दिया तो जन्नत की खुश्बू तुम्हें नसीब न होगी।" इस लिये मैं यह ख़िलाफ़त की क़मीस उतारना नहीं चाहता। आपकी शहादत की ख़बर मुतअ़द्दिद अहादीस में रसूल (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) पहले दे चुके थे, वह हदीसें भी हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) के सामने रही होंगी। आख़िरकार हज़रत अ़ली(रज़ि०) ने हज़राते हस्मैन को और हज़रत तलहा व ज़ुबैर और बाज़ दूसरे सहाब–ए–किराम (रज़ि०) ने अपने अपने साहिब ज़ादगान को हज़रत उस्मान (रज़ि०) के दरवाज़े पर हिफ़ाज़त के लिये बिठा दिया। एक रिवायत के मुताबिक़ ४० दिन तक घर का मुहासरा रहा इस दौरान बाज़ मुहाफ़िज़ीन ज़ख़्मी भी हुए।

जब मुहासरा (घेराव) तूल खिंचा तो बलवाइयों की क़ियादत करने वाले मुहम्मद बिन अबी बक्र ने इस डर से कि कहीं बनू हाशिम मुक़ाबले पर न आजाएं दो आदमियों को साथ लेकर पीछे की दीवार से चढ़ कर घर में उतरे, मुहम्मद बिन अबी बक्र ने हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) की दाढ़ी पकड़ ली। हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ने फ़रमाया कि "तुम्हारे वालिद अगर तुम्हारी यह हरकत देखते तो उन्हें रंज होता" यह सुनकर मुहम्मद बिन अबी बक्र पीछे हट गये मगर साथ के दोनों बद बख़्तों ने आप को ज़ब्ह कर दिया, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअ़ून। आप की अहलिया हज़रत नाइला की एक उंगली भी बचाने में कट गई। शहादत के वक़्त आप रोज़े से थे, क़ुर्आने मजीद की तिलावत कर रहे थे, ख़ून क़ुर्आने मजीद की आयतों पर टपका। हज़रत नाइला ने कोठे पर चढ़कर लोगों को वाकिअे की ख़बर दी तो लोग अन्दर गये इतने में क़ातिल भाग चुके थे। यह वाकिआ १८ ज़िल्हिज्जा स० ३५ हि० में पेश आया इस तरह आप की ख़िलाफ़त १२ दिन कम १२ साल रही। आप अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दामाद थे। आप से हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की आगे पीछे दो बेटियां मन्सूब हुई थीं, आप तीसरे ख़लीफ़–ए–राशिद थे, उन दस लोगों में से थे जिनको जन्नत की ख़ुशख़बरी मिल चुकी थी। ४० दिन तक घर घिरा रहा, पानी बन्द रहा लेकिन आप ने सिर्फ़ इस वजह से कि घर घेरने वाले भी कल्मा पढ़ने वाले थे, शहीद हो गये मगर न उन से लड़े न किसी को लड़ने की इजाज़त दी। मेरी नज़र में इस्लामी तारीख़ में ऐसी मज़्लूमियत की शहादत मौजूद नहीं है।

चौथे ख़लीफ़–ए–राशिद हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु, वजहहू की शहादत का बयान

अल्लाह के रसूल(सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया थाः ऐ अ़ली अगलों में सब से ज़ियादा शक़ी (दुष्ट) वह था जिसने स्वालिह (अ़०) की ऊंटनी के पैर काटे थे ओर पिछलों में सब से शक़ी वह है जो तुम्हारी दाढ़ी को तुम्हारे सर के ख़ून से रंगीन करेगा।

हज़रत उ़स्मान (रजि०) के आख़िर दौर में जो फ़ित्ने उठे उन में

इज़ाफ़ा ही होता चला गया, ह़ज़रत उ़स्मान(रज़ि०) की शहादत के नतीजे में जंगे जमल हुई जिसमें १३ हज़ार मुसलमान शहीद हुए।

जंगे सिफ़्फ़ीन हुई उस में नब्बे हज़ार या एक लाख मुसलमान शहीद हुए। एक तरफ़ इब्नि सबा ने ह़ज़रत अ़ली को ख़ुदा मानने वाले ग़ाली शीआ़ तय्यार किये तो दूसरी जानिब ख़ारजियों को वजूद मिला इन्हीं ख़ार्जीयों में से बदबख़्त अ़ब्दुर्रह़मान इब्नि मुल्जिम ने दामादे रसूल ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के क़त्ल का प्लान बनाया और कूफ़ा पहुंच गया।

ह़ज़रत अ़ली मुर्तज़ा (रज़ि०) ह़स्ब आ़दत फ़ज्र के वक़्त अस्सलात अस्सलात कहते हुए मस्जिद जा रहे थे, रास्तें में इब्नि मुल्जिम छुपा बैठा था आप मस्जिद के क़रीब पहुंच चुके थे कि उसने तलवार से ह़मला कर दिया जो पेशानी से दिमाग तक पहुंच गई। आप ख़ून से नहा गये दाढ़ी ख़ून से तर हो गई। ह़ज़रत ह़सन पीछे पीछे आ रहे थे उन का बयान है कि मैंने तलवार की चमक महसूस की फिर ज़मीन पर गिरते देखा और फ़ुज़्तु बिरब्बिल् कअ़बा (कसम है रब्बे कअ़बा की मैं काम्याब हो गया) कहते सुना।

इस वाक़िअ़े के बाद चारों तरफ़ से लोग दौड़ पड़े और इब्नि मुल्जिम पकड़ लिया गया। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने फ़रमाया कि अगर मैं अच्छा हो गया तो मुझे इख़्तियार होगा सज़ा दूँ या मुआ़फ़ करूं लेकिन अगर मैं अच्छा न हुआ तो इसने एक ज़र्ब (चोट) मुझ पर मारी है तुम भी इस को एक ज़र्ब मारना। यह वाक़िआ़ जुमे को पेश आया इतवार को आप का इन्तिक़ाल हो गया। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) कहां दफ़्न हुए इसमें इख़्तिलाफ है लेकिन मशहूर क़ौल यह है कि आप का मज़ारे मुबारक नजफ़ में है।

सय्यिदुश्शुहदाए करबला सय्यिदुना ह़ज़रत ह़ुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत का बयान

सय्यिदुना ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) की शहादत का बयान मैं क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सा० की किताब "शहीदे करबला" से ले रहा हूँ जिस के मुक़द्दमें में ह़ज़रत मौलाना अ़लीमियां रह० ने फ़रमायाः फ़ाज़िले गिरामी जनाब मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी ने इस अहम व नाज़ुक मोज़ूअ़ पर क़लम उठाया और इ़ल्मी व तारीख़ी, तहक़ीक़ी व तस्नीफ़ी, दीनी व उसूली हर लिह़ाज़ से इसका ह़क़ अदा कर दिया।"

आगे फ़रमाते हैः

"किताब के मबाह़िस में उन्होंने उम्मत के मत्तफ़िक़ा ख़यालात व रूजहानात की रिआ़यत रखी है और ह़दीस व तारीख़ के ज़रूरी व मुस्तनद ह़वालों पर एअ़तिमाद किया है इस तरह़ "शहीदे करबला" को दीनी व इल्मी इस्तिनाद ह़ासिल हो गया है"

अब "शहीदे करबला"से वाकिअ–ए–करबला का ह़ाल मुख़्तसरन पढ़िये। ह़ज़रत अमीर मुआ़वियः रज़ि० ने अपने आख़िर ज़माने में इस ख़ौफ़ से कि कहीं उन के बाद उम्मत में फिर न झगड़े खड़े हो जाएं अपने बेटे यज़ीद को अपना जानशीन मुकर्रर कर दिया। लेकिन जो लोग जानते थे कि यज़ीद लहव लअ़िब (आमोद प्रमोद) का शौकीन है और सैर व शिकार उस का मश्ग़ला (कार्य) है उन्हों ने इस पर नागवारी का इज़्हार किया। स० ५६ हि० ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि०) ने ह़ज्ज या उ़म्रे का सफ़र किया और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और ह़ज़रत ह़ुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम जैसे सरबराहान को यज़ीद की बैअ़त पर आमादा कर लिया। (पृ०८६) लेकिन ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र राज़ी न हुए।

जब ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि०) का वक़्त आख़िर आया तो बेटे को तमाम लोगों के साथ अच्छे बरताव की वसीयत की उस वसीयत मे यह भी था कि "ह़ुसैन बिन अ़ली सादा मिज़ाज हैं। इराक़ वाले उन को तुम से भिड़ा कर रहेंगे अगर वह तुम्हारे मुक़ाबले पर आएं और तुम कामयाब हो तो दर गुज़र से काम लेना कि वह क़रीबी अ़ज़ीज़ हैं उनका हम पर बड़ा ह़क़ है और वह रसूलल्लाह सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम के जिगर गोशा हैं। यह वसीयत "अल्कामिल" से ली गई है इस का आख़िरी पैरा जिसे हमने नक़्ल नहीं किया इस वसीयत को मश्कूक करता है। बहरहाल यह वसीयत लिखवा कर स० ६० हिज्री में हजरत मुआ़विया (रजि) ने इन्तिक़ाल फ़रमाया उस वक़्त उनकी उम्र ७५ या ७८ वर्ष की थी और अब यज़ीद तख़्त पर बैठा और बैअ़त लेना शुरूअ़ की ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़माम जो यज़ीद की वली अ़हदी पर राज़ी न थे उनका स० ५६ ही में इन्तिक़ाल हो चुका था। वालीये मदीना वलीद बिन उ़त्बा ने यज़ीद के ह़ुक्म से अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और ह़ज़रत ह़ुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से यजीद के लिये बैअ़त तलब की, दोनों ह़ज़रात ने ह़ीला

कर दिया और रात में मक्का मुकर्रमा चले गये। इस में शक नहीं कि इमाम आ़ली मकाम वहां सुकून से रहते लेकिन कूफ़ियों ने कई सौ खुतूत लिखकर ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) को कूफ़ा आने की दअ़वत दी उन खुतूत का मज़्मून कुछ इस तरह़ का था:–

अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसने आप के ज़ालिम व जाबिर और ग़ासिब दुशमन को हलाक किया। अब सूरते ह़ाल यह है कि हम बिगैर इमाम के हैं। आप तशरीफ़ लायें ताकि आप के ज़रीअ़े हम ह़क़ पर जमअ़ हो जाएं। नुअ़्मान बिन बशीर क़स्रे इमारः (राजभवन) में बैठा हुआ है हम उस के पीछे न जुमुअ़ः की नमाज़ पढ़ते हैं न ई़द की नमाज़ ; जैसे ही हम को आप की आमद की इत्तिलाअ़ मिलेगी हम उस को शाम की हूदूद में ढकेल देंगे।"

इन ख़ुतूत के अ़लावा कूफ़ा के बाज़ बड़े लोगों ने ख़ुद ह़ाज़िर होकर ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) से कूफ़ा चलने की दर्ख़्वास्त की।

ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) कूफ़ियों की दा़वत से मुतअस्सिर (प्रभावित) हो गये लेकिन रवानगी से पहले कूफ़े के ह़ालात मअ़्लूम करने के लिए अपने अ़ज़ीज़, चचा ज़ाद भाई, मुस्लिम बिन अ़क़ील को कूफ़ा भेजा। वह दो रहबरों के साथ कूफ़ा रवाना हुए दोनों रास्ता भटक कर हलाक हो गये, ह़ज़रत मुस्लिम कूफ़ा पहुंचे तो बड़ा इस्तिक़्बाल (स्वागत) हुआ। लोग बैअ़त के लिये टूट पड़े यहां तक कि आप ने ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) को लिखा:– "अट्ठारह हज़ार कूफ़ियों ने मेरे हाथ पर आप के लिए बैअ़त कर ली है लिहाज़ा आप बिला तवक़्क़ुफ़ तशरीफ ले आएं।" यह ख़त पाकर ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) कूफ़ा जाने की तैयारियां करने लगे।

उधर कूफ़े के ह़ालात बदल गये यज़ीद को जब मुस्लिम बिन अ़क़ील का ह़ाल मालूम हुआ तो उसने नुअ़मान बिन बशीर की जगह पर सख़्तगीर इब्नि ज़ियाद को कूफ़ा का वाली बना दिया, उसकी सख़्ती से कूफ़ी पलट गये और ह़ज़रत मुस्लिम का साथ छोड़ दिया यहां तक कि ह़ज़रत मुस्लिम मअ़ अपने मीज़बान हानी के शहीद कर दिये गये। (यहां यह बात याद रहे कि ह़ज़रत मुस्लिम के साथ कूफ़ा उनके दो बेटे नहीं गये थे जैसा कि बाज़ लोग बयान करने लगते हैं।)

ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) कूफ़ियों की बेवफाई और ह़ज़रत मुस्लिम की शहादत से बे ख़बर कूफ़ा जाने को तैयार हो चुके हैं। मक्के में यह खबर गर्म हुई तो हमदर्दों ने रोकने की कोशिश की।

उ़मर बिन अ़ब्दुर्रह़मान ह़ारिस, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०), ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०), अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र, अ़ब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ सब ने बड़ी लजाजत से रोका और क़त्ल किये जाने का अन्देशा (आशंका) ज़ाहिर किया। मगर होना तो वही था जो क़ुदरत को मंज़ूर था। आप ने भी लोगों को यही जवाब दिया कि: जो अल्लाह तआ़ला ने तक़्दीर में लिख दिया है वही होगा।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्नि अ़ब्बास (रज़ि०) का यह मशवरा भी क़बूल न किया कि औ़रतों और बच्चों को साथ न ले जाइयें। आप औ़रतों बच्चों और कुछ घर वालों के साथ ऐ़न तर्विय: के रोज यानी ८ ज़िल्हिज्जा को रवाना हो गये। रास्तें में ह़ज़रत मुस्लिम की शहादत की ख़बर मिली आपने इन्ना लिल्लाह पढ़ी। बाज़ रफ़ीक़ों ने कहा: " हम आप को ख़ुदा की क़सम देते है आप लौट चलें अपनी और अपने घरवालों की जान न गंवाएं, कूफ़ा में आप का कोई मददगार नहीं है" मुस्लिम बिन अ़क़ील के घर वाले इस पर राज़ी न हुए, बस तक़्दीर आगे ले चली यह भी न हो सका कि औ़रतों और बच्चों ही को मक्का मुकर्रमा में कहीं मह़फ़ूज़ कर दिया जाता।

अल्बत्ता जो ज़ायद लोग इज़हारें अ़क़ीदत में साथ लग गये थे वापस हो गये।

उधर यज़ीद ने ह़ुर बिन यज़ीद तमीमी की सरकर्दगी में एक फ़ौजी दस्ता ह़ज़रत हुसैन की तलाश में भेज दिया था "ज़ी ह़सम' के क़रीब उसने ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) का रास्ता रोक दिया। ह़ज़रत ने फरमाया: "मैं तो तुम लोगों के बुलावे पर यहां आया हूँ अगर तुम्हें मेरा आना ना गवार हो तो मैं लौट जाऊँ।" और आप ने अपने साथियों को लौटने का ह़ुक्म दे दिया मगर ह़ुर ने लौटने न दिया और कहा कि ह़िजाज़ और इराक़ के बीच के रास्ते पर चलिये मैं भी साथ चलूंगा यहां तक कि मुझे ऊपर से कोई हिदायत मिले चुनांचि दोनों जमाअ़तें मुतअ़य्यना रूख़ पर चलती रहीं यहां तक कि करबला पहुंचीं और अब इब्नि ज़ियाद के हुक्म से ह़ुर ने आगे बढ़ने से रोक दिया वहीं ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) ख़ेमः ज़न हो गये। यह पहली मुह़र्रम का वाक़िआ़ है। २ मुहर्रम को इब्नि ज़ियाद ने उमर बिन सअ़द को ह़ज़रत के मुक़ाबले पर चार हज़ार कूफ़ियों के साथ भेज दिया बाहम बात चीत शुरूअ़ हुई ह़ज़रत हुसैन लौटने

को तय्यार थे लेकिन इब्नि ज़ियाद का हुक्म था कि यज़ीद के लिये बैअ़त करें। ह़ज़रत ने जवाब दिया इस अ़मल पर मौत को तरजीह़ दूंगा।

काश कि ह़ज़रत अहले मक्का का दरख़्वास्त क़ुबूल करके कूफ़े का इरादा न करते या मुस्लिम की शहादत की ख़बर पर लौट जाते मगर तक़्दीर से किसको चारा है?

७ मुह़र्रम को पानी बन्द कर दिया गया, सुल्ह़ की कोशिशें ना काम रहीं ह़ज़रत ने तीन तजवीजें रखीं। (१) या तो मुझे मक्का लौट जाने दो २. या यज़ीद से बराह रास्त अपना मुआ़मला तै कर लेने दो। ३. या मुझे किसी इस्लामी सरह़द पर चले जाने दो। इन मुतालबात में से कोई मतालबा पूरा होने वाला था कि शिम्र मलऊ़न ने उसकी मुख़ालफ़त की, और शैतान इब्नि ज़ियाद ने शिम्र को ख़त के साथ उमर इब्नि सअ़द के पास भेजा, जिस का ख़ुलासा यह था: "अगर ह़ुसैन बिला शर्त मेरी इताअ़त क़बूल करें तो उन्हें ज़िन्दा मेरे पास भेज दो इन्कार करें तो उन को क़त्ल कर के उन को घोड़ो से रौन्द दो अगर यह तुम्हें मंजूर नहीं तो फ़ौज शिम्र के ह़वाले कर दो और ख़ुद मअ़ज़ूल(पदच्युत) हो जाओ।"

यह ख़त पाकर उमर ने अपने को मजबूर पाया, ६ मुह़र्रम की शाम में लश्कर को लड़ाई की तैयारी का ह़ुक्म दे दिया। ह़ज़रत ने उमर से एक रात की मुहलत मांगी जो मिल गई। यह रात रुफ़्क़ा को नसीह़त और अपने रब से राज़ व नियाज़, तिलावत व नमाज़, तस्बीह़ व तहलील और दुआ़ व इस्तिग़फ़ार में गुज़री।

१० मुह़र्रम की सुब्ह़ को ७२ अन्फ़ासे क़ुद्सी चार ह़ज़ार लश्कर के सामने आ खड़े हुए, ह़ज़रत ने इत्मामे ह़ुज्जत के तौर पर एक मुअस्सिर तक़रीर की जिस के नतीजे में ह़ुर ताइब होकर ह़ज़रत की तरफ़ आ गया। फिर पहले मुबारज़त रही उसके बाद आ म लड़ाई शुरूअ़ हो गई। ह़ज़रत के रूफ़्क़ा बड़ी बहादुरी से लड़े लेकिन तक़्दीर को लब्बैक कहते हुए यके बाद दीगरे शहीद होते गये आख़िर में ह़ज़रत की बारी आई। आप ने भी बेमिसाल दादे शजाअ़त दी आख़िर निढाल होकर बैठ गये। पानी का प्याला निकाला पीना ही चाहते थे कि इब्नि नमीर के तीर ने ह़लक़ काट दी, ज़रआ़ ने तीर मारा, सनान ने नेज़ा मारा, शिब्ल ने सर काटा इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअ़ून, ख़ुदा करे इन सब का ठिकाना जहन्नम हो। इसके बाद यह बद बख़्त ख़ेमे की जानिब बढ़े जहां औ़रतें और बीमार ज़ैनुल आ़बिदीन थे लेकिन अल्लाह ने उन सब को मह़फ़ूज़ रखा।

उस के बाद पूरा क़ाफ़िला कूफ़ा ले जाया गया जहां बद बख़्त इब्नि ज़ियाद की बेह़ूदगियां ज़ाहिर हूई अल्लाह उससे बदला लेगा, फिर इस क़ाफ़िले को दमिश्क यज़ीद के दरबार में पहुंचाया गया, यज़ीद ने रंज का इज़हार किया और क़ाफ़िले को एअ़ज़ाज़ के साथ कुछ दिनों अपने मह़ल में ठहराया और बड़ी ख़ातिर व मुदारात की फिर पूरे एअ़ज़ाज़ व एह़तिराम के साथ मदीना तय्यिबा भिजवा दिया चलते वक़्त ह़ज़रत ज़ैनुल आ़बिदीन से कहा:" जो कुछ ख़ुदा को मंजूर था वह हुआ अगर मलऊ़न इब्नि ज़ियाद की जगह मैं होता तो यह न होता, ह़ुसैन जो तजवीज़ रखते मैं उसे मंजूर कर लेता और उन की जान को हर क़ीमत पर बचा लेता। देखो मुझ से ख़त व किताबत करते रहना और तुम्हें जो ज़रूरम हो मुझे उससे इत्तिलाअ़ देना।"

बेशक अल्लाह को जो मंजूर था वह हुआ लेकिन यज़ीद इतना कह कर बच नहीं सकता उस की पेशी उस क़ादिरे मुत्लक़ के सामने होना है जो दिलों के भेदों से वाक़िफ़ है। अल्लाह तआ़ला इन तमाम शुहदा को उम्मत की जानिब से अच्छी जज़ा दे और उम्मत को उन की तरह़ सर फ़रोशी का जज़्बा अ़ता फ़रमाए। आमीन

स्य्यिदुना ह़ज़रत ह़ुसैन के कुछ क़लिमाते तय्यिबात

१. जल्दबाज़ी नादानी है।
२. सिल–ए–रह़िमी निअ़मत है।
३. सच्चाई इ़ज़्ज़त है।
४. ऐसा काम जो तुम ने नहीं किया उसको अपना किया मत बताओ।
५. जो अपने भाई की दुन्यावी मुसीबत में काम आता है तो अल्लाह उसकी आख़िरत की मुसीबत दूर करता है।
६. सब से अच्छा मुआ़फी देने वाला वह है जो बदला लेने की ताक़त रखता हो, वह बदला न ले मुआ़फ कर दे।
७. जो सख़ावत करता है सरदार बनता है जो कंजूसी करता है ज़लील होता है।
८. सबसे अच्छा सिल–ए–रह़िमी करने वाला वह है जो ऐसे के साथ सिल–ए–रह़िमी करे जो उसके साथ सिल–ए–रह़िमी ना करे।
सिल–ए–रह़िमी का मतलब है रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव करना।
९. ह़ाजतमन्द ने सुवाल करके अपनी आब्रू का ख़याल न रखा तो तुम उसकी ह़ाजत पूरी करके अपनी आब्रू क़ाइम रखो।

अत्याचार और उन पर पछतावा

मुहम्मदुल हसनी

और हमने उनपर कोई अत्याचार और जुल्म नहीं किया लेकिन वह स्वयं अपनी जानों पर जुल्म करते हैं।(४२:३०)

ऊपर की आयत में मनुष्य के जीवन की एक बड़ी सत्यता की ओर ध्यान आकर्षित कराया गया है। अधिकतर ऐसा होता है कि मनुष्य कोई ग़लती करता है और उसको उसका ख़याल भी नहीं होता और यदि होता भी है तो उसकी संगीनी का एहसास नहीं होता जब तक उसकी कड़वाहट उसके सामने नहीं आती और जब उसको ज़िल्लत, असफलता, मानसिक उथल पुथल तथा मानसिक बेचैनी होती है या भिन्न–भिन्न घटनाओं का शिकार होता है तब वह कहता है कि भगवान ने उसपर बड़ा अत्याचार किया और उसको जंजाल में डाल दिया। हालांकि वह मुर्ख नहीं जानता कि सारी परेशानी और कष्ट व मानसिक उथल पुथल स्वयं की तरफ से है।

कुरआन एक दूसरे स्थान पर कहता है कि...

(तुमको जो कष्ट पहुँचा वह तुम्हारे हाथों लाया हुआ कष्ट है अल्लाह तो बहुत से गुनाहों को क्षमा ही कर देता है।)(४२:३०) यानी तुम्हारे बुरे कामों का बदला यहाँ पूरा नहीं होता। यह तो सावधानी बरतने के लिए कुछ कड़वे नतीजे तुम्हारे सामने आते है। उसका शेष बड़ा भाग तो वह क्षमा कर देता है। इस आयत पर जितना सोच विचार करेंगे मनुष्य को अपनी वास्तविकता स्पष्ट होती जायेगी और भगवान की कृपा, अन्नदाता होने और क्षमा करने का जगह–जगह अवलोकन (मुशाहिदा) होगा। अल्लाह ने जिन बातों से रोका और मना किया है यदि कोई व्यक्ति उससे नहीं बचता है तो फिर वह उन कष्टों और बुरे नतीजों से परेशान होता है और धन, दौलत, अधिकार, सत्ता होते हुए भी उसको असफलता और नाकामियों का मुंह देखना पड़ता है। तो उसको भली प्रकार समझ लेना चाहिये कि यह सब उस अन्याय का फल है जो उसने स्वयं किया है। यदि वह उसमें मगन रहने के कारण उसे इस अत्याचार को जुल्म नहीं जान पड़ता लेकिन हराम व हलाल व शरई सीमा की जो हद अल्लाह ने हमारे हाथ में दी है उसकी रोशनी (प्रकाश) में वह न केवल अपने कर्मों को बल्कि अपनी सोंच और भावनाओं व जज़बात को भली प्रकार नाप और तौल सकता है।

मनुष्य अपने को खूब समझता और जानता है भले ही वह उसके हज़ार बहाने करे।

दुआए मग्फ़िरत की दरख्वास्त

सच्चा राही के एक एजेंट आरिफ़ अली अंसारी की बहन ५ नवम्बर को अल्लाह को प्यारी हो गईं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन सच्चा राही पढ़ने वालों से उन के लिये दुआए मग्फ़िरत की दरख्वास्त है। इदारा उन के ग़म में शरीक है। अल्लाह तआला मर्हूमा की मग्फ़िरत और मुतअल्लिक़ीन को सब्र अता फरमाएं।

(पृष्ठ ४० का शेष)

पहचानने को कहा लेकिन कोई इस धुआं उगलने वाले पौधे के बारे में कुछ नहीं बता सका। यह पौधा अन्य पौधों की तरह छतरी के आकार का नहीं है बल्कि यह एक सीधी डंडी की तरह का पौधा है और इसकी छोटी–छोटी जड़ें दीवार पर लगी सीमेंट से सटी हुई हैं। लियोनिंग विश्वविद्यालय के वनस्पतिशास्त्रियों के मुताबिक उन्होंने आवाज से धुआं उगलने वाले किसी पौधे के बारे में पहले कभी नहीं सुना है।

डाल्फिनों ने बचायी चार जानें

समझदारी केलिए चर्चित डालफिनों के एक समूह ने चार लोगों को एक शार्क का भोजन बनने से बचाकर दयालुता की नायाब मिसाल पेश की है। यह घटना ३० अक्टूबर को देखी गयी जबकि जीवन रक्षक का काम करने वाला रोब हौस हान्गेरी को खुद जीवन के लाले पड गये।

वह हानगेरी कस्बे में अपनी १५ वर्षीय पुत्री नाइसी और उसकी दो सहेलियों के साथ तैराकी के लिए गया तो वहां उसने करीब से मौत को देखा जो डालफिनों की वजह से टल गयी। हौस ने बताया कि डालफिनों ने हम चारों को लगभग घकेलते हुए एक जुट कर दिया और हमारे चारों ओर घेरा बना लिया। जब उन्होंने इस घेरे से बाहर निकलने की कोशिश की तो दो बड़ी डालफिनों ने उन्हें धकेलते हुए बाहर नहीं आने दिया। तभी हौस ने लगभग तीन मीटर लंबी शार्क को अपनी ओर बढ़ते देखा लेकिन घेरा बनाए मौजूद डालफिनों ने शार्क को उनके पास तक नहीं पहुंचने दिया।

दुन्या की मशहूर गाय जरसी

और उसकी हक़ीक़त

इन्टर नेट से

जरसी का जीवन काल ६०० साल पुराना है, इसकी जन्म भूमि जरसी द्वीप है जो फ्राँस से क़रीब, ब्रिटिश, साम्राज्य का छोटा सा टापू है, शायद इसी वजह से इसका नाम जरसी पड़ गया, और इसकी गणना प्राचीन डेरी की गायों में की जाती है।

इंग्लैण्ड के लोग १७७१ ई० ही में गाय के इस वंश से परिचित हो गये थे, उसके दूध और मक्खन की वजह से उसे बहुत महत्वता देते थे। जरसी गाय में यह क्षमता होती है कि कैसे ही भूगोलिक स्थित और आब–ब–हवा (वातावरण) हो, यह अपने को उसमें ढाल लेती है, यही कारण है कि उसके बड़े–बड़े झुन्ड डन्मार्क से लेकर दक्षिणी अमरीका तक और दक्षिणी अफ़रीका से लेकर जापान तक पाए जाते है यह गायें अच्छी घास चरने वाली होती है, और दूसरी बड़ी जाति वाली गायों की उपेक्षा यह अधिक गर्मी सह लेती है, आमतौर पर इनका वज़न चार सौ किलो होता है, दूसरी भारी वज़नी गायों के मुक़ाबले में ज़ियादह दूध देती है।

जहां तक डेरी का तअल्लुक़ है मौजूदह जरसी गाय का कोई जवाब नहीं है, अमरीका में इस नसल की बढ़ौतरी करने वाले पहले दो खास किस्मों का ज़िक्र करते थे, एक किस्म जरसी टापू की दूसरी अमरीका की, लेकिन अब आमतौर पर ऐसा कोई फ़र्क़ नहीं किया जाता, यहां यह बात याद रखनी चाहिये कि जरसी शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थ मे है, इसका उद्देश्य जानवर का साधारण साइज़ और उसकी विशेषता है, न केवल डेरी के अर्थ में, टापू की जरसी गाय अपनी सुन्दरता और विशेषता में बहुत आगे होती है जो मुकाबले (प्रतियोगिता) के मैदान में विजय हासिल करने के लिये ज़रूरी ख़ियाल की जाती है, अपनी उत्तमता, सुन्दरता की बदौलत जरसी गायों ने अमरीका के कितने नुमाइशी प्रर्दशनों में बड़े–बड़े पुरस्कार हासिल किये–अमरीकी जरसी अपनी खूबसूरती से जियादह अपने दूध की पैदावार के लिये जानी पहचानी जाती है। देखने मे यह क़िस्म बड़ी और भद्दी होती है, दूध और मक्खन की पैदावार के लिये इनकी नस्ल बढ़ाई जाती है, कुछ लोग इन्हें किसानों की जरसी, के नाम से पुकारते है, दूध की पैदावार पर ज़ियादह ज़ोर और मक्खन की पैदावार पर कम ज़ोर दिया गया तो विला शुबहा (निःसन्देह) वह बड़े साइज़ की जरसी गायों की शुहरत होगी।

जरसी गाय की विशेषताएं:–

इस नस्ल की गायों के सर और कन्धें आमतौर पर बड़े अच्छे होते हैं, सर से दुम तक समानता होती है पेट और थन भारी होते हैं एक माध्यमिक जरसी गाय से ज़ियादा डेरी का कोई भी जानवर आंख को नहीं भाता, अगरचि दूसरी गायों के मुकाबिलें में जरसी गाय बहुत जल्द घबरा जाती है लेकिन यह आमतौर से फ़रमाबरदार (आज्ञाकारी) होती हैं और उनकी देखभाल आसानी से की जा सकती है, आमतौर पर कम से कम उनका वज़न ३६० किलो और जियादा से ज़ियादा वजन ५५० किलो होता है।

लेकिन माध्यमिक साइज़ की गायें जियादा पसन्द की जाती हैं, जरसी बैल अगरचि दूसरी नस्ल के बैलों के मुकाबले में छोटा होता है लेकिन उसके जिस्म से मर्दानगी टपकती है, उन बैलों के ऊपर के हिस्से, कन्धें और पुटठे बहुत मजबूत होते है लेकिन मादह के मुकाबले में नर इतने अच्छे नहीं होते। वहीं तमाम विशेंषताएं जो जरसी गायों में पसन्द की जाती है वही बैलों में पसन्द की जाती हैं। जरसी बैलों का वजन ५५० से ८०० कीलो तक होता है, लेकिन मादह की तरह नर में भी औसत (मध्य) वज़न को पसन्द किया जाता है, जरसी बैलों में आज्ञा पालन की स्पिरिट बहुत कम होती है, किसी भी जरसी बैल पर भरोसा करना विशेष कर जब उसकी आयु(उम्र) १८ माह से बढ़ चुकी हो, बड़ी बेवकूफी होगी।

जरसी गायें और बैल विभिन्न रंगों के होते है, कुछ हल्के भूरे होते है, कुछ गहरे भूरे होते है जैसे चूहे या हिरन के बच्चे का रंग होता है, कुछ सियाही मायल भूरे होते है जो देखने में लगभग काले नज़र मे आते हैं, आमतौर से नर और मादह दोनों के पुटठों या दुम के ऊपरी हिस्सों और

(शेष पृ. ३२ पर)

जोड़े का दर्द या गठिया

इन्सान को तरह तरह की बीमारियां घेर लेती है, मौजूदा ज़माने में कुछ बीमारियां ऐसी लगती हैं, जो ग़ैरफ़ितरी (आप्रकृतिक) ढंग से जिन्दगी गुज़रने के नतीजे में होती है, लेकिन कुछ बीमारियां पुराने ज़माने से इन्सान को परेशान कर रही हैं, उन में से जोड़ों का दर्द या गठिया है, यह बीमारी आसानी से नहीं जाती, मरीज बहुत दिनों तक इसमें परेशान रहता है, इसका इलाज बहुत दुशवार होता है, दर्द को खत्म करने के लिये बाज़ वक्त इन्सान ऐसी दवायें इस्तेमाल करता है, जिसके इस्तेमाल से दूसरे नए मर्ज उभर जाते हैं– इसका मतलब यह नहीं कि आदमी इलाज न कराए और मायूस हो जाए, दुन्या के पैदा करने वाले अल्लाह तआला ने हर मर्ज के साथ उसका इलाज का भी इन्तिजाम इसी दुन्या में किया है, यकीन के साथ कहा जा सकता है कि तिब्ब यूनानी मे इसका मुकम्मल (पूर्ण रूप से) इलाज अलहमदुलिल्लाह मौजूद है, शर्त यह है कि आप किसी मुनासिब जगह (उचित स्थान) पर इलाज कराएं, और जमकर मुस्तकिल इलाज करायें। यह मर्ज विभिन्न रूपों में प्रकट होता है, कभी एक जोड़ प्रभावित होता है कभी शरीर के तमाम जोड़ प्रभावित होते हैं और कभी हृदय भी प्रभावित हो जाता है, जब जोड़ों में दर्द के साथ हृदय भी प्रभावित हो जाए तो तिब्ब की परिभाषा में इस हालत को "सदारिया" (Rhenmatism) कहते हैं, उस समय दर्द बारी बारी (क्रमतापूवर्क) जोड़ों में हुवा करता है और बुख़ार भी आ जाता है।

जब केवल छोटे–छोटे जोड़ ही प्रभावित हों जैसे पांव का अंगूठा या टखना आदि तो इसको "नक़रस"(Gout) कहते हैं– और जब विशेष रूप से बड़े जोड़ जैसे घुटना और कुहनी आदि प्रभावित हो तो उसे आमतौर पर गठिया कहते हैं, मर्ज़ की शिद्दत (तीव्रता) की हालत में कभी शदीद तकलीफ और सूजन का सामना होता है तो कभी जोड़ सख़्त होकर मुड़ जाया करते हैं, ऐसे बहुत से मरीज़ देखे जा सकते है जो जोड़ों के मुड़ जाने के सबब ठीक से खड़े होने पर ताकत नहीं रखते और कुछ लोग अपनी उंगलिया सीधी नहीं कर पाते, एक ख़ास बात यह कि बच्चों और नौजवानों की संख्या इस रोग में अधिक पाई गई, लेकिन जम कर इलाज कराने में अल्लाह के फ़ज़्ल–व–करम से उन्हें शिफ़ा हासिल हो गई।

इस मर्ज़ के शिकार आमतौर पर निम्न प्रकार के लोग होते हैं:

ग़रीब लोग जिनको पेट भर गिज़ा नहीं मिलती।

लम्बी बीमारी से उठने वाले लोग,

१५ से २० साल की उम्र(आयु) के बच्चे और बूढ़े लोग

लेकिन जिन लोगों को सिर्फ छोटे जोड़ों में दर्द (नक़रस) की शिकायत रहती है आमतौर पर वह अच्छे खाते पीते लोग होते हैं इसी वजह से प्राचीन तिब्बी पुस्तकों में उसे अमीरों का मर्ज़ बताया गया है अस्ली बात यह है कि ऐसे लोगों के खून में बोरिक एसिड की मात्रा बढ़ी हुई मिला करती है, जोड़ों में दर्द होने के अस्बाब (कारण) होते हैं जैसे बहुत ज़ियादा कमज़ोरी, हज्म (पचन) की खराबी, ठन्डी हवा में बहुत ज़ियादा काम करना, बारिश में भीगना, गोश्त और बादी गिज़ाओं का ज़ियादा इस्तेमाल करना, चोट लगना, पेशाब का कम होना, आतश्क(गरमी रोग) और सूज़ाक (मूत्रेदिय का एक रोग) आदि।

कहावत मशहूर है कि परहेज़ (संयम) इलाज से बेहतर है चुनांचि इस मर्ज़ से बचने के उपाय हमेशा करने चाहियें ताकि जो लोग अभी तक इससे सुरक्षित हैं वह आइन्दा (भविष्य में) सुरक्षित रह सकें और जो इस मर्ज़ के शिकार हो चुके हैं उनका मर्ज़ आगे न बढ़े।

कुछ उपाय निम्नलिखित हैं :

१. ठण्डे मौसम में बहुत जियादा घूमने फिरने से बचें।

२. बादी गिज़ाओं का जियादा इस्तेमाल न करें।

३. गोश्त और मुरग़न (तेल वाले) खाने कम से कम खायें।

४. शरीर की आवश्यकतानुसार उचित (मुनासिब) गिज़ा इस्तेमाल करें, अर्थात रोज़ के खाने में परिवर्तन करते रहें ताकि शरीर को समस्त पदार्थ के आवश्यक अंश मिलते रहें, जैसे सादा खाना खाने वाले लोग कभी कभी मुर्ग

की यख़नी या बकरी के पाए आदि इस्तेमाल करें और हमेशा मुरग़न गिज़ाएं (तेल वाले खाने) खाने वाले लोग हफ़्ते में कम से कम तीन चार बार हरी सब्ज़ियों पर गुजारा (निर्वाह) करें।

५. हज्म को ठीक रखने की कोशिश करें क्योंकि पेट की ख़राबियाँ तमाम ख़राबियों की जड़ है।

६. इन तमाम कोशिशों और उपायों के साथ–साथ पानी का ज़ियादा से ज़ियादा प्रयोग किया जाए, यह शरीर के अन्दर के रद्दी मवाद (उपकरण) को पेशाब के रास्ते निकालने में मददगार (सहायक) होता है। और इस तरह आप को बहुत सी संभव और असंभव बीमारियों से बचाता है।

७. थोड़े–थोड़े समय से अपना मेडीकल टेस्ट कराते रहिये ताकि मुमकिना अमराज़ (संभव बीमारियों) से बचा जा सके।

किसी मर्ज़ का इलाज लिखना एक दिक़्क़त तलब मुश्किल काम है। क्योंकि मर्ज़ के वजूहात (कारण) मुखतलिफ (विभिन्न) होते हैं इसलिए इलाज भी मुखतलिफ़ (विभिन्न) हो जाता है। हकीमों का एक मशहूर जुमला (प्रसिद्ध वाक्य) है कि इलाज मर्ज़ का नहीं बल्कि मरीज़ का किया जाता है, चुनांचि इलाज के लिये हर हाल में किसी मुस्तनद (प्रमाणित) हक़ीम की निगरानी (निरक्षण) बहुत ज़रूरी है।

निम्नलिखित कुछ दवाएं इस मर्ज़ में काफ़ी लाभदायक सिद्ध होती है:

हब्बे अस्गन्द, हब्बे सौरनजान हब्बे अज़राकी, सुफ़ूफ सौरनजान हलवा घी कुंवार, मअ़जून सौरनजान मअ़जून अश्बा, कुर्स मफासिल कुर्स कुलया, हब्बुल क़लस, शरबते बुजूरी मोतदिल, शरबते अनन्नास औजाई मआजून अज़राकी, और हब्बे गुलआख वग़ैरह, इन तमाम दवाओं का किसी मुस्तनद तबीब (प्रमाणित हकीम) के निर्देशानुसार ही प्रयोग करें वरना नुकसानात का सामना करना पड़ सकता है।

(सहरोजा दआवत देहली)

(पृष्ठ ३० का शेष)

सर का रंग गहरा होता है लेकिन ज़ियादातर (अधिकतर) नस्ल की बढ़ौतरी करने वाले बीच का रंग पसन्द करते हैं। न बहुत हल्का और न बहुत गहरा और उन्हें इस बात का भी एहसास है कि रंग से कहीं जियादह अहमियत (महत्तवता) उन पशुओं की पैदावारी सलाहियत(क्षमता) को हासिल है।

जरसी के बारे में यह भी कहा जाता है कि यह गाय और ख़िनज़ीर (सुअर) के किरासिंग का नतीजह है इस बात का वास्तविकता से दूर का भी संबंध नहीं, यह ख़याल है–केवल एक ख़याल–

(हिन्दी रूपान्तर, गुफ़रान नदवी)

और अल्लाह मुसलमानों की तसल्ली के लिये इम्रान की बेटी मर्यम का हाल बयान करता है जिन्होंने अपनी नामूस को महफ़ूज़ रखा। सो हमने उनमें अपनी रूह फूंक दी और अन्होंने अपने रब के सन्देशों की और उस की किताबों की तस्दीक़ की और वह इताअ़त वालों में से थीं।

(अत्तहरीम आयत१२)

हज़रते मर्यम का ज़िक्र

ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) इस किताब में मर्यम का ज़िक्र भी कीजिये। जब वह अपने घर वालों से अलग एक ऐसे मकान में जो पूरब तरफ़ था (ग़ुस्ल के लिये) गईं। फिर उन लोगों के सामने उन्होंने पर्दा डाल लिया पस (इस हालत में) हमने उन के पास अपने फ़िरिश्ते (जिब्रील) को भेजा, और वह उन के सामने एक पूरा आदमी बन कर ज़ाहिर हुआ, कहने लगीं मैं तुझ से(अपने ख़ुदाए रहमान से पनाह मांगती हूँ अगर तू ख़ुदा से डरने वाला है (तो यहां से हट जा) फ़िरिश्ते ने कहा मैं आप के रब का भेजा हुआ (फ़िरिश्ता) हूं ताकि आप को एक पाक लड़का दूं। वह कहने लगीं मेरे लड़का किस तरह हो जाएगा हालांकि मुझ को किसी इन्सान ने हाथ नहीं लगाया न मैं बुरी हूं। फ़िरिश्ते ने कहा यूंही औलाद हो जाएगी आप के रब ने फ़रमाया है कि यह बात मुझ को आसान है, और इसलिये पैदा करेंगे ताकि हम इसको लोगों के लिये (कुदरत की) एक निशानी बना दें और रहमत (का सबब) बना दें।

(सूर–ए–मर्यम , आयत १६ ता २१)

मो० असलम
(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796
हाजी सफ़ीउल्लाह एण्ड सन्स ज्वैलर्स
नगीना मार्केट,
अकबरी गेट, लखनऊ
गड़बड़ झाला के सामने,
अमीनाबाद रोड, लखनऊ

रबवा से नवा क़ादियान तक

मौ० मुहम्मद खालिद नदवी ग़ाज़ीपुरी

हज़रत ईसा के लगभग १८४० साल बाद क़ादियान में पैदा होने वाले मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी ने जहां झूठी नुबूवत का दावा किया वहीं मसीहे मौऊद होने का दावा भी मौजूद है; तक़्सीमे हिन्द से पहले क़ादियानियों का मरकज़ शहर क़ादियान था जहां मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद सन् १८४० ई में पैदा हुए थे। क़ादियानियों ने इस शहर में मस्जिदे मुबारक, मस्जिदे अक़्सा और बिहिश्ती क़ब्रिस्तान भी बना रखा था। लेकिन तक़्सीमे हिन्द के बाद क़ादियानियों की ग़ालिब अक्सरियत जब पाकिस्तान मुन्तक़िल (स्थानान्तरित) हुई तो उन्हें अपने लिये एक मरकज़ बनाने की फ़िक्र हुई उस के लिये उन्होंने पंजाब नदी के किनारे चेक ढक्यां में एक बड़ी जगह हासिल की और वहां एक शहर बसाया जिस का नाम क़ादियान के बजाए रबवा रखा। रबवा क़ुर्आन मजीद में दो जगह आया है जिस के माना ऊंची जगह या टीले के हैं:

"एक बाग़ की तरह जो किसी रबवा यानी ऊंचाई पर हो और उस पर ज़ोर की बारिश पड़ी हो फिर वह दो गुने फल लाया हो।" (अलबक़र : २६५)

और बनाया हम ने मरयम के बेटे और उसकी मां को एक निशान और उनको ठिकाना दिया एक टीले (रबवा) पर जहां ठहरने की जगह थी और निथरा पानी।" (अल–मूमिनून : ५०)

इन आयतों के जरीअे यह मालूम हुआ कि रबवा वह मक़ाम है जहां अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने हज़रत ईसा (अ़०) और उन की मां मर्यम को जालिम दुश्मन से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रखने के लिए पनाह (शरण) थी, जो आप और आप की वालिदा को तकलीफ़ पहुंचाने के पीछे पड़ा था। यह हज़रत ईसा का एक मुअ़जिज़ा था। हज़रत ईसा (अ़०) की पैदाइश जिस तरह मुअ़जिज़ा थी आप की नश्व नमा (पालन पोषण) को भी अल्लाह तआ़ला ने एक मुअ़जिज़ा क़रार दिया है इस मफ़्हूम (अर्थ) में रबवा एक इस्लामी इस्तिलाह़ (परिभाषा) बन गया है और इस्लामी इस्तिलाहात (परिभाषाओं) को ग़ैर इस्लामी चीजों के लिए इस्तिअ़माल करना किसी तरह सहीह़ नहीं और जब उससे ग़लत फ़हमी (भ्रम) पैदा हो रही हो तो उस की हुरमत (निषिद्ध) और बढ़ जाती है।

तफसीरे माजिदी में लिखा है कि :

कुछ तफ़सीर लिखने वालों का ख़याल है कि यह ज़िक्र हज़रत ईसा की पैदाइश के वक़्त का है उस वक़्त हज़रत मर्यम किसी ऊंचे टीले पर थीं और नीचे चश्मा (स्रोत) बह रहा था जैसा कि सूर–ए–मर्यम में है : "तह़क़ीक़, कर दिया तेरे रब ने तेरे नीचे एक चश्मा" (सूर–ए–मर्यम : २४)

अ़ल्लामा इब्नि कसीर ने इसी को तरजीह दी है। लेकिन अक्सर मुहक़्क़िक़ीन (अनुसंधानकर्ता) की राए है कि इससे मुराद मुल्के मिस्र है और इस आयत का तअ़ल्लुक़ एक दूसरे क़िस्से से है। हज़रत मसीह़ की पैदाइश के ज़माने में मुल्क शाम का हाकिम "हीरोड" था और वह नुजूम व कहानत (ज्योतिश तथा शकुन शास्त्र) का ज़माना था।

इन्जील की रिवायत है कि उसे ज्योतिशियों से पता चला था कि इस्राईलियों का बादशाह एक घर में पैदा हो चुका है और वह घर हज़रत मर्यम के शौहर यूसुफ नज्जार का था, बादशाह ने चाहा कि उस बच्चे को पकड़ कर क़त्ल कर डाले और आइन्दा के लिए ख़तरा ही बाकी न रहे, यूसुफ इस से पहले ही गैबी इत्तिलाअ़ (सूचना) पा कर हज़रत मर्यम और ईसा को लेकर मिस्र रवाना हो गये।

खुदा वन्द के फ़िरिश्ते ने ख़्वाब में दिखाई देकर कहा कि उठ, बच्चे और उस की मां को लेकर मिस्र को भाग जा और जब तक मैं तुझ से न कहूं वहीं रहना क्यों कि "हीरोड" इस बच्चे की तलाश में है ताकि इसे क़त्ल कर दे, पस वह उठा और रात के वक़्त बच्चे और उसकी मां को लेकर मिस्र रवाना हो गया और "हीरोड" के रहने तक वहीं रहा। (मत्ती–२–१३,१४)

वाज़ेह (स्पष्ट) रहे कि यह बात मुहर्रफ (बदली गयी) इन्जील की है, मर्यम कुंवारी थीं, पाक दामन थीं, न उन की किसी से शादी हुई थी न ही वह बुरी थीं, न ही उन को किसी मर्द

ने हाथ लगाया था। हज़रत ईसा (अ०) को तो अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से बे बाप के पैदा फ़रमाया था। यह हवाला न दिया जाना चाहिए था। (अनुवादक)

"आवैनाहुमा" (हम ने उन दोनों को पनाह दी) (अलमुमिनून ५०) से यह मालूम होता है कि मौका किसी खतरे का था जिस से मर्यम और उनके बेटे को बचाया गयाः और मुफस्सिरीन (क़ुर्आन के टीका कारों) का एक गिरोह इस तरफ़ गया है कि यह तल्मीह़ मिस्र के सफ़र की जानिब है लेकिन तफ़सीर की दूसरी किताबों में दिमश्क, बैतुल मक़्दिस और रम्ला का नाम भी आया है। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) की रिवायत से यह मालूम होता है कि रबवा से मुराद रम्ला है जो फ़िलिस्तीन का मश्हूर शहर है।

ऊपर की तफ़्सीलात से यह मालूम हो गया कि "रबवा" का एक खुसूसी तअल्लुक़ हजरत ईसा (अ०) से है। ऐसे में मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के पैरोंकारों से "रबवा" नामी शहर क़ाइम कर के यह धोखा देना चाहा कि क़ुर्आन में जिस "रबवा" का जिक्र आया है वह "रबवा" यही है जब कि वह रबवा ग़ुलाम अहमद के मरने के बाद क़ाइम हुआ। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की पैदाइश क़ादियान में हुई और वहीं मर कर दफ़्न हुए, इस "रबवा" से उनका कोई तअल्लुक़ नहीं है लेकिन क़ादियान की तरह रबवा के क़ादियानियों ने मस्जिदे मुबारक, मस्जिदे अक़्सा और वह बुलन्द व बाला मीनार भी वहां की जामिअ मस्जिद का बनाया जिस से यह साबित करें कि मसीह, मौऊद जो मनार-ए-जामिअ दमिश्क से उतरेंगे वह नअ़ूज़ु बिल्लाह (मिर्ज़ा गुलाम की शक्ल में) आ चुके। अब उनके आने का इन्तिज़ार फ़ुज़ूल सी बात है। उन्होंने रबवा में "बिहिश्ती मक्बरः" भी बनवाया जिसके बारे में क़ादियानियों का अक़ीदा है कि जो उसमें दफ़्न होगा वह जन्नती है।

इसी लिए पाकिस्तान के आलिमों ने इस शहर के नाम को बदलने की तहरीकें (आन्दोलन) चलाईं। उनकी कोशिशें काम्याब (सफल) हुईं और पंजाब हुकूमत ने "रबवा" का नाम बदल कर "नवा क़ादियान" रख दिया और इस तरह यह पचास साला ख़ल्फ़शार (खलबली) ख़त्म हुआ और बहुत से सादा लौह (सीधे लोग) नौ आमोज़ (नव सिखये) कम इल्म और अन पढ़ लोगों को क़ादियानी फ़रेब से बचाया जा सका। आज क़ादियानी फिर सर गर्म हैं। अपनी इबादत गाह को मस्जिद कहते है। इस्लामी कल्मे को अपना कल्मा कहते हैं लेकिन यह उनका फ़रेब है। इन इस्लामी इस्तिलाहों के ज़रीअे मुसलमानों को गुमराह करने की कोशिश में लगे हुए हैं। लखनऊ में रायबरेली रोड पर पी०जी०आई० से उत्तर ओवर ब्रिज के पास उन का मरकज काईम है जो तर्बियती मदरसा और मस्जिद पर मुश्तमिल है उसकी छत पर डिश अन्टीना लगा हुआ है। लन्दन से प्रोग्राम नश्र होते हैं और वहीं के नश्र किये अहकाम (आदेशों) की पैरवी की जाती है। तवज्जुह की ज़रूरत है। (अनुवादक-इदारा)

(तामीरे हयात १० दिसम्बर)

मिर्जा गुलाम अहमद ने नुबूवत का दावा किया इसलिये वह और उस के मुरीदीन इस्लाम से ख़ारिज हैं।

क़ादियानियों का कल्मा

मौ० अब्दुलग़नी पटयालवी

जब मिर्जाइयों का मिर्ज़ा गुलाम अहमद की नुबूवत पर ईमान है और "ला इलाह इल्लल्लाह" पर भी ईमान है, जैसे आदम को सफीयुल्लाह, नूह को नजीयुल्लाह, इब्राही को ख़लीलुल्लाह, मूसा को कलीमुल्लाह, ईसा को रूहुल्लाह और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को हबीबुल्लाह(अलैहिमुस्सलाम) वग़ैरह, वग़ैरह ख़िताबे इलाही हैं ऐसे ही मिर्ज़ा को अपने लिये जरीयुल्लाह का खिताब हासिल होने का दावा है फिर ला इलाह इल्लल्लाह गुलाम अहमद जरीयुल्लाह पर ईमान रखते हुए "ला इलाह इल्लल्लाह गुलाम अहमद जरीयुल्लाह" से इन्कार का क्या मतलब है? मिर्जाइयों का कल्मा ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ना ऐसा ही है जैसा कि मुसलमान ला इलाह इल्लल्लाह ईसा रूहुल्लाह, या रसूलुल्लाह, और ला इल्लाह इल्लल्लाह मूसा कलीमुल्लाह या रसूलुल्लाह वग़ैरह पहले के नबीयों और रसूलों की तौहीद व रिसालत पर ईमान रखते हैं लेकिन जब तक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की नुबूवत पर ईमान न लाएं मुसलमान नहीं हो सकते। इसी तरह मिर्जाइयों के नज़दीक जब तक मिर्ज़ा सा० की नुबूवत और उन की वही पर ईमान न लाए मुसलमान नहीं अब सिर्फ ला इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह मुसलमान होने के लिये काफ़ी नहीं जब तक ला इलाह इल्लल्लाह गुलाम अहमद रसूलल्लाह का इक़रार न करें।

फिर क्या वजह है कि उन की दूकानों, दर्सगाहों, रिसालों, इबादतगाहों पर मोटा मोटा "ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह" (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लिखा होता है।

हां मिर्ज़ा की वही याद आ गई सूर-ए-फत्ह की आयत "मुहम्मदुर्रसूलल्लाह" .... (के बारे में कहते है यह आयत मुझ पर भी उतरी)" इस वह्ये इलाही में मरा नाम मुहम्मद रखा गया है और रसूल भी।"(हक़ीक़ततुन्नुबूवः पृष्ठ २६१,२६२) कल्म-ए-तौहीद व रिसालत में लफ़्ज़ बदलने की ज़रूरत नहीं इसी कल्म-ए-ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह में मिर्ज़ा साहिब की रिसालत का इक़रार और उन की नुबूवत का इरादा हो सकता है। यकीनन तमाम मिर्ज़ाई यही मानते हैं और मुहम्मदुर्रसूलल्लाह से मिर्ज़ा रसूलल्लाह मुराद लेते हैं। (नअूज़ बिल्लाहि मिन ज़ालिक।)

इस्लाम, ईमान और इहसान

इदारा

हज़रत उमर (रज़ि०) फ़रमाते है:—

हमारे बीच सय्यिदुल मर्सलीन, महबूबे रब्बिल आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल्ल्लाह अलैहि व सल्लम बेठे हुए थे कि जिब्रील अलैहिस्सलाम अजनबी(अपरिचित) इन्सान की शक्ल में हाज़िर हुए और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बिल्कुल क़रीब दो ज़ानों (दोनों घुटने मोड़ कर) बैठ गये और सुवालात शुरूअ कर दिये। पूछा कि इस्लाम क्या है? जवाब मिला कि इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य (माबूद) नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ काईम करो अर्थात भलीभांति जमाअत से पढ़ो अपने माल की जकात अदा करो। रमज़ान मास के रोज़े रखा करो। और रास्ते की सुविधाएं उपलब्ध हों (मुहय्या हों) तो जिन्दगी में एक बार हज्ज करो। (जिब्रील अलैहिस्सलाम ने) कहा कि आपने सच कहा। सहाबा(न जानते थे कि यह जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं इसलिये उन) को तअज्जुब (आश्चर्य) हुआ कि ख़ुद ही सुवाल करते हैं और ख़ुद ही जवाब की तस्दीक़ (प्रमाणीकरण) करते हैं। फिर पूछा ईमान क्या है? आप ने फ़रमाया: ईमान यह है कि ईमान लाओ अल्लाह पर, उस के फ़िरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उस के रसूलों पर, कियामत के दिन पर और अच्छी बुरी तक़्दीर पर (कि दोनों अल्लाह ही की तरफ़ से हैं।) कहा आप ने सच फ़रमाया। फिर उस शख़्स ने पूछा इहसान क्या है? आप ने फ़रमाया इहसान यह है कि अल्लाह की इबादत इस तरह करो जैसे कि तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देख सकते तो वह तो तुम्हें देख ही रहा है। फिर क़ियामत के बारे में दर्याफ़्त किया कि कब आयेगी।) आप ने फ़रमाया कि इस बारे में जवाब देने वाला सुवाल करने वाले से ज़ियादा नहीं जानता। फिर उस शख़्स ने पूछा उसकी कुछ निशानियां बताइये आपने कुछ निशानियां बताईं जिन का ख़ुलासा यह है कि लोग दुन्यावी हैसियत से बहुत तरक़्क़ी कर जायेंगे, यहां तक कि मामूली लोग नंगे पैर फिरने वाले भेड़ बकरियां चराने वाले ऊँचे—ऊँचे मकानात बनवाएंगे और इल्मवालों के मुकाबले उनकी इज्ज़त ज़ियादा होगी। बदकारियां आम हो जाएंगी।

वालिदैन की ऐसी बेकद्री होगी कि लड़का अपने जाह व मन्सब के ऐसे घमण्ड में होगा कि माँ को ख़ादिमा, मुलाजिमा, नौकरानी और बान्दी जैसी समझेगा। फिर वह शख्स चला गया। मज्लिस में देर तक खामोशी रही फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम ने पूछा ऐ उमर जानते हो यह (सुवाल करने वाले) कौन थे। मैंने अर्ज किया अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं। फ़रमाया जिब्रील थे तुमको तुम्हारा दीन सिखाने आये थे। (मिश्कात किताबुल ईमान से तर्जुमा किया गया और मफ़्हूम लिया गया)

कारिईने किराम (प्रिय पाठको)! अल्लाहतआल का कितना करम है कि उस ने अपनी पसन्दीदा राह (इस्लाम, ईमान और इहसान) का इल्म हमको कितने इख़्तिसार के साथ दे दिया बेशक उम्मत के कुछ अफ़राद के लिये ज़रूरी है कि वह पूरे क़ुर्आन का इल्म हासिल करें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम की अहादीस का इल्म हासिल करें। क़ुर्आन व हदीस से जो अहकाम (आदेश) उम्मत के इमामों ने जमा कर दिये हैं उनका भी इल्म हासिल करें ग़रज़ कि पूरे दीन का इल्म हासिल करें और अल्लाह तआला ने जो इस दीन की हिफ़ाजत का एअलान फ़रमाया है उसी के तहत यह इन्तिज़ाम फ़रमाया है कि उम्मत में एक अच्छी तादाद हर ज़माने में दीन का पूरा इल्म हासिल करने वाली मौजूद रहती है और यही लोग आलिमे दीन कहलाते हैं। लेकिन हर मुसलमान के लिये आलिम बनना न ज़रूरी है न मुम्किन अल्बत्ता हर एक के लिये ज़रूरियाते दीन का इल्म हासिल करना फिर उस पर अमल कर के अल्लाह को राज़ी करना ज़रूरी है। यह रिवायत ज़रूररियाते दीन का इल्म देती है लिहाज़ा आइये हम गौर करें कि यह रिवायत जिसमें हमको हमारा दीन सिखाया गया है हम से क्या क्या मुतालबात करती है।

इस्लाम क्या है?

गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (उपासक) नहीं है और मुहम्मद (सल्लल्लाह अलैहिव सुल्लम) उस के रसूल हैं इन दोनों बातों की गवाही देना यानी सिर्फ़ अल्लाह के माबूद होने और मुहम्मद (सल्लल्लाह

अ़लैहिव सल्लम) के रसूल होने के बयान में बड़ी–बड़ी किताबें लिखी गयी हैं। तौहीद व रिसालत के बयान में क़ुर्आनी आयात और हुज़ूर (सल्लल्लाह अ़लैहिव सल्लम) की अ़हादीस बेशुमार हैं। उन सब का इ़ल्म हर मुसलमान के लिये ज़रूरी नहीं, ज़रूरी इतना ही है कि वह दिल से मानते हुए सिर्फ़ अल्लाह के मा़बूद होने और मुह़म्मद (सल्लल्लाह अ़लैहिव सल्लम) के रसूल होने की ज़बान से गवाही दे। अब उसका अमल यह हो कि अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करे, किसी और को सज्दा न करे और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाह अ़लैहिव सल्लम) के बाद किसी और को नबी या रसूल न मान ले,आप की राह से मुंह मोड़ कर किसी और की राह न अपनाए। किसी आ़लिम को अपना मुक़्तदा बनाए और दीनी उमूर में उससे रहनुमाई लेता रहे।

नमाज़ क़ाइम करना

क़ुर्आन मजीद में कई सौ आयतें नमाज़ से मुतअ़ल्लिक़ हैं, अ़हादीस --- जो नमाज़ से मुतअ़ल्लिक़ हैं उन की तो गिनती मुश्किल है, फ़िक़्ह की किताबों में तहारत, अज़ान और नमाज़ का तफ़्सीली बयान कई सौ सफ़हात में है। हर मुसलमान के जिम्में सिर्फ़ इतना है कि वह ग़ुस्ल, वज़ू, अजान व इक़ामत सीख ले कुछ सूरतें ज़बानी याद कर ले, अत्तहीयात, दुरूद शरीफ़, दुआ़ए मासूरा, रूकूअ़ और सज्दे की तस्बीह़ात, क़ौमा के कलिमात सीख कर पांचो वक़्त की नमाजों की अदायगी का तरीक़ा सीख ले और जमाअ़त से नमाज़ पढ़े और बस, जहां कोई मुश्किल पड़े किसी जानने वाले से मालूम कर के अपनी मुश्किल ह़ल करे।

ज़कात

जो मुसलमान मालदार हो यानी उस के पास साढ़े बावन तोला चान्दी या साढ़े सात तोला सोना हो या साढ़े सात तोला चान्दी ख़रीदने भर के पैसे हों तो साल गुज़रने पर अपने माल का चालीसवां हिस्सा यानी ढाई फ़ीसद ज़कात निकाल कर अपने ही ग़रीब भाइयों पर ख़र्च करे। जहां कुछ समझने में मुश्किल पेश आए किसी जानकार से जानकारी ले। अब तो अरकाने इस्लाम पर उर्दू, हिन्दी, इंग्लिश में किताबें मिलती हैं उन से मदद ली जाए।

रमज़ान के रोज़े

साल में रमज़ान के रोज़े पाबन्दी से रखें मसाइल के लिये जानने वालों से रूजूअ़ करें, किताबें देखें।

ह़ज्ज

अल्लाह ने अगर इतना माल दिया है जो ह़ज्ज के मसारिफ़ को काफ़ी हो, साथ में जिन लोगों के रोटी कपड़े की जिम्मेदारी है उनके ख़र्च के लिये भी काफ़ी हो तो ह़ज्ज ज़रूर करें, ह़ज्ज ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक बार फ़र्ज़ है। ह़ज्ज का तरीक़ा और उसके मसाइल मालूम करने के लिये उ़लमा से रूजूअ़ करें, किताबें देखें।

ईमान क्या है?

अल्लाह पर ईमान की बड़ी तफ़्सील है जैसा कि लाइलाहा इल्लल्लाह की शहादत के जिक्र में लिखा गया, हर मुसलमान को उन की तफ़्सीलात जानना ज़रूरी नहीं उन के ज़िम्मे इतना ज़रूरी है कि वह मानें कि अल्लाह तआ़ला अपने नामों और सिफ़तों (गुणों) के साथ जैसा है हम उस को वैसा ही मानते हैं। और हम ने उसके सारे अह़काम (आदेश) क़बूल किये।

फ़िरिश्तों पर ईमान

इसकी भी बड़ी तफ़्सील है। फ़िरिश्ते नूर से बने हैं उनकी तादाद बेशुमार है, चार फ़िरिश्ते मुक़र्रब हैं, बाज़ फ़िरिश्तों के जिम्मे बाज•काम भी हैं, बाक़ी सब अल्लाह की तस्बीह़ व तह़मीद में लगे रहते हैं फ़िरिश्ते हर काम सिर्फ़ अल्लाह के ह़ुक्म से करते हैं, कोई काम न अपने इख़्तियार से करते हैं न अल्लाह के सिवा किसी और के ह़ुक्म से , न वह खाते है न पीते है न सोते है, न उन में नर मादा हैं, वह जब तक अल्लाह के ह़ुक्म से कोई शक्ल न इख़्तियार करें दिखते भी नहीं हैं ग़रज़ कि इन तमाम तफ़्सीलात का जानना हर मुसलमान पर ज़रूरी नहीं मगर इतना मानना ज़रूरी है कि फ़िरिश्ते नूरानी मख़्लूक़ हैं, हमारी नज़रों से ओझल है वह वही करते है जिस का उनको अल्लाह तआ़ला हुक्म देता है।

किताबों पर ईमान

अल्लाह तआ़ला अपने रसूलों पर सह़ीफ़े और किताबे उतारीं, तैरात, ज़बूर, इंजील अल्लाह की किताबें हैं, आख़िरी किताब क़ुर्आन मजीद है जो तमाम पिछली किताबों के अह़काम (आदेश) निरस्त कर के नये अह़काम देती है। पिछली किताबों में लोगों ने अदल बदल भी कर दिया है इस लिये उसकी खबरें भी मश्कूक (संन्दिग्ध) हो गईं। क़ुर्आने मजीद हर तरह़ मह़फ़ूज़ (सुरक्षित) है। ग़रज़ कि तमाम तफ़्सीलात जानना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी नहीं है मगर यह मानना हर एक के लिये जरूरी है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूलों पर किताबें उतारी हैं और

सबसे आख़िर में क़ुर्आने मजीद उतारा और अब इसी किताब पर अ़मल ज़रूरी है।

रसूलों पर ईमान

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों की हिदायत के लिये बहुत से नबी व रसूल भेजे वह मअ़सूम थे मगर इन्सान थे, उनकी सहीह़ ता़दाद अल्लाह ही को मालूम है। कुछ नबियों और रसूलों के नाम क़ुर्आन व ह़दीस में आए हैं। वह सब-बरह़क़ हैं आख़िर में हमारे हुज़ूर ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भेजे गये और अब नजात सिर्फ़ आप की शरीअ़त ही पर चल कर मिल सकेगी।

क़ियामत के दिन पर ईमान

जब अल्लाह तआ़ला इस दुन्या के निज़ाम को ख़त्म करना चाहेंगे तो उसके अस्बाब पैदा फ़रमायेंगे इस्राफ़ील अ़लैहिस्सल्लाम को हुक्म होगा, वह सूर फूंकेंगे जिसकी करख़्त आवाज़ होगी फिर अल्लाह की ज़ात के सिवा सब कुछ मिट जायेगा, फिर एक ज़माने के बाद अल्लाह तआ़ला इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम को और सूर को पैदा फ़रमा कर दोबारा सूर फूंकने का हुक्म देगें जिसकी आवाज़ से सब ज़िन्दा हो जाएंगे, फिर हिसाब व किताब होगा और अ़माल के लिहाज़ से अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हर एक के लिये दोज़ख़ या जन्नत का फ़ैसला होगा। इसकी भी बड़ी तफ़्सील है हर एक के लिए इतना मानना ज़रूरी है कि क़ियामत आएगी हिसाब व किताब होगा फिर अ़माल के एअ़तिबार से सज़ा मिलेगी या जन्नत के इनआ़म से नवाज़ा जाएगा, क़ियामत कब आएगी इसका इ़ल्म नहीं दिया गया।

तक़्दीर पर ईमान

ख़िलक़त (सृष्टि) में जो कुछ होता है वह अल्लाह की बनाई हुई तक़्दीर के मुताबिक़ होता है, तक़्दीर अच्छी हो या बुरी अल्लाह की तरफ से है।

तक़्दीर का मस्अला बड़ा नाज़ुक है इसकी बारीकियों की बह़स में पड़ने से रोका गया है, सीधी सी बात है हमको जो हुक्म है हम उस को बजा लाएं, हम अ़मल में कोताही करेंगे तो सज़ा के मुस्तह़क़ होंगे लेकिन होगा वही जो तक़्दीर में है।

इह़सान क्या है?

हर इबादत अल्लाह तआ़ला के लिये होना जरूरी है, बल्कि मुसलमान का हर काम अल्लाह की रज़ा के लिये हो यह जब ही मुम्किन है कि हर काम के वक़्त ख़ास तौर से इबादात के वक़्त अल्लाह की याद से गफ़लत न हो यही मक़्सूद है इह़सान से जिस में बताया गया कि इबादत इस तरह करो कि जैसे तुम अल्लाह को देख रहे हो नहीं तो यह तो है ही कि अल्लाह तुमको देख रहा है। हर मुसलमान के लिये बस इतना ही ज़रूरी है कि वह अपनी इरादी क़ुव्वत से यह ह़ालत व कैफ़ीयत पैदा करने की कोशिश करे। कुछ उलमा का ख़याल है कि जो शख़्स पूरी ज़िन्दगी शरीअ़त के मुताबिक़ गुज़ारता है और बराबर कोशिश करता रहता है कि इह़सान की कैफ़ीयत उसमें पैदा हो जाए तो अल्लाह तआ़ला उस को इस निअ़मत से नवाज़ देते हैं। कुछ उलमा ने यह कैफ़ीयत पैदा करने के लिये अपने तजरिबे और इजतिहाद से कुछ औराद व वज़ाइफ़ और मुजाहदे तजवीज़ किये जिसे तसव्वुफ कहा जाता है। एक आ़म मुसलमान के लिये इतना ही ज़रूरी है कि वह हर इबादत बल्कि हर काम के वक़्त अल्लाह को याद रखे, कोशिश करेगा तो जरूर अल्लाह की मदद होगी।

कारिईने किराम (प्रिय पाठकों)! यह है इख़्तिसार (संक्षेप) में वह दीन– जिसे जिब्रील (अ़०) के ज़रीअे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बाने मुबारक से सह़ाब–ए–किराम को सिखाया गया और उनके ज़रीअे हमको सिखाया गया अगर हमारे भाई इस ह़दीस को सामने रखें तो सारे इख़्तिलाफ़ात खुद ब खुद ख़त्म हो जाएं। और हम सब मिलजुल कर मेल व मह़ब्बत से रहें। अल्लाह तआ़ला हम सब को उसी अ़मल की तौफ़ीक़ दे जिस से वह राज़ी हो।

यहूद में से बाज़ ने कहा कि अुज़ैर खुदा के बेटे हैं और नसारा (में से अक्सर) ने कहा कि मसीह़ खुदा के बेटे हैं, यह मह़ज़ उन के मुंहों से निकली हुई (ग़लत) बात है। यह भी उन लोगों जैसी बातें करने लगे जो उनसे पहले काफ़िर हो चुके हैं। ख़ुदा इन को ग़ारत करे यह किधर उल्टे जा रहे हैं। इन लोगों ने अपने आ़लिमों और राहिबों को अल्लाह के सिवा रब बना रखा है ह़ालांकि इन को सिर्फ़ यह हुक्म दिया गया है कि सिर्फ़ एक माबूदे बरह़क़ (उपासक) की इबादत करें जिस के सिवा कोई और इबादत के लाइक़ नहीं, वह इनके शिर्क से बरी है।

(पवित्र क़ुर्आन सूरतुत्तौबः आयत ३०,३१)

सुनामी लहरें

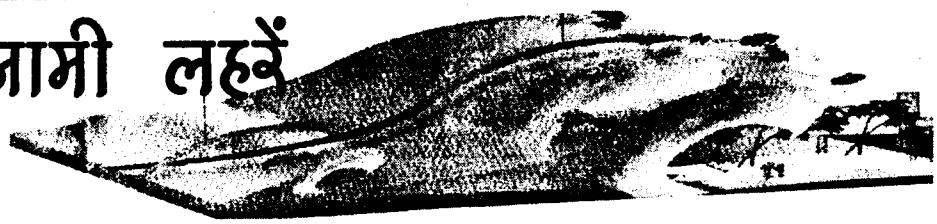

हबीबुल्लाह आजमी

२६ दिसम्बर २००४ का दिन दक्षिणी पूर्वी एशिया के लिए एक कियामत के समान प्रारम्भ हुआ। इण्डोनेशिया के सुमात्रा द्वीप के समुद्र में ज्वालामुखी पर्वत समुद्र की भीतरी तह में फट पड़ा और ऐसा जबर्दस्त भूकंप आया जिस की तीव्रता ६ आंकी गई। फलस्वरूप समद्र में ऐसी ऊँची लहरें उठीं कि दक्षिणी पूर्वी एशिया के सात देशों के तटीय क्षेत्रों में ऐसी विनाश लीला शुरू हुई कि जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया। ऐसी तबाही मची कि जिसकी मिसाल आज तक नहीं मिलती। यह विनाश लीला समुद्र में सुनामी लहरों के उठने से हुई। आइयें देखें यह सुनामी लहरें क्या हैं और यह कैसे उत्पन्न होती हैं। सुनामी जापानी भाषा का शब्द है 'सू' का अर्थ बन्दरगाह और 'नामी' का अर्थ लहर है।

सुनामी लहरों के उठने के कारण को समझने के लिए हमें पृथ्वी की अन्दूनी रचना पर ग़ौर करना पड़ेगा। पृथ्वी प्रारम्भ में एक आग का गोला थी। जब धीरे–धीरे समय के साथ यह आग का गोला ठंडा होने लगा तो उस की ऊपरी पर्त ठण्डी होकर एक कड़ी परत बन गई। इस परत को **Earth Crust** कहते हैं। इस की मोटाई लगभग ५० मील है परन्तु इसका भीतरी भाग पिघली हुई चट्टानों के रूप में ही बाकी है। इसी परत पर स्थल और जलमण्डल हैं। पृथ्वी के ऊपर फटने वाले ज्वालामुखी से लावा निकलता है। इस से यह बात साबित होती है कि पृथ्वी का भीतरी भाग अब भी पिघली हुई दशा में है जिसे मैगमा कहते हैं। पृथ्वी की ऊपरी परत, जिस पर थल और जलमण्डल है, वह इस मैगमा पर तैरती रहती है। पृथ्वी की यह परत ठण्डी होने पर सिकुड़ती गई और जगह जगह फाल्ट (दरारें) पड़ गए और यह परत कई पलेटों में बट गई। दक्षिणी पूर्वी एशिया में तीन मुख्य पलेटें हैं (१) भारत पलेट (२) बरमा (मंयामार) प्लेट (३) आस्ट्रेलिया पलेट। मैगमा की हलचल के कारण यह पलेटें खिसकती रहती हैं। चुनानचः भारत की पलेट बरमा (मंयामार) की पलेट की तरफ ६ सेंटीमीटर प्रतिवर्ष खिसक रही है।

ज्वालामुखी पर्वत की श्रृंखला बरमा प्रायः द्वीप से होती हुई दक्षिण की ओर हिन्द महासागर में इंडोनेशिया द्वीप समूह से होती हुई जापान की ओर फैली है।

भूगर्भ में एक विशाल हलचल के कारण इण्डोनेशिया के सुमात्रा द्वीप में स्थिति समुद्र की तह में ज्वालामुखी पर्वत फट पड़ा और एक बहुत बड़ा भूकंप आया जिस की तीव्रता ६ आंकी गई। यह भूकंप इतना बड़ा था कि पृथ्वी अपनी धुरी पर हिल गई।

भूकंप के कारण समुद्र की अन्दरूनी सतह तेज़ी से ऊपर उठी और फिर भीतर गई। इस प्रक्रिया से समुद्र का पानी भी दबाव की वजह से ऊपर उठा और फिर नीचे गया और इसके फलस्वरूप सुनामी तरंगे उत्पन्न हुई और समुद्र में तट की ओर आगे बढ़ी और तट के क़रीब पहुंचते पहुंचते कई कई फिट ऊँची लहरें दीवार की सूरत में तटीय किनारे की तरफ बढ़ीं और सुनामी लहरों का तांडव नाच शुरू हो गया।

सुमामा के निकट समुद्र में २० मीटर से भी ऊँची लहरें इण्डोनेशिया, बरमा, एण्डमान निकोबार, श्री लंका, तमिलनाडू, केरल, पाण्डचेरी और आंध्रपदेश के तटीय क्षेत्र में पानी की दीवार के रूप में आगे बढ़ीं और पूरे क्षेत्र को तहस नहस कर गईं। छोटे मोटे कई द्वीप तो समुद्र में समा गए। इलाके के इलाके समुद्र ने निगल लिया जान व माल की जो हानि हुई उस का अंदाज़ा लगना बहुत ही कठिन है।

भारत में सुनामी लहरों का कहर सबसे अधिक तमिलनाडू और एंडमान निकोबार में बरपा हुआ है। ३१ दिसम्बर २००४ तक लगभग १,२६००० को यह कातिल लहरें बहा ले गईं। अभी संख्या बढती जा रही है भारत में अब तक १३००० इण्डोनेशिया में ५०००, मलेशिया में ६४, मालद्वीप में ५५ श्री लंका में २५०००, थाईलैण्ड में १६००, बंगला देश में ६, पूर्वी अफरीका में १३३ और सुमालिया में १०० के मरने की पुष्टि हो चुकी है। अभी लाशों की खोज हो रही हैं अनुमान है कि मरने वालों की संख्या दो लाख से भी अधिक तक पहुंच जाएगी।

यह दैवी आपदा एक सौ इक्कीस वर्ष बाद आई है। इससे पूर्व १८८३ में जापान के आंशुआ शहर के मछुवारे तट से काफी दूर बीच समुद्र में थे कि तभी उन्हें भूकंप का छटका

महसूस हुआ। भूकंप के केन्द्र पर ऊपरी पानी में उन्होंने कुछ इंच मोटी दाएरे नुमा तरंगों के पैदा होते और आगे बढ़तें हुए देखा उनको उस समय यह आभास नहीं हुआ कि यह चन्द इंच ऊँची लहरे तट पर पहुंचते पहुंचतें कितनी खतरनाक हो सकती है। जब वह घंटो बाद होंशुआ के बन्दरगाह पहुंचे तो देखा कि १६० मील लम्बा तटीय इलाक़ा पूरी तरह बरबाद हो चुका था और २८००० लोगों की मौत हो चुकी थी।

इस घटना के बाद अब दिसम्बर २००४ में यह क़ियामत आयी है। यही वजह है कि सुरक्षा के दृष्ट से इन सुनामी लहरों की पूर्व जानकारी की कोई व्यवस्था इस क्षेत्र में नहीं थी। अब खबरें आ रही हैं कि इस प्रकार के उपक्रण अमेरिका में पहले से लगे हुए हैं जो समुद्री लहरों का आकलन करते रहते हैं और सुनामी लहरों के आने की पूर्व जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

अमेरिका में इस सुनामी तूफान की पूर्वजानकारी मिल गई थी परन्तु इस की चेतावनी समय से उन क्षेत्रों को नहीं दी जा सकी।

भारत सरकार सुनामी तूफान की चेतावनी देने वाली व्यवस्था जल्द ही एंडमान द्वीप समूह में कायम करने जा रही है ताकि पूर्वजानकारी प्राप्त कर पहले से लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया जा सके।

ऐसी सुनामी लहरें समुद्र में विशाल उलका पिण्ड (Shooting Star) के गिरने से भी उत्पन्न होती हैं या चट्टानों के खिसक ने से जब कोई बड़ा पर्वतखण्ड समुद्र में गिरता है तो इस प्रकार की लहरें उठती हैं। पश्चिमी साइंन्टिस्ट सुनामी लहरों को जियोलाजिकल टाईम बम कहते हैं। १९६४ में लापाल्मा आईलैंड के उत्तरी तटीय इलाके में स्थित ज्वालामुखी फट पड़ा था। विस्फोट इतना तीव्र था कि ज्वालामुखी बीच से आधा चिटक गया परन्तु आधा चिटका भाग समुद्र में नहीं गिरा वह वैसे ही संतुलित खड़ा है। वैज्ञानिकों का मानना है कि जब भी ला–पाल्मा का यह ज्वालामुखी जागृत होगा ५० अरब टन का इसका आधा भाग अटलांटिक समुद्र में जा गिरेगा। इस से पैदा होने वाली सुनामी लहरे इस क्षेत्र में २० किलोमीटर अंदर तक चढ़ दौड़ेंगी।

दीनी तालीम और सिन्फ़े नाज़ुक उलमाए रब्बानीयीन की नज़र में

मुदस्सिरा आफरीदी

हदीस पाक से साबित है कि इल्म का हासिल करना सिर्फ मर्द पर ही फर्ज नहीं बल्कि औरत पर भी फर्ज किया गया है। लेकिन मौजूदा दौर में लड़कियों के तालीम याफ्ता न होने की वजह से उन के मुआमलात व अखलाक और उनका तर्जे मुआशरत सब कुछ बर्बाद हो रहा है। यहां तक कि ईमान भी बचना मुश्किल है क्योंकि अक्सर अक्वाल व अफआल कुफरिया उन से सरजद हो जाते हैं इन सब बातों की वजह अगर कोई चीज है तो वह सिर्फ इल्म से दूरी, अल्लाह तआला तमाम उम्मते मुस्लिमा को इल्म के जेवर से अरास्ता करें।

२६ अप्रैल १९८० को जामिअतुस्सालिहात रामपुर की तालबात से खिताब करते हुए मुफक्किरे इस्लाम हजरत मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी ने अपने इस एहसास का इजहार इन अल्फाज में किया था।

इस दुन्या में एक दौर ऐसा भी गुजरा है जब मर्दों और औरतों में बड़ा फर्क बरता गया इस वजह से कुछ नेमतें और सआदतें मर्दों के लिए खास हो गईं और औरतों को इस के लिए कोशिश करने का भी हक नही दिया गया जिन में से इल्म भी एक है। इस कोशिश का हक भी औरतों से छीन लिया गया। एक ऐसा तबका जिस की पूरी नस्ल आज भी इल्म के जेवर से महरूम है कितना बड़ा जुल्म है के इस तबके से मअरिफते इलाही और सही मअलूमात पहुंचने का हक भी छीन लिया गया हो।

जमिअतुस्सालिहात मालेगांव के नाम एक पैगाम में हजरत सैय्यद अंजरशाह साहब कशमीरी ने लिखी। अल्लाह सिर्फ मर्दों का रब नहीं बल्कि वो रब्बुन्निसा भी है। खुद हजरत स.अ.स. की दर्सगाह में मुअल्लिमात भी तैयार की जाती थीं उम्महातुल मोमिनीन दीनी उलूम में ऊंचा मकाम रखती थीं।

एक औरत को दुन्या में पहले बेटी और फिर बीवी और एक मां का किरदार अदा करना होता है एक बेटी का किरदार अपने मां बाप के लिए क्या होना चाहिए इस बात से हर इन्सान वाकिफ है लेकिन बेटी का किरदार उसी वक्त अच्छा हो सकता है जब कि वो इल्मे दीन से वाकिफ हो एक बेटी जब जेवर तालीम से आरास्ता है तो दीन की अहमियत उस के दिल में जज्ब हो जाती है और वो पूरी तरह से अल्लाह के फरमान पर अमल करने की कोशिश करती है वो ये जानती है कि अल्लाह ने दुन्या में मां बाप को क्या दर्जा दिया है उन के साथ क्या सुलूक करना है और उन की खिदमत उनकी इताअत कैसे करना है मुझे उनको किस तरह राजी रखना है कि अल्लाह मुझ से राजी हो जाये। यहां तक कि अपनी दुन्या व आखिरत सवांर लेती है लेकिन इसके बरअक्स एक बेटी जो इल्म के जेवर से महरूम है न तो वो अल्लाह को ठीक से पहचान सकती है न अपने दीन को जान सकती है यहां तक कि वो अपने मां–बाप की कद्र व अजमत को पहचान नहीं सकती है और इसी तरह वो अपनी दुनिया व आखिरत दोनों को तबाही के गड्ढे में धकेल देती है। अतः जिस तरह एक बेटे का तालीम हासिल करना जरूरी है उसी तरह एक बेटी का भी तालीम याफ्ता होना जरूरी है।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

●आईसलैण्ड में कैसे पढ़ते है नमाज़:– आईसलैण्ड यूरोप में उत्तरी एटलांटिक महासागर में उत्तरी ध्रुव के निकट स्थित है। यहां सूर्य लगभग छः महीने तक निकलता ही नहीं है मुख्यकर सर्दी के मौसम अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर मे अंधकार का राज रहता है और गर्मी के मौसम ख़ास कर जून, जुलाई में लगभग २४ घंटे सूर्य चमकता रहता है। सूर्य आधी रात को केवल एक घंटे के लिए गायब रहता है। कैथोलिक ईसाई यहां अधिक हैं। इस्लाम दूसरे महायुद्ध के बाद पहुंचा। २००२ की जनगणना के अनुसार आईसलैण्ड में मुसलमानों की जनसंख्या केवल ६० थी जो २००३ में बढ़कर २८६ हो गई। मौसम और रात दिन की दशा की वजह से नमाज़, रोज़ा के निर्धारण में मुसलमानों को परेशानी आती है। अतः मुसलमानों ने नमाज़, रोजा की अदाएगी में पड़ोसी देशों में जारी समय की पाबन्दी करते हैं। कुछ मुसलमान नारवे के समय की पाबन्दी करते हैं, कुछ डेनमार्क और कुछ स्वेडन के टाइमेट बुल की पाबन्दी करते हैं। आसमान चौबीस घंटे बादलों से ढका रहता है अतः रमज़ान और ईद के सम्बन्ध में चाँद देखने की आवश्यकता नहीं होती।

●मुहम्मद (सल्ल०) के आदेश कविता में :–

महिलाओं को रक्षा करने का दायित्व निभाना होगा।

संरक्षण उन को देना है, सब अधिकार दिलाना होगा।।

यह पंक्तियां बहन मनोरमा पाण्डे की पुस्तक "पगैम्बर हज़रत मुहम्मद" की हैं। पुस्तक में न केवल उपदेश है बल्कि पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल० की पूरी जीवनी बहुत ही सुन्दर अंदाज में बयान की गई है।

इस पुस्तक में किसी बात को केवल बयान ही नहीं किया गया है बल्कि उस बात को प्रमाणित (तस्दीक़) करने वाले तथ्यों तक का वर्णन किया गया है। मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा दिये गए उपदेशों और शिक्षाओं में केवल एक ही चीज़ उभर कर आती है और वह है मानव जाति का उद्धार। शायद इन्हीं सब से प्रभावित होकर मनोरमा जी ने वज़ू करना सीखा जिससे वह कुर्आन शरीफ़ का अध्ययन कर सकें और मुहम्मद सल्ल० द्वारा दी गई शिक्षाओं और उपदेशों के बारे में जान सकें और पढ़ने के बाद मुहम्मद (सल्ल०) के चरित्र से इस कदर प्रभावित हुईं कि उन्हों ने उन की जीवनी को हिन्दी में लिखने का विचार किया।

समाज और बच्चों में जागृति लाने के उद्देश्य से मनोरमा जी ने इसे पुस्तक का रूप दिया ताकि हिन्दी भाषा भाषी भी उनके उपदेशों से रूबरू हो सकें और अपने जीवन को नियमित और सुन्दर बना सकें। मनोरमा जी का कहना है कि जब मैं अपनी पुस्तक रज़िया सुलताना लिख रही थी, मुझे उस में इस्लाम के बारे में बहुत कुछ जानने को मिला। उस में मुहम्मद साहब के बारे मे पढ़कर मेरे अन्दर उनके बारे में जानने की जिज्ञासा पैदा हुई और मैंने कुर्आन शरीफ़ पढ़ी जिसे पढ़ने के बाद मैंने जाना कि मुहम्मद साहब मुसलमानों के पैगम्बर नहीं बल्कि मानव जाति के उद्धारक हैं।

भाईचारे, सच्ची मोहब्बत, आपसी सहयोग से ही समाज का निर्माण होता है और इन्हीं सबको उपदेश के माध्यम से मुहम्मद साहब ने मानव जाति तक पहुंचाने की कोशिश की है।

●आवाज़ सुनकर धुआं छोड़ने वाला पौधा

चीन में मशरूम के आकार का एक ऐसे पौधे का पता चला है जिसके सामने तेज आवाज़ करने पर उस में से धुआं निकलता है। उत्तर पूर्व चीन के लिओनिंग प्रांत में शियुआन क्षेत्र के अन्शुआन शहर में एक गोदाम की टूटी हुई दीवार में चार ऐसे पौधे निकल आये हैं जो देखने में मशरूम की तरह लगते हैं। इन पौधों के सामने तेज आवाज करने पर इसमें से धुआं निकलता है।

गोदाम के मालिक सुन ने बताया कि पिछले सप्ताह तक मैने इस ओर ध्यान नहीं दिया था लेकिन पिछले हफ्ते मुझे २० सेंटीमीटर आकार वाले इस पेड़ के सामने अचानक तेज खांसी आ गयी। मैने देखा कि इस पेड़ मे से गहरा सफेद धुआं निकल रहा है। शिन्हुआ समाचार एजेंसी के मुताबिक सुन ने कहा कि मैने अपने कुछ दोस्तों को बुलाया और उनसे इस पौधे को

(शेष पृ. २६ पर)